आओ नमाज़
की
ओर

नमाज़ पढ़ने का मुकम्मल सुन्नत तरीक़ा

लेखक

मुफ़्ती मुहम्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी

(सदर, जमअ़ीयत पयामे अम्न, लखनऊ)

प्रकाशक

मकतबः पयामे अम्न

नदवा रोड, डालीगंज, लखनऊ,२० (यू०पी०)इण्डिया

© सर्वाधिकार सुरक्षित

नाम-	आओ नमाज़ की ओर
लेखक-	मुफ़्ती मुहम्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी
संस्करण हिन्दी	नवाँ
पुस्तक संख्या	5000
वर्ष	2015 ई०
मूल्य	48 रु०
कम्पोज़िंग	इरफ़ान अहमद
प्रकाशक-	मकतबः पयामे अम्न, नदवा रोड डालीगंज, लखनऊ-20 (यू०पी०) इण्डिया

Book Name	**Aao Namaz Ki Oor**
Publisher:	**Maktaba Payam-e-Amn**
	Nadwa Road, Daliganj, Lucknow (U.P.) India
Website:	**www.islamicjpamn.com**
Mobile–	**0091– 9919042879, 9984490150**
E–Mail–	**jpa_lko@yahoo.com, ataullah2012@gmail.com**

मिलने के पते

1. जामिया दारे अरक़म मुहम्मदपुर गौंती, फ़तेहपुर
2. मकतबः नदविया, नदवा (लखनऊ)
3. मकतबः अशरफ़िया, मुहम्मद अ़ली रोड (बम्बई)
4. मकतबः अल् फ़ुरक़ान, नज़ीराबाद (लखनऊ)
5. मकतबः अल्हसनात (दिल्ली)
6. फ़रीद बुक डिपो (दिल्ली)

विषय सूची

विषय	पृष्ठ सं०
सन्देश	8
अपनी बात	10
इस्लामी तअ़लीमात	**11**
नमाज़	15
रोज़ः	16
ज़कात	16
ह़ज	16
फ़र्ज़, सुन्नत, नफ़्ल, ह़राम, ह़लाल का बयान	**16**
फ़र्ज़ किसे कहते हैं?	16
सुन्नत किसे कहते हैं?	17
सुन्नते मुअक्किदह किसे कहते हैं?	17
सुन्नते ग़ैर मुअक्किदह किसे कहते हैं?	17
नफ़्ल या मुस्तह़ब किसे कहते हैं?	17
ह़राम किसे कहते हैं?	17
मकरूह तह़रीमी किसे कहते हैं?	18
मकरूह तन्ज़ीही किसे कहते हैं?	18
तहारत(पाकी) का बयान	18
नजासत का अर्थ	20
नजासत की क़िस्म	20
नजासत ह़क़ीक़ी	21
नजासत ग़लीज़ा	21
नजासते ख़फ़ीफ़ा	22
नजासते ह़क़ीक़ी से पाक करने के तरीक़े	23
ज़मीन को पाक करने के तरीक़े	23

विषय	पृष्ठ सं०
नजासत न सोखने वाली चीज़ों के पाकी के तरीक़े	24
नजासत जज़्ब करने वाली चीज़ों के पाकी के तरीक़े	25
गाढ़ी और बहने वाली चीज़ों के पाकी के तरीक़े	27
गाढ़ी और जमी हुई चीज़ों के पाकी के तरीक़े	27
जिस्म के पाकी के तरीक़े	28
तहारत के कुछ उसूल	**28**
तहारत के ह़ुक्मों में शरई सहूलतें	30
पाकी और नापाकी के कुछ मसायल	31
नजासते ह़ुक्मी	33
नजासते ह़ुक्मी की क़िस्में	33
ह़दसे अस़्ग़र	33
ह़दसे अकबर	33
ग़ुस्ल का बयान	**34**
ग़ुस्ल में कितनी सुन्नते हैं	34
ग़ुस्ल किन ह़ालतों में फ़र्ज़ होता है	34
वुज़ू का बयान	**34**
वुज़ू में कौन-कौन सी बातें ज़रूरी हैं?	35
वुज़ू में किन-किन चीज़ों का करना सुन्नत है	35
वुज़ू में किन-किन बातों का ख़याल रखना मुस्तह़ब है	35
वुज़ू में कौन-कौन सी चीज़ें मकरूह हैं?	36
किन-किन ह़ालतों में वुज़ू टूट जाता है?	36
वुज़ू का मुकम्मल तरीक़ा	37
तर्तीब (क्रमानुसार) से वुज़ू इस तरह़ करें	37
तयम्मुम का बयान	**39**
तयम्मुम किन-किन ह़ालतों में कर सकते हैं	39
तयम्मुम करने का क्या तरीक़ा है	40
तयम्मुम किन चीज़ों से टूट जाता है	40
अज़ान का बयान	**40**
इक़ामत	42

विषय	पृष्ठ सं०
पाँचों नमाज़ों का बयान	**43**
नमाज़ के फ़रायज़ का बयान	44
नमाज़ शुरु करने के बाद कौन-कौन सी चीज़ें फ़र्ज़ हैं	44
नमाज़ के वाजिबात का बयान	45
नमाज़ की सुन्नतें	45
नमाज़ की सुन्नतों का बयान	46
नमाज़ की मुस्तहब चीज़ों का बयान	47
पाँचों नमाज़ की रकअ़त का नक़्शा	48
सुन्नत के मुताबिक़ नमाज़ पढ़ने का तरीक़ा	**48**
क़ियाम की सुन्नतें	49
सूरः फ़ातिह़ा	50
सूरः काफ़िरून	51
क़िरत की सात सुन्नतें	51
रुकूअ़ की सुन्नतें	52
सज्दे की सुन्नतें	53
सूरः नस्र	55
क़अ़दः की सुन्नतें	56
सूरः लहबि	57
सूरतुल्इ़ख़्लासि	57
वित्र की नमाज़ का बयान	59
जुमअ़ः की नमाज़ का बयान	**60**
जुमअ़ की नमाज़ पढ़ने का तरीक़ा	61
तरावीह़ की नमाज़ का बयान	62
मुसाफ़िर की नमाज़ का बयान	63
नमाज़े क़स्र का ह़ुक्म	63
सफ़र में सुन्नत और नफ़्ल का ह़ुक्म	64
क़स्र करने की दूरी	64
क़स्र शुरु करने का मक़ाम	64
क़स्र की मुद्दत	65

विषय	पृष्ठ सं०
मरीज़ की नमाज़ का बयान	**66**
माज़ूर और बीमार की नमाज़ का तरीक़ा	66
मय्यित का बयान	**68**
मय्यित का ग़ुस्ल	69
मय्यित का कफ़न	69
जनाज़े की नमाज़ का ह़ुक्म	70
मय्यित नाबालिग़ लड़की हो तो यह दुआ़ पढ़ें	72
मय्यित को दफ़नाने का तरीक़ा	72
ईद की नमाज़ का बयान	**72**
ईदुल फ़ित्र या ईदुल अज़ह़ा की नमाज़ का तरीक़ा	72
क़ज़ा नमाज़ों का बयान	73
क़ज़ा नमाज़ के मसायल व हिदायात	74
नफ़्ल नमाज़ों का बयान	**75**
नमाज़े तहज्जुद	76
नमाज़े इ़श्राक़	76
नमाज़े चाश्त	76
नमाज़े अव्वाबीन	76
नमाज़े तौबः	76
नमाज़े ह़ाजत	76
नमाज़े तस्बीह	77
नमाज़े इस्तिस्का का बयान	78
नमाज़े कुसूफ़ का बयान	78
नमाज़े ख़ुसूफ़ का बयान	79
नमाज़े इस्तिख़ारः का बयान	79
नमाज़ तह़ीयतुल् वुज़ू	80
नमाज़ तह़ीयतुल् मस्जिद	80
कुनूते नाज़िलः	80

विषय	पृष्ठ सं०
औ़रत व मर्द की नमाज़ में अन्तर	82
तकबीरे तहरीमा में हाथ उठाना	82
हाथ बाँधना	82
रुकूअ़	82
सज्दः	83
क़अ़दः और जल्सा	83
क़िरात	83
सज्द-ए-सह्व का बयान	84
सज्द-ए-सह्व का तरीक़ा	84
वह सूरतें जिन में सज्द-ए-सह्व वाजिब हो जाता है	84
सज्द-ए-सह्व के मसायल	85
सज्द-ए-सह्व कब वाजिब होता है	86
सज्द-ए-तिलावत का बयान	87
क़ुर्बानी करने की दुआ़	88
निकाह़ का ख़ुत्बः	89
जुमअ़ः का ख़ुत्बः	89

सन्देश

मुफ़क्किरे इस्लाम ह़ज़रत मौलाना सय्यद अबुल ह़सन अ़ली ह़सनी नदवी (रह़०) के क़लम से

अल्ह़म्दु लिल्लाहि वस्सलातु वस्सलामु अ़ला रसूलिहिल्करीम

यह एक वाक़िया और क़ाबिले एतिराफ़ ह़क़ीक़त है कि अल्लाह तआ़ला की तौफ़ीक़ और फ़र्ज़ शनास मुस्तइद,दीन के ख़ादिमों और इन्सानियत की बही ख़्वाही की कोशिश से हिन्दुस्तान की ग़ैर मुस्लिम आबादी की एक तअ़दाद बराबर इस्लाम क़ुबूल करती जा रही है। जो इस्लाम के अ़क़ायद व फ़रायज़ और बुनियादी तअ़लीम से वाक़िफ़ होने की सख़्त ज़रूरतमन्द है। इस्लाम क़ुबूल करने वालों की इस तअ़दाद के अ़लावा भी खुद मुसलमानों में लाखों की तअ़दाद में ऐसे पुराने और ख़ानदानी मुसलमान हैं जो उर्दू से नाआशना हैं। जिन को ख़ास तौर पर इस्लाम के बुनियादी अ़क़ायद फ़रायज़ व एह़काम और क़ुर्आन मजीद की सूरतों के माने व मतलब समझाने के लिए हिन्दी ज़बान की ज़रूरत है।

जहाँ तक मुसलामनों का तअ़ल्लुक़ है उनके बच्चों और नई नस्ल के लिए और दीनी मरकज़ों से फ़ायदे न उठाने वालों के लिए क़दीम अरसा से उर्दू इस्लाम के मबादी व तालीमात से वाक़िफ़ कराने के लिए मुतअ़द्दिद किताबें और रिसाले लिखे गये हैं। जिनसे बहुत फ़ायदा पहुँचा, जब तक फ़ारसी का रिवाज था "माला बुद्दमिन्हु" जैसी किताबें लिखी गई फिर "तअ़लीमुलइस्लाम" के नाम से कई मुस्तनद उलमा ने मुतअ़द्दिद क़ुतुब व रसायल लिखे जो इब्तिदाई मदारिस में और कम पढ़े लिखे ह़ल्क़ों में रायज और मक़बूल हैं और उनसे हज़ारों बल्कि लाखों बच्चों और कम इस्तेदाद लोगों ने फ़ायदा उठाया और दीन का इ़ल्म मालूम करने

और उस पर चलने का तरीक़ा सिखाया और मुस्लिम दाइ़याने इस्लाम की कोशिश और ख़ुद फ़ितरते सलीम के तक़ाज़ा और ह़िदायते रब्बानी से हिन्दुस्तान की ग़ैर मुस्लिम आबादी और हमारे हमवतन पड़ोसियों में से हर इलाक़े में बाज़ जगह सैकड़ों की तअ़दाद में और बहुत जगह हज़ारों की तअ़दाद में और बाज़ जगह गाँव के गाँव और इलाक़े में अपने इरादा और अख़्तियार और अपने क़दरो-इन्साफ़ से दीने इस्लाम को क़ुबूल किया उनके लिए भी एक ऐसी किताब की ज़रूरत थी जिस में दीन की सब ज़रूरियात अक़ायद व फ़राइज़ का तआ़रुफ़ आ जाए, दीनी इस्तिलाह़ात की तशरीह़ भी हो और उन पर अ़मल करने का तरीक़ा भी बताया जाए, इन्होंने इस किताब में इस बात की भी रिआ़यत की है। (जो एक तअ़लीमी नुक़्ता है) कि जिन इस्तिलाह़ात में काफ़, सीन, स्वाद, ऐ़न, के हुरूफ़ इस्तेमाल किए गए हैं, शुरू में उनकी तशरीह़ और उनकी जगह पर जो हुरूफ़ इस्तेमाल होते हैं उनकी भी तशरीह़ कर दी है, ताकि उन का अदा करना आसान हो जाए। ग़र्ज़ तअ़लीमी इ़ल्मी व नफ़सियाती तौर पर किताब हर तब्क़े के लिए न सिर्फ़ क़ाबिले फ़हम और क़ाबिले इस्तिफ़ादा बन गई है, बल्कि वह एक मुस्तक़िल मुअ़ल्लिम और दीन व इ़ल्म आमोज़ तस्नीफ़ बन गई है और इससे इस्तिफ़ादह आसान हो गया है।

वक़्त की एक अहम ज़रूरत थी जिसको अ़ज़ीज़ुलक़द्र मोलवी मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी ने अन्जाम दिया है और वक़्त की एक ज़रूरत और दीन की तफ़ह़ीम व तब्लीग़ व तर्बियत का एक मुताल्बा और तक़ाज़ा पूरा किया, अल्लाह तआ़ला इनकी यह ख़िदमत क़ुबूल फ़रमाये और इससे ज़्यादा से ज़्यादा नफ़ा पहुँचाये, उम्मीद है कि हमारे दीनी मकातिब व मदारिस ह़ल्क़ा और ख़ास तौर पर नव मुस्लिम आबादियों में और ख़ालिस हिन्दी शनास, हिन्दी आमोज़ ह़ल्क़ों में इनसे फ़ायदा उठाया जा सकेगा।

सय्यद अबुल ह़सन अ़ली नदवी (रह़०)
भू० नाज़िम दारूलउलूम नदवतुल् उ़लमा लखनऊ
25-11-15 हि०

अपनी बात

जैसा कि इस्लाम की बुनियाद पाँच चीज़ों पर है और उन में से दूसरी चीज़ नमाज़ है, जो हर अ़क़्लमन्द बालिग़ मर्द, औ़रत पर फ़र्ज़ (अनिवार्य) है। नमाज़ ही वह अहम अ़िबादत है जो मोमिन और काफ़िर में फ़र्क़ करती है। जिसे ह़ज़रत मुह़म्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया जिसने नमाज़ को क़ायम किया उसने दीन को क़ायम किया और जिसने नमाज़ को छोड़ दिया तो गोया उसने दीन के सुतून को ही ढ़ा दिया। इसलिए नमाज़ को पाबन्दी के साथ सुन्नत के मुताबिक़ हर ह़ाल में नमाज़ का एहतिमाम करना चाहिए।

इस की अहमियत को सामने रखते हुए अ़ल्ह़म्दु लिल्लाहि अल्लाह की तौफ़ीक़ से इरादा किया कि सुन्नत के मुताबिक़ आसान हिन्दी में नमाज़ की किताब तैयार कर दी जाए जो हमारे नये लोगों के लिए मुफ़ीद हो।

इस किताब में नमाज़ के उन ख़ास लफ़्ज़ों का इस्तिमाल प्रश्न-उत्तर के रूप में किया गया है जिनकी नमाज़ में ख़ासतौर से ज़रूरत पड़ती है। जैसे-

फ़र्ज़ वाजिब, सुन्नत, मुस्तह़ब,मकरुह़-गुस्ल, वुज़ू, अज़ान और हर तरह़ की नवाफ़िल का ज़िक्र किया गया है तथा उन लफ़्ज़ों का भी इस्तिमाल देव नागरी भाषा में नुक़्ते रख कर किया गया है जो केवल अ़रबी भाषा के शब्द हैं या कुर्आ़न अथवा ह़ज़रत मुह़म्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की बातें हैं ताकि हिन्दी वालों के लिए अ़रबी शब्दों का किसी जानने वाले से मालूम करके सह़ी तरीक़े से उच्चारण करना आसान हो जाए।

मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी
10 मार्च 1995 ई 2 ज़ीक़ाअदः 1415 हिज्री

इस्लामी तअ़लीमात

इस्लाम के माने अ़रबी ज़बान में ताअ़त और फ़रमाँबरदारी के हैं और इन्सान अल्लाह तआ़ला की ताअ़त व फ़रमाँबरदारी उस वक़्त तक नहीं कर सकता जब तक उसे चन्द बातों का इ़ल्म न हो, और वह इ़ल्म भी यक़ीन तक न पहुँचा हो। सबसे पहले इन्सान को अल्लाह की हस्ती पर पूरा यक़ीन होना चाहिए क्योंकि अगर उसे यही यक़ीन न हो कि अल्लाह है, तो वह फ़रमाँबरदारी क्या करेगा? इस तरह़ उसकी मर्ज़ी का पता होना, कि वह क्या पसन्द करता है और क्या पसन्द नहीं करता? इस तरह़ ताअ़त के लिए ईमान का होना शर्त है। जिसमें सबसे पहली चीज़ है, तौहीद, यानी अल्लाह पर ईमान।

१- तौह़ीद (अल्लाह पर ईमान)-

अल्लाह को एक मानना कि अल्लाह एक है उसका कोई साझीदार नहीं उसके जो निन्नावे सिफ़ाती नाम हैं उस जैसा भी कोई नहीं वह तमाम दुनिया का ख़ालिक़ व मालिक है। वही हमेशा से है और हमेशा रहेगा, वह ज़िन्दा सुनने वाला, देखने वाला है, न कोई उस की तरह़ है, न कोई उसके बराबर, वह तमाम ताक़त का मालिक है, वह किसी काम के लिए किसी का मोह़ताज नहीं, उसी ने सबको पैदा किया उसी ने ज़मीन, आसमान, चाँद, सूरज, सितारे, जिन्न, इन्सान और तमाम जानवर व बेजान को पैदा किया। वही रोज़ी देने वाला मारने और जिलाने वाला, यानी उसी के हुक्म से सब कुछ होता है। वह न खाता है, न पीता है, न सोता है, वही बीमार को अच्छा करता है तकलीफ़ों को दूर करता है।

इसी तरह़ हाथ, पैर, नाक, कान और हर तरह़ की मूर्ति से पाक है, उसकी कोई मूर्ति नहीं सभी उसके मुह़ताज हैं, वह किसी का मुह़ताज नहीं और न उसे किसी चीज़ की ज़रूरत, वह सबकी ज़रूरतों का पूरा करने वाला ह़क़दार है उसके सिवा कोई अ़िबादत के लायक़ नहीं चाहे वह कितना ही बड़े से बड़ा ताक़त व हुकूमत का मालिक हो।

वह अल्लाह माँ, बाप, बेटा, बेटी से पाक है उस का किसी से नाता रिश्ता नहीं, इसी तरह वह किसी के अन्दर नहीं समाता और न कोई रूप अख़्तियार करता है उस ने अपनी मख़्लूक़ की हिदायत के लिए पैग़म्बर भेजे ताकि वह लोगों को सच्चा मज़हब सिखाएँ।

(ii) रसूलों पर ईमान-

हज़रत आदम (अ़लै०) से हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) तक तमाम रसूलों पर ईमान रखना, कि वह सब बरहक़ थे जो अल्लाह के भेजे हुए नबी व रसूल थे। हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को अल्लाह तआ़ला का बन्दा और आख़िरी रसूल मानना तथा अल्लाह तआ़ला के बाद आप को तमाम मख़्लूक़ में सबसे अफ़ज़ल मानना, कि आप गुनाहों से पाक हैं।

आप पर अल्लाह तआ़ला ने कुर्आने पाक नाज़िल किया, आप को शबे मेराज में अल्लाह तआ़ला ने आसमानों पर बुलाया और जन्नत व दोज़ख़ दिखाया, आप ने अल्लाह तआ़ला के हुक्म से बहुत से मोअ़जिज़े दिखाये, आप ख़ातिमुन्नबीईन हैं कि आप के बाद कोई नया नबी नहीं होगा। हाँ, केवल हज़रत ईसा (अ़लै०) जो पहले ज़माने के पैग़म्बर हैं आसमान से उतरेंगे और इस्लामी शरीअ़त की पैरवी करेंगे, आप इन्सानों और जिन्नातों सबके लिए रसूल हैं। आप क़ियामत के रोज़ अल्लाह तआ़ला की इजाज़त से गुनाहगारों की शफ़ाअ़त करेंगे और अल्लाह तआ़ला आप की शफ़ाअ़त क़ुबूल फ़रमाएँगे। आप ने जिन बातों का हुक्म किया है उन पर अ़मल करना, और जिन से मना किया है उस से रुक जाना और जिन वाक़िआ़त की ख़बर दी है उसको उसी तरह मानना और यक़ीन करना उम्मत पर ज़रूरी है। आप के साथ मुहब्बत रखना और आप की तअ़ज़ीम व तकरीम करना हर उम्मती के ज़िम्मे है जो शरअ़ी हुदूद में हो।

(iii) अल्लाह तआ़ला की किताबों पर ईमान-

तीसरी चीज़ जिस पर ईमान लाने की तअ़लीम हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के ज़रिये से हम को दी गई है। वह अल्लाह की किताबें हैं जो उसने अपने नबियों पर नाज़िल की थीं।

अल्लाह तआ़ला ने जिस तरह हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) पर क़ुर्आन नाज़िल फ़रमाया है उसी तरह आप से पहले जो रसूल गुज़रे थे उनके पास भी अपनी किताबें या सहीफ़े भेजी थीं उन में से कुछ किताबों के नाम हमको बताये गये हैं। जैसे- 'सुहुफ़े' इब्राहीम जो हज़रत इब्राहीम (अ़लै०) पर, 'तौरात' जो हज़रत मूसा (अ़लै०) पर, 'ज़बूर' जो हज़रत दाऊद (अ़लै०) पर और 'इन्जील' जो हज़रत ईसा (अ़लै०) पर नाज़िल हुई इनके सिवा दूसरी किताबें जो रसूलों के पास आई थीं उनके नाम हमको नहीं बताये गये थे इसलिए किसी और मज़हबी किताब के मुतअ़ल्लिक़ हम यक़ीन के साथ न यह कह सकते हैं कि वह अल्लाह की तरफ़ से है और न यह कह सकते हैं कि वह अल्लाह की तरफ़ से नहीं है। हाँ, इतना ज़रूर कह सकते हैं कि इस वक़्त क़ुर्आन के अ़लावा पूरी तरह मुकम्मल कोई भी किताब अपनी असली शक्ल में महफ़ूज़ नहीं, और यही किताब क़ियामत तक तमाम इन्सानों की निजात का ज़रिया है। मगर हाँ, हम ईमान लाते हैं कि जो किताबें अल्लाह की तरफ़ से अपनी अस्ल शक्ल में थी वह सब बरहक़ थीं।

(iv) अल्लाह के फ़रिश्तों पर ईमान-

फ़रिश्तों की हक़ीक़त हम को नहीं बताई गई केवल उन की सिफ़ात बताई गई हैं और उन की हस्ती पर यक़ीन रखने का हुक्म दिया गया है। हमारे पास यह मालूम करने का कोई ज़रिया नहीं कि वह कैसे हैं और कैसे नहीं। इसलिए अपनी अ़क़्ल से कुछ सोचना, और उनके वजूद का इन्कार करना कुफ़्र है। आप (सल्ल०) ने हमें बताया है कि फ़रिश्ते अल्लाह की मख़्लूक़ हैं गुनाहों से पाक हैं वह अल्लाह की नाफ़रमानी कर ही नहीं सकते वह हमेशा अल्लाह की अ़िबादत में मशगूल रहते हैं।

आसमान और ज़मीन के सारे इन्तिज़ामात फ़रिश्तों के ज़िम्मे कर रखा है। जैसे हज़रत जिब्रईल (अ़लै०) अल्लाह तआ़ला के एहकाम और किताबें पैग़म्बरों के पास लाते थे, इसी तरह हज़रत मीकाईल (अ़लै०) तमाम मख़्लूक़ को रोज़ी पहुँचाने और बारिश वग़ैरह के इन्तिज़ामात पर मुक़र्रर हैं और बहुत से फ़रिश्ते उनकी मातहती में काम करते हैं। कुछ बादलों के इन्तिज़ामात पर, कुछ हवाओं

के इन्तिज़ामात पर, कुछ दरियाओं, तालाबों, नहरों पर मुक़र्रर हैं। तमाम चीज़ों का इन्तिज़ाम अल्लाह तआ़ला के हुक्म के मुताबिक़ करते हैं।

ह़ज़रत इस्राफ़ील (अ़लै०) क़ियामत के दिन सूर फूँकेंगे और ह़ज़रत इज़्राईल (अ़लै०) मख़्लूक़ की जान निकालते हैं इसी तरह़ इन की मातह़ती में भी बहुत से फ़रिश्ते हैं, नेक बन्दों की जान निकालने वाले फ़रिश्ते अलग हैं और बुरे लोगों की जान निकालने वाले फ़रिश्ते अलग हैं, इस के अ़लावा कुछ फ़रिश्तों के यह काम हैं। जैसे-

१- हर इन्सान के साथ दो फ़रिश्ते रहते हैं एक फ़रिश्ता उसके नेक अ़मल लिखता है और दूसरा बुरा अ़मल। इन फ़रिश्तों को किरामन कातिबीन कहते हैं।

२- कुछ फ़रिश्ते इन्सान के मरने के बाद सवाल करने आते हैं, उन्हें मुन्किर नकीर कहते हैं।

३- कुछ फ़रिश्ते आफ़तों, बलाओं, बच्चों, बूढ़ों कमज़ोरों, की जिन के बारे में हुक्म होता है उनकी ह़िफ़ाज़त करते हैं।

४- कुछ फ़रिश्ते जन्नत पर कुछ दोज़ख़ पर कुछ अ़र्श के उठाने पर मुक़र्रर हैं।

५- दुनिया में जो फ़रिश्ते काम करते हैं उन की सुबह़ व शाम तब्दीली भी होती है सुबह़ की नमाज़ के वक़्त रात वाले फ़रिश्ते आसमानों पर चले जाते हैं और दिन में काम करने वाले आ जाते हैं और अ़स्र की नमाज़ के बाद दिन वाले फ़रिश्ते चले जाते हैं। रात में काम करने वाले आ जाते हैं।

(v) तक़्दीर पर ईमान-

हर बात अल्लाह के इ़ल्म में है। अच्छी बुरी तक़्दीर अल्लाह की ओर से होती है और हर चीज़ के पैदा करने से पहले अल्लाह तआ़ला उसे जानता है। अल्लाह तआ़ला के इसी इ़ल्म और अन्दाज़े को तक्दीर कहते हैं। कोई अच्छी या बुरी बात अल्लाह के इ़ल्म और अन्दाज़े से बाहर नहीं।

आख़िरत पर ईमान-

आख़िरत से मुतअ़ल्लिक़ जिन बातों पर ईमान रखना ज़रूरी है वह यह है-

(१) एक दिन अल्लाह तआ़ला तमाम आ़लम को मिटा देगा। उस दिन का नाम

'क़ियामत' है।

(२) फिर वह सब को एक दूसरी ज़िन्दगी देगा और सब अल्लाह के सामने ह़ाज़िर होंगे उसको ह़श्र कहते हैं।

(३) तमाम लोगों ने अपनी दुनियवी ज़िन्दगी में जो कुछ किया है उस का पूरा नाम-ए-आ़माल अल्लाह की अ़दालत में पेश होगा।

(४) अल्लाह तआ़ला हर शख़्स के अच्छे और बुरे आ़माल को वज़न फ़रमाएँगे जिसकी भलाई वज़नी होगी उसे बख़्श देंगे और जिसकी बुराई भारी होगी उसे सज़ा देंगे।

(५) जिन लोगों की बख़्शिश हो जाएगी वह जन्नत में जाएँगे और जिन को सज़ा दी जाएगी वह दोज़ख़ में जाएँगे।

जो ऊपर दी गई तमाम बातों पर ईमान रखे उस के लिए ज़रूरी है कि वह इन हुक्मों की पाबन्दी करे। जैसे-

नमाज़

नमाज़ हर मुस्लिम बालिग़, मर्द औ़रत पर दिन रात में पाँच बार उसके वक़्त पर पढ़ना फ़र्ज़ है। जिसकी फ़ज़ीलत के बारे में ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया-

(१) ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया जिस शख़्स की एक वक़्त की अगर नमाज़ छूट जाए तो वह ऐसा है या उसका इतना बड़ा नुक़सान हुआ जैसे- "किसी शख़्स के घर के सारे लोग और माल व दौलत सब छीन लिया गया हो।" **(इब्नेह़ब्बान)**

(२) ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया मुसलमान और काफ़िर के बीच फ़र्क़ करने वाली नमाज़ है। **(मिश्कात)**

(३) ह़ज़रत उ़बादः बिन सामित (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि मुझे अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने सात चीज़ों की नसीह़त फ़रमाई, जिन से दो यह थीं।

(i) अल्लाह के साथ किसी को साझीदार न बनाना चाहे तुम्हारे शरीर के टुकड़े-टुकड़े कर दिये जाएँ।

(ii) नमाज़ जानबूझकर न छोड़ना, क्योंकि जो जानबूझकर नमाज़ छोड़ देता है वह इस्लाम (मज़हब) से निकल जाता है। **(तबरानी)**

यही वजह है कि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के ज़माने में जो लोग इस्लाम क़ुबूल करते और नमाज़ की अहमियत को सुनते, तो व्याकुल हो जाते, छुप-छुप कर घर में नमाज़ें पढ़ते, और ह़ज़रत अरक़म (रज़ि०) के घर पर जाकर दीन सीखते, सब से पहले तौह़ीद के बाद नमाज़ सिखाई जाती।

रोज़ः

रोज़ हर साल रमज़ान के महीने में पूरे महीने के रोज़े हर बालिग़ मर्द, औ़रत पर फ़र्ज़ है।

ज़कात

हर उस शख़्स पर फ़र्ज़ है जिसके पास साढ़े बावन तोला चाँदी या साढ़े सात तोला सोना या उसके बराबर की मालियत, रहने का घर पहनने के कपड़े और इस्तिमाल के बर्तन के अ़लावा हो उस पर साल गुज़र जाए तो उस पूरी मालियत का 2½ % कुर्आ़न में दिये गये हुक्म के मुताबिक़ अदा करना फ़र्ज़ है।

ह़ज

अल्लाह के बने हुए घर "कअ़बः" तक जाने की जिसे क़ुदरत हो उस पर ह़ज करना फ़र्ज़ है।

फ़र्ज़, सुन्नत, नफ़्ल, ह़राम, ह़लाल का बयान

नमाज़ पढ़ने से पहले उन शब्दों का बयान, जिनका इस्तेमाल नमाज़ों में बहुत ज़्यादा होता है। जैसे-

फ़र्ज़ किसे कहते हैं?

फ़र्ज़ उसे कहते हैं जो क़तअ़ी दलील से साबित हो अर्थात जो कुर्आ़न से

साबित हो और उसमें किसी तरह़ का शक न हो, और उसकी फ़र्ज़ियत का इन्कार करने वाला और बिना शक शरअ़ी वजह के छोड़ने वाला फ़ासिक़ व अ़ज़ाब का पाने वाला हो जाता है।

सुन्नत किसे कहते हैं?

जिसे ह़ज़रत मुह़म्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने या सह़ाबा(रज़ि०) ने जो किया हो या करने का हुक्म दिया हो। उसे सुन्नत कहते हैं जिनकी दो क़िस्में हैं।

1- सुन्नते मुअ़क्किदह
2- सुन्नते ग़ैर मुअ़क्किदह

सुन्नते मुअ़क्किदह किसे कहते हैं?

सुन्नते मुअ़क्किदह उसे कहते हैं जिसे ह़ज़रत मुह़म्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने हमेशा किया हो या करने के लिए कहा हो और बिना किसी शरअ़ी वजह के कभी न छोड़ा हो।

सुन्नते ग़ैर मुअ़क्किदह किसे कहते हैं?

सुन्नते ग़ैर मुअ़क्किदह उसे कहते हैं जिसे ह़ज़रत मुह़म्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने ज़्यादातर किया हो लेकिन कभी-कभी छोड़ भी दिया हो। इन सुन्नतों को करने में मुस्तह़ब से ज़्यादा सवाब मिलता है और छोड़ने वाला गुनाहगार नहीं होता।

नफ़्ल या मुस्तह़ब किसे कहते हैं?

नफ़्ल उसे कहते हैं जिसकी फ़ज़ीलत शरीअ़त से साबित हो उनके करने में सवाब हो और छोड़ने में अ़ज़ाब न हो। इसे ही मुस्तह़ब भी कहते हैं।

ह़राम किसे कहते हैं?

ह़राम उसे कहते हैं जिस को करने से मना किया गया हो और उसके सुबूत

में किसी तरह़ का शक न हो तो उसका करने वाला फ़ासिक़ और अ़ज़ाब का पाने वाला होता है और उसका इन्कार करने वाला काफ़िर हो जाता है।

मकरूह़ किसे कहते हैं?

दिल जिससे कराहियत कर, उसे मकरूह करते हैं।

मकरूह तन्ज़ीही किसे कहते हैं?

मकरूह तन्ज़ीही उसे कहते हैं जिसके छोड़ने में सवाब मिलता है और करने में अ़ज़ाब तो नहीं मिलता लेकिन अच्छा नहीं।

मकरूह तह़रीमी किसे कहते हैं?

मकरूह तह़रीमी उसे कहते हैं जिसकी मुमानियत दलील ज़ननी अर्थात जिसके सुबूत में शक हो उसका इन्कार करने वाला काफ़िर तो नहीं होता परन्तु गुनाहगार हो जाता है।

तहारत (पाकी) का बयान

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) पर जो सब से पहली वह्य नाज़िल हुई उस में तौह़ीद के बाद पहली हिदायत यह है कि तहारत का कामिल एहतिमाम कीजिए।

وَثِيَابَكَ فَطَهِّرْ

अनुवाद- "और अपनी ज़ात को पाक साफ़ कीजिए।" (सूरः मुदस्सिर-४)

व्याख्या-

'सियाब', सौब की जमा है जिस के माने लिबास के हैं। मगर यहाँ 'सियाब' से मुराद कपड़े ही नहीं बल्कि लिबास, रुह़ की पाकी और पूरी शख़्सियत मुराद है।

अ़रबी में "ताहिरुस्सियाब" उस शख़्स को कहते हैं जो हर तरह के ऐबों और ग़न्दगी से पाक हो, कुर्आन की नसीह़त का मतलब यह है कि अपने लिबास,

जिस्म और क़ल्ब व रुह़ को हर तरह की गन्दगियों से पाक-साफ़ रखे, क़ल्ब व रुह़ की गन्दगियों से मुराद तो कुफ़्र व शिर्क के बातिल अ़क़ायद ख़यालात और अख़्लाक़ी ऐ़ब हैं और जिस्म व लिबास की ग़न्दगियों से मुराद वह मह़सूस निजासतें हैं जिन से हर नेक तबीअ़त वाला आदमी कराहत करता है, और जिन का नजिस होना मह़सूस है या जिन पर शरीअ़त ने नजिस होने का हुक्म लगाया है।

तहारत की इसी अहमियत के पेशेनज़र कुर्आन में जगह-जगह इस की तर्ग़ीब दी गई है और बहुत से मक़ामात पर तो अल्लाह तआ़ला ने उन बन्दों को अपना मह़बूब क़रार दिया है जो तहारत और नजासत का पूरा-पूरा एह़तिराम करते हैं।

وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُطَّهِّرِيْنَ ۝

अनुवाद- "और अल्लाह उन लोगों से मुह़ब्बत करता है जो ख़ूब पाक व साफ़ रहते हैं।" (सूरः तौबः आयत नं० १०८)

और दूसरी जगह फ़रमाया-

إِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ التَّوَّابِيْنَ وَيُحِبُّ الْمُتَطَهِّرِيْنَ ۝

"बेशक अल्लाह तआ़ला उन को मह़बूब रखता है, जो बहुत ज़्यादह तौबः करते हैं और उन को अल्लाह मह़बूब रखता है जो पाक-साफ़ रहते हैं।"

(सूरः बक़रः आयत नं० २२२)

रसूल (सल्ल०) ख़ुद तो तहारत व निज़ासत की बेनज़ीर मिसाल थे ही, उम्मत को भी आप ने तहारत की इन्तिहाई ताकीद फ़रमाई और तरह-तरह से उस की अहमियत वाज़ेह फ़रमा कर पाक व साफ़ रहने की तर्ग़ीब दी है।

इर्शाद फ़रमायाः **"तहारत आधा ईमान है"।**

फिर आप(सल्ल०) ने तफ़्सील और वज़ाह़त के साथ उस के अह़काम बताये, पाक होने के तरीक़े समझाये, और ख़ुद अ़मल करके समझाने और ज़ेहन नशीन कराने का ह़क़ अदा किया। इसलिए हर मुसलमान के लिए ज़रूरी है कि वह उन अह़काम को मालूम करे और उन के मुताबिक़ अपने ज़ाहिर व बातिन को पाक करे। क़ल्ब व रुह़ को भी कुफ़्र व शिर्क के अ़क़ायद से पाक रखे और अपने जिस्म व लिबास और दूसरी इस से मुतअ़ल्लिक़ चीज़ों को भी हर तरह

की नजासतों से पाक रखें।

इस मौक़े पर यह बात अच्छी तरह ज़ेहन नशीन कर लेनी चाहिए कि पाकी और नापाकी का मेअ़यार सिर्फ़ ख़ुदा की शरीअ़त है, अपने ज़ौक़ व तबीअ़त या अपनी समझ से न हमें इस में किसी इज़ाफ़े का ह़क़ है और न किसी कमी का। हर वह चीज़ यक़ीनन पाक है जिस को शरीअ़त ने पाक किया है और ह़क़ सिर्फ़ वही है जिस को शरीअ़त ने ह़क़ बताया हो, और हर वह चीज़ यक़ीनन बातिल और नापाक है, जिस को शरीअ़त ने बातिल या नापाक बताया है।

फिर शरीअ़त ने पाक करने और नापाक होने के जो तरीक़े बताये हैं उन तरीक़ों और तद्बीरों से यक़ीनन पाकी ह़ासिल हो जाती है। इस मामले में अपने ज़ौक़ व ख़याल या रुझान से पाकी या नापाकी का कोई मेअ़यार क़ायम करना और वहम और शुबहात में पड़ कर ख़ुदा की आसान शरीअ़त को अपने लिए दुश्वार बना लेना न सिर्फ़ यह कि अपने को बेजा दुश्वारियों में मुब्तिला कर लेना है बल्कि सख़्त क़िस्म की गुमराही और दीन के सही फ़हम से महरुमी है, इस ग़लत अ़मल से बाज़ अवक़ात बड़ी ज़बरदस्त ख़राबियाँ पैदा हो जाती हैं और आदमी शरीअ़त को अपने लिए वबाले जान बनाकर दीन से बहुत दूर जा पड़ता है।

नजासत का अर्थ

"नजासत के माने ही ग़न्दगी और नापाकी के होते हैं, यह तहारत का उल्टा है।" तहारत की ह़क़ीक़त, तरीक़े और उस के अह़काम मसायल जानने के लिए ज़रुरी मालूम होता है कि पहले नजासत की ह़क़ीक़त, उस की क़िस्में और उस से पाक होने के तरीक़े जान लिये जाएँ, इस लिए पहले नजासत के अह़काम व मसायल बयान किये जाते हैं।

नजासत की क़िस्में

नजासत की दो क़िस्में हैं,

(१) नजासते ह़क़ीक़ी (२) नजासते ह़ुक्मी

इन दोनों के अह़काम व मसायल अलग-अलग हैं। पाकी और तहारत ह़ासिल करने के लिए ज़रूरी है कि इन अह़काम और मसायल को अच्छी तरह समझ कर याद रखा जाये।

१- नजासते ह़क़ीक़ी

नजासते ह़क़ीक़ी से मुराद वह मख़सूस ग़लाज़त और ग़न्दगी है जिस से इन्सान फ़ित्री तौर पर नफ़रत करता है और अपने जिस्म व लिबास को दूसरी चीज़ों से बचाता है। शरीअ़त ने भी उस से बचने और पाक रहने का ह़ुक्म दिया है जैसे पेशाब, पाखाना, मनी और जानवरों का ख़ून आदि।

नजासते ह़क़ीक़ी की दो क़िस्में हैं-

(१) नजासते ग़लीज़ा

(२) नजासते ख़फ़ीफ़ा

नजासते ग़लीज़ा-

वह सारी चीज़ें नजासते ग़लीज़ा हैं जिन के नापाक और नजिस होने में किसी क़िस्म का शुबहा न हो, इन्सान की तबीअ़त भी उन से कराहत करती है और शरीअ़त की दलीलों से भी उन की नापाकी साबित है, ऐसी चीज़ों की ग़न्दगी बहुत ज़्यादा सख़्त है इसीलिए शरीअ़त में इन का ह़ुक्म भी सख़्त है, नीचे हम उन चीज़ों का ज़िक्र करते हैं। जैसे-

(१) सुअर और उस की हर चीज़ नजासते ग़लीज़ा है, चाहे मुर्दा हो या ज़िन्दा।

(२) इन्सान का पाखाना, पेशाब, मनी, मज़ी और तमाम जानवरों की मनी और छोटे बच्चों का पेशाब, पाखाना।

(३) ख़ून इन्सान का हो या ह़ैवान का।

(४) मुँह भर के क़ै (उल्टी) चाहे बड़े आदमी की हो या बच्चे की।

(५) ह़ैज़, निफ़ास और इस्तिह़ाज़े का ख़ून।

(६) औ़रत के जिस्म के ख़ास ह़िस्से से जो रतूबत निकले।

(७) जिन जानवरों का झूठा नापाक है, उन का पसीना और लुआ़बे दहन भी

नापाक है।

(८) ज़ब्ह किये बग़ैर जो जानवर ख़ुद मर गया हो या मार दिया गया हो, उस का गोश्त, चर्बी, खाल सब नजिस है, अलूबत्ता वह अंग पाक हैं जिन में ख़ून सरायत नहीं करता जैसे सींग, दाँत, ख़ुर, पर, वग़ैरह।

(९) ह़राम जानवर का दूध, चाहे वह मुर्दा हो या ज़िन्दा, नजिस है। मुर्दा जानवर चाहे वह ह़लाल हो या ह़राम उस का दूध नजिस है।

(१०) ख़ून वाले जानवरों के जिस्मों से मरने के बाद जो रतूबत निकले वह नजिस है।

(११) नजिस चीज़ों का जो ज़हर निकाला जाये या अ़र्क़ निचोड़ा जाये, वह भी नजिस है।

(१२) जो परदार परिन्दे उड़ते नहीं, जैसे मुर्गी और बतख़ उन की बीट नजिस है, और सारे दरिन्दों का पाखाना पेशाब भी नजिस है।

(१३) शराब और दूसरी नशाआवर चीज़ें।

(१४) साँप की खाल नजिस है।

(१५) मुर्दा इन्सान के मुँह का लुआ़ब।

(१६) शहीद का वह ख़ून भी नजिस है जो उस के जिस्म से बह कर गिर जाए।

नजासते ख़फ़ीफ़ा

वह सारी चीज़ें नजासते ख़फ़ीफ़ा हैं जिन की ग़न्दगी ज़रा हल्की है, और शरीअ़त की बाज़ दलीलों में उन के पाक होने का भी शुब्हा हुआ है इसलिए शरीअ़त में उन का हुक्म भी हल्का है, नीचे कुछ ऐसी चीज़ों का ज़िक्र किया जाता है जिन की नजासत, नजासते ख़फ़ीफ़ा है।

नजासते ख़फ़ीफ़ा का हुक्म-

(१) ह़लाल जानवरों का पेशाब, जैसे गाय, बैल, भैंस व बकरी वग़ैरह।

(२) घोड़े का पेशाब।

(३) ह़राम परिन्दों की बीट जैसे कव्वा, चील, बाज़ वग़ैरह अलूबत्ता चमगादड़

की बीट और पेशाब पाक है।

(४) ह़लाल परिन्दों की बीट अगर बद्बूदार हो।

(५) अगर नजासते ख़फ़ीफ़ा ग़लीज़ से मिल जाए तो चाहे ग़लीज़ की मिक़्दार ख़फ़ीफ़ा से बहुत कम हो तब भी दोनों के मिलने से नजासते ग़लीज़ा समझा जाएगा।

नजासते ह़क़ीक़ी से पाक करने के तरीक़े

नापाक होने वाली चीज़ें मुख़्तलिफ़ क़िस्म की हैं, इसलिए उन के पाक करने के तरीक़े भी अलग-अलग हैं। जैसे- बाज़ चीज़ें ठोस हैं, बाज़ पतली और बहने वाली हैं, बाज़ जज़्ब करती हैं, बाज़ नहीं करतीं या कम करती हैं। बाज़ में गन्दगी दाख़िल हो जाती है, बाज़ में दाख़िल नहीं होती, इसलिए उन के पाक करने के तरीक़े समझ लेना चाहिए।

ज़मीन को पाक करने के तरीक़े

(१) ज़मीन अगर नापाक हो जाए चाहे पतली नजासत से हो या गाढ़ी नजासत से, हर सूरत में ख़ुश्क होने पर पाक हो जाएगी।

(२) नापाक ज़मीन ख़ुश्क होने से पहले अच्छी तरह पानी बहा कर धो डाली जाए, या पानी डाल कर किसी कपड़े वग़ैरह से जज़्ब कर लिया जाए ताकि नापाकी का कोई निशान या बू बाक़ी न रहे तब भी ज़मीन पाक हो जाएगी। अलूबत्ता तीन बार पानी डाल कर जज़्ब कर लेना चाहिए।

(३) मिट्टी के ढेले, रेत के पत्थर और कंकर आदि भी ख़ुश्क होने से पाक हो जाते हैं, और वह पत्थर भी जो चिकने नहीं होते और पतली चीज़ को जज़्ब कर लेते हैं, वह भी ख़ुश्क होने से पाक हो जाते हैं।

(४) ज़मीन से उगने वाली घास पौधे या दरख़्त अगर नजिस हो जायें तो ख़ुश्क होने से पाक हो जाते हैं।

(५) ज़मीन पर जो चीज़ें जमी होती हैं जैसे दीवार, सुतून, चौके, चौखट वग़ैरह यह भी ख़ुश्क होने से पाक हो जाती हैं।

(६) नापाक ज़मीन की मिट्टी नीचे की ऊपर और ऊपर की नीचे कर देने से भी ज़मीन पाक हो जाती है।

(७) नापाक ज़मीन पर मिट्टी डाल कर इस तरह छुपा दी जाए कि नजासत की बू न आए तो वह ज़मीन पाक हो जाती है, अलूबत्ता उस पर तयम्मुम दुरुस्त नहीं है।

(८) नजिस मिट्टी से बनाये जाने वाले बर्तन जब तक कच्चे हैं नापाक रहते हैं और जब पका लिये जायें तो पाक हो जाते हैं।

(९) गोबर से लीपी हुई ज़मीन नापाक है, इस पर बग़ैर कुछ बिछाए नमाज़ पढ़ना दुरुस्त नहीं।

नजासत न सोखने वाली चीज़ों की पाकी के तरीक़े

(१) वह चीज़ें जो किसी धातु से बनने वाली हों जैसे तलवार, चाकू, छुरी, आईना और सोने चांदी के ज़ेवर या किसी दूसरी धातु के ज़ेवर जैसे- तांबा, पीतल, एलुमीनियम और स्टील के बर्तन वग़ैरह, अगर नापाक हो जायें तो ज़मीन पर रगड़ने, माँझने, या तर कपड़े से पोछने से पाक हो जाते हैं।

(२) चीनी, मिट्टी या चिकने पत्थर के बर्तन या वह इस्तेमाल शुदा पुराने बर्तन जिन में नजासत जज़्ब न हो, यह भी ज़मीन पर रगड़ने मांझने या तर कपड़े से पोछने से पाक हो जाते हैं। रगड़ने और पोछने में इतना एहतिमाम किया जाए कि नजासत का असर न रहे,

(३) किसी धातु से बनी हुई चीज़ें और चीनी वग़ैरह के बर्तन तीन बार पानी से धो देने से पाक हो जाते हैं।

(४) अगर इन चीज़ों पर नक़्श हो, जैसे ज़ेवर या बर्तन तो पानी से धोए बग़ैर केवल रगड़ने और तर कपड़े से पोछने से पाक न होंगी।

(५) धातु के बने हुए बर्तन या दूसरी चीज़ें जैसे चाकू, छुरी, फुकनी, चिमटा वग़ैरह आग में डाल देने से भी पाक हो जाते हैं।

(६) मिट्टी, पत्थर के बर्तन भी आग में डाल देने से पाक हो जाते हैं।

(७) अगर चटाई तख़्त या किसी दूसरी चीज़ के फ़र्श पर गाढ़ी नजासत लग जाए तो केवल तर कपड़े के पोछने से पाकी ह़ासिल हो जाती है।

नजासत जज़्ब करने वाली चीज़ों की पाकी के तरीक़े

(१) मोज़ा जूता, या चमड़े से बनी हुई दूसरी चीज़ें अगर नजिस हो जायें और नजासत गाढ़ी हो जैसे- गोबर, पाखाना, ख़ून, मनी वग़ैरह तो नजासत खुरचने रगड़ने या मैल को दूर कर देने से पाक हो जाती हैं और अगर नजासत पतली हो जो ख़ुश्क होने के बाद नज़र न आए, तो धोए बग़ैर पाक न होगी, उन के धोने का तरीक़ा यह है कि हर बार धोकर इतनी देर ठहरे कि पानी बन्द हो जाए। इस तरह तीन बार धोया जाए।

(२) मिट्टी के बने हुए बर्तन या ऐसे पत्थर के बर्तन जिन में पानी जज़्ब हो, या लकड़ी के बर्तन जिन में पानी जज़्ब हो या नजासत जज़्ब हो जाती हो, ऐसे बर्तन या इस्तेमाल की चीज़ें अगर नजिस हो जायें तो उन के पाक करने का तरीक़ा यह है कि उन को तीन बार धोया जाए और हर मर्तबा इतना ख़ुश्क कर लिया जाए कि पानी टपकना बिल्कुल बन्द हो जाए, और अगर बहते पानी में धोई जायें तो ख़ुश्क करने की शर्त नहीं है सिर्फ़ इस क़दर पानी हो कि अच्छी तरह धुल जायें और पानी बिल्कुल ही टपक जाए।

(३) ग़ल्ला अगर नापाक हो जाए तो तीन बार धोया जाए और हर बार ख़ुश्क कर दिया जाए, और अगर नजासत गाढ़ी हो तो उस का दूर कर देना काफ़ी है। जैसे- ग़ल्ला की टंकी में बिल्ली ने पाखाना कर दिया और पाखाना बंधा हुआ ख़ुश्क है तो सिर्फ़ उस का हटा देना ही काफ़ी है, ग़ल्ला पाक रहेगा। ज़्यादा से ज़्यादा यह करे कि अगर कुछ दानों पर नजासत का शुबा हो तो तीन बार धो डाले।

(४) अगर कपड़े पर नजासत लग जाए तो तीन बार धोने और हर बार अच्छी

तरह निचोड़ने से पाक हो जाता है, और अगर नजासत ऐसी है कि अच्छी तरह मल कर धोने से भी बद्बू नहीं जाती या धब्बा रह जाता है तो कोई हर्ज नहीं कपड़ा पाक हो गया।

(५) कपड़े पर मनी लग जाए और ख़ुश्क हो जाए तो मनी को खुरचने, या मलने, रगड़ने से कपड़ा पाक हो जाएगा और अगर मनी सूखी न हो तो तीन बार धोने से कपड़ा पाक हो जाएगा, और अगर किसी ने पेशाब करके इस्तिंजा न किया था और उस वक़्त मनी निकल गई तो धोना ज़रुरी है, और अगर मनी बिल्कुल ही पतली हो और सूख जाए तो धोने से पाक हो जाएगी।

(६) पानी की तरह जो चीज़ें पतली हों और चिकनी न हों, उन के ज़रिए भी कपड़े पर लगी हुई नजासत धोना और पाक करना दुरुस्त है।

(७) अगर कपड़े को बहते हुए पानी से धो रहे हों तो निचोड़ने की ज़रुरत नहीं, सिर्फ़ इतना ही काफ़ी है कि पानी एक तरफ़ से दूसरी तरफ़ सरायत करके निकल जाए।

(८) अगर कोई ऐसा कपड़ा हो जिस को निचोड़ने में फटने का अंदेशा हो तो उस के पाक करने का तरीक़ा यह है कि तीन बार धोया जाए और हाथ या किसी और ज़रिए से इस तरह निचोड़ा दिया जाए कि पानी निकल जाए।

(९) नापाक घी, तेल या कोई और रोग़न कपड़े में लग जाए तो तीन मर्तबा धो देने से कपड़ा पाक हो जाता है, चाहे रोग़न की चिकनाई बाक़ी रह जाए। इसलिए कि रोग़न में शामिल होने वाली नजासत तीन बार धो देने से पाक हो जाती है।

(१०) अगर किसी मुरदार की चर्बी से कपड़ा नजिस हो जाए तो सिर्फ़ तीन बार धोना काफ़ी नहीं चिकनाहट का दूर करना भी ज़रूरी है।

(११) अगर चटाई, टाट, बड़ी दरी या और किसी ऐसी चीज़ से बने फ़र्श पर जिस का निचोड़ना दुश्वार है, कोई पतली नजासत लग जाए तो उस के पाक करने का तरीक़ा यह है कि उस पर तीन बार पानी डाला जाए और हर बार ख़ुश्क कर दिया जाए, ख़ुश्क करने का मतलब यह है कि अगर उस पर कोई चीज़ रखें तो गीली न हो।

(१२) अगर कोरा बर्तन गन्दा हो जाए और बर्तन नजासत को जज़्ब कर ले तो उस के पाक करने का तरीक़ा यह है कि उस में पानी भर दीजिए, जब नजासत का असर पानी में आ जाए तो पानी फेंक कर फिर भर दीजिए। इसी तरह करते रहिए यहाँ तक कि नजासत का असर ख़त्म हो जाए, न रंग बाक़ी रहे न बू बाक़ी रहे।

(१३) नजिस रंग में रंगे हुए कपड़ों को पाक करने के लिए इस तरह धोईये कि साफ़ पानी आने लगे रंग छूटे या न छूटे कपड़ा पाक हो जाएगा।

गाढ़ी और बहने वाली चीज़ों की पाकी के तरीक़े

(१) नापाक चर्बी या तेल से साबुन बना लिया जाए तो यह साबुन पाक होगा।

(२) तेल या घी नापाक हो जाए तो तेल को बराबर पानी डाल कर जलाया जाए। जब जल जाए तो फिर पानी डाल कर जलाया जाए, इस तरह तीन बार करने से घी या तेल पाक हो जाएगा, या घी, तेल में पानी डाला जाए, जब घी या तेल ऊपर आ जाए तो उतार लिया जाए इस तरह तीन बार करने से घी या तेल पाक हो जाएगा।

(३) शहद, शीरा, या शरबत अगर नापाक हो जाए तो उस में पानी डाल कर खौला दिया जाए, इस तरह तीन बार करने से पाक हो जाएगा।

(४) अगर नापाक तेल, सर या बदन पर मल लिया, तो सिर्फ़ तीन बार धोने से सर और बदन पाक हो जाएगा साबुन या तेल की चिकनाई साफ़ करने का एहतिमाम करना ज़रूरी नहीं है।

गाढ़ी और जमी हुई चीज़ों की पाकी के तरीक़े

(१) अगर जमा हुआ घी, जमी हुई चर्बी, या जमा हुआ शहद नापाक हो जाए तो सिर्फ़ नापाक हिस्से को अलग कर देने से पाक हो जाएगा।

(२) गूंधा हुआ आटा या ख़ुश्क आटा नापाक हो जाए तो नापाक हिस्सा अलग कर देने से पाक हो जाएगा। जैसे गूंधे हुए आटे में कुत्ते ने मुँह डाल दिया हो तो जहाँ-जहाँ उस का लुआब महसूस हो उस को अलग कर दिया जाए बाक़ी सब पाक है।

(३) साबुन में कोई नजासत लग जाए तो नापाक हिस्से को काट कर अलग कर देने से बाक़ी पाक रहता है।

जिस्म के पाकी के तरीक़े-

(१) जिस्म पर नजासते हक़ीक़ी लग जाए तो तीन बार धोने से पाक हो जाता है, अलूबत्ता अगर मनी लग जाए और गाढ़ी हो तो सिर्फ़ खुरचने से जिस्म पाक हो जाएगा, अगर पतली हो तो धोने से पाक हो जाएगा।

(२) अगर नापाक रंग से जिस्म या बाल रंगीन हो जाएँ तो सिर्फ़ धोने से पाकी हासिल हो जाएगी, कि पानी साफ़ निकलने लगे, रंग का छुड़ाना ज़रुरी नहीं।

(३) जिस्म में गुदवा कर अगर कोई नापाक चीज़ भर दी जाए तो सिर्फ़ तीन बार धो लेने से बदन पाक हो जाएगा, उस नजिस चीज़ को खुरच कर या छील कर निकालने की ज़रुरत नहीं है।

(४) अगर ज़ख़्म में कोई नजिस चीज़ भर दी जाए और ज़ख़्म ठीक हो जाए तो उस नजिस चीज़ के निकालने की ज़रुरत नहीं, सिर्फ़ धोने से जिस्म पाक हो जाएगा। अगर हड्डी टूट गई और उस के बदले नजिस हड्डी लगा दी गई या ज़ख़्म के टांके नजिस चीज़ से सी दिए गये या टूटे हुए दांत को किसी नजिस चीज़ से जमाया गया हो तो इन सूरतों में अच्छा होने के बाद तीन बार धोने से बदन पाक हो जाता है।

(५) बदन में नजिस तेल या कोई और चिकनाहट वाली चीज़ें मिल गईं या लग गईं तो सिर्फ़ तीन बार धोने से बदन पाक हो जाएगा, चिकनाहट दूर करने का एहतिमाम ज़रूरी नहीं।

तहारत के कुछ अहम उसूल

(१) बेजा मशक़्क़त से बचने के लिए अहकाम में सहूलत हो जाती है। यानी जो

काम क़यास से साबित हैं उन में अगर किसी वक़्त ग़ैर मामूली दुश्वारी हो तो उन में शरीअ़त की तरफ़ से माफ़ी और सहूलत हो जाती है, मिसाल के तौर पर मय्यित को नहलाते वक़्त उसकी लाश से जो पानी गिरता है वह नजिस है, लेकिन नहलाने वाले पर अगर उसकी कुछ छींटें पड़ जायें तो माफ़ हैं, इसलिए कि उस से बचना दुश्वार है।

(२) जिस चीज़ में लोग आ़म तौर पर मुब्तिला हों, वह भी बेजा मशक़्क़त में दाख़िल है यानी किसी काम को आ़मतौर पर सभी कर रहे हैं और क़यास से वह नाजायज़ है, लेकिन उस का तर्क करना चूंकि बहुत दुश्वार है। इसलिए इस में सहूलत हो जाएगी।

मिसाल के तौर पर बारिश के मौसम में आ़मतौर पर रास्तों में पानी कीचड़ हो जाता है और उस से बचना दुश्वार है, इसलिए अगर उस की छींटे कपड़ो पर पड़ जायें तो माफ़ हैं।

(३) जो चीज़ किसी अहम जरूरत से जायज़ क़रार दी गई है, वह बक़द्रे ज़रूरत ही जाएज़ होगी। यानी जो चीज़ किसी मौक़े पर किसी मजबूरी या ज़रूरत की वजह से जायज़ कर दी गई है, तो वह सिर्फ़ उसी मौक़े के लिए जायज़ होगी, दूसरे मौक़ों पर वह बिला ज़रुरत जायज़ न होगी। मिसाल के तौर पर हल चलाते वक़्त अगर जानवर ग़ल्ले पर पेशाब कर दे, तो ज़रूरत की वजह से वह माफ़ है और ग़ल्ला पाक रहेगा। इस के अलावा दूसरे वक़्तों में अगर जानवर उस पर पेशाब कर दे तो ग़ल्ला नापाक हो जाएगा।

(४) जो नजासत एक बार ज़ायल हो गई वह फिर न लौटेगी। यानी शरीअ़त ने जिस नजासत के ज़ायल हो जाने का हुक्म दे दिया है वह फिर दोबारा नहीं लौटती। मिसाल के तौर पर कपड़े से ख़ुश्क मिट्टी खुरच दी जाए, तो वह कपड़ा पाक हो जाता है, इस के बाद अगर वह कपड़ा पानी में गिर जाए तो न कपड़ा गंदा होगा और न पानी नापाक होगा। इसी तरह जब नजिस ज़मीन ख़ुश्क होने से पाक हो जाए फिर उस के बाद अगर ज़मीन भीग जाए तो उस की नापाकी न लौटेगी।

(५) यक़ीन और गुमान ग़ालिब के मुक़ाबले में वहम और शक का एतिबार न

होगा, पाक है तो वह पाक ही है। केवल शक और वहम की बुनियाद पर उस के नापाक होने का हुक्म न दिया जाएगा।

(६) रिवाज और उर्फ़ आम के मुताबिक़ हुक्म दिया जाएगा, यानी जायज़ या नाजायज़ होने का हुक्म लगाते वक़्त आम रिवाज और आ़दत का एतिबार किया जाएगा, मिसाल के तौर पर आ़म आदत यह है कि हर आदमी तबअ़न अपने खाने पीने की चीज़ों को नापाकी से बचाता है लिहाज़ा काफ़िरों की खाने पीने की चीज़ें भी पाक समझी जाएँगी। उन को उसी वक़्त नापाक कहना सही होगा जब किसी पूरी दलील से उस का नापाक होना मालूम हो जाए।

तहारत के हुक्मों में शरअ़ी सहूलतें

(१) नजासते ग़लीज़ा एक दिरहम के बक़द्र माफ़ है, अगर गाढ़ी हो तो एक दिरहम के वज़न के बराबर और अगर पतली हो तो एक दिरहम की पैमाईश के बराबर, यानी इस मिक़दार में जिस्म या कपड़े पर नजासत लगी थी और नमाज़ अदा कर ली तो नमाज़ दोहराने की ज़रुरत नहीं, अलबत्ता धोने का मौक़ा हो तो धोना ही बेहतर है।

(२) मय्यित को नहलाते वक़्त नहलाने वाले पर जो छीटें पड़ीं वह माफ़ हैं।

(३) खलियान में चलाते वक़्त जानवर पेशाब कर दे तो ग़ल्ला पाक रहेगा।

(४) बरसात के मौसम में जब रास्तों में पानी और कीचड़ आ़म हो और बचना दुश्वार हो, तो यह छींटें माफ़ हैं।

(५) पेशाब या किसी और नजासत की छीटें सूई की नोक जैसी बारीक-बारीक अगर जिस्म या कपड़े पर पड़ जाएँ तो कपड़ा या बदन नापाक न होगा। जो लोग चौपाए पालते हैं उन के बदन और कपड़ों पर अगर मुतफ़र्रिक़ तौर से जानवरों का पेशाब और गोबर वग़ैरह लग जाए जो मजमुई तौर पर एक दिरहम से ज़्यादा हो तब भी माफ़ है।

(६) अगर ग़ल्ले के साथ चूहे की कुछ मेंगनियाँ भी पिस जायें लेकिन इतनी न हों कि आटे में असर मालूम होने लगे तो यह पाक है और अगर कुछ मेंगनियाँ रोटी में पक जायें या चावल और सिवईंयां वग़ैरह में पक जायें

लेकिन सख़्त रहें घुले नहीं तो यह ग़िज़ायें पाक हैं, उन का खाना दुरुस्त है।

(७) इन्सान का ख़ून चूसने वाले वह जानवर जिन में बहने वाला ख़ून नहीं है, जैसे मच्छर, मक्खी, पिस्सू वग़ैरह, यह अगर आदमी का ख़ून पी लें और उन के मारने से जिस्म या कपड़े पर ख़ून के धब्बे लग जायें तो जिस्म या कपड़ा नापाक न होगा।

(८) नजासत अगर जलाई जाए तो उस का धुवां भी पाक है और राख भी। जैसे गोबर जलाया जाए तो उस का धुवां रोटी या ग़िज़ा जो उसमें पकाया जाए लगे, या उस की राख से बर्तन मांझें जायें तो यह दुरुस्त है, नापाक न होंगे।

(९) नापाक फ़र्श, तख़्त या चटाई या मिट्टी पर आदमी लेट जाए और जिस्म भीगा न हो, नापाक फ़र्श और ज़मीन पर किसी ने भीगा हुआ पैर रख दिया या नापाक फ़र्श पर सोते हुए पसीना आ गया। इन सब सूरतों में अगर जिस्म पर नजासत का असर नुमायाँ न हो तो जिस्म पाक रहेगा।

(१०) दूध दुहने में अगर इत्तिफ़ाक़ से दो एक मेंगनीं दूध में पड़ जाएँ या गाय, भैंस का थोड़ा गोबर गिर जाए तो फ़ौरन निकाल लेना चाहिए यह दूध पाक है, उस के इस्तेमाल में कोई क़बाहत नहीं।

(११) भीगा हुआ कपड़ा किसी नापाक चीज़ पर सूखने के लिए फैला दिया, या वैसे ही रख दिया, या कोई नापाक चौकी या चारपाई पर बैठ गया और उस के कपड़े भीगे हुए थे, तो कपड़े नापाक न होंगे। हाँ अगर नजासत का असर कपड़ों पर महसूस होने लगे तो पाक न रहेंगे।

पाकी और नापाकी के कुछ मसायल

(१) मछली, मच्छर, मक्खी वग़ैरह का ख़ून नजिस नहीं जिस्म और कपड़े पर लग जाए तो नापाक न होगा।

(२) दरी, चटाई और फ़र्श का एक हिस्सा नजिस है और बाक़ी पाक है तो पाक हिस्से पर नमाज़ पढ़ना दुरुस्त है।

(३) हाथ पैरों या बालों में मेंहदी लगाई और फिर मालूम हुआ कि यह मेंहदी नापाक थी तो तीन बार अच्छी तरह धो लेने से पाकी हासिल हो जाएगी,

मेंहदी के रंग को ज़ायल करने की ज़रूरत नहीं।

(४) आँखों में सुर्मा या काजल लगाया फिर मालूम हुआ कि यह नापाक था तो अब उस का पोछना या धोना वाजिब नहीं, अलबत्ता उस का कुछ हिस्सा बह कर बाहर आ जाए तो उस का धोना ज़रूरी है।

(५) कुत्ते का लुआ़ब नापाक है लेकिन कुत्ते का जिस्म नजिस नहीं है, अगर कुत्ते के जिस्म कपड़ों से छू जाएँ चाहे उस का बदन भीगा हो या सूखा तो कपड़ा या जिस्म नापाक न होगा। अलबत्ता कुत्ते के जिस्म में कोई नजासत लगी हो तो नापाक हो जाएगा।

(६) ऐसा मोटा तख़्ता जो बीच में से चीरा जा सकता हो वह अगर एक तरफ़ से नापाक हो जाए तो उस को पलट कर दूसरी तरफ़ नमाज़ पढ़ना दुरुस्त है।

(७) जिन का झूठा पाक है उन का पसीना भी पाक है। मस्लन आदमी का पसीना पाक है चाहे वह मुस्लिम हो या ग़ैर मुस्लिम, मर्द हो या औ़रत ह़ालते ह़ैज़ वाली औ़रत हो या निफ़ास वाली, और उस शख़्स का पसीना भी पाक है जिस को नहाने की ज़रूरत हो।

(८) अगर नजासत को जलाकर उस के धुएँ से कोई चीज़ बनाएँ तो वह पाक है, और नजासतों से उठने वाली गर्मी भी पाक है।

(९) सोते में आदमी के मुँह से जो पानी निकलता है वह अगर बदन या कपड़ों पर लग जाए तो पाक है।

(१०) ह़लाल जानवरों का अंडा अगर गन्दा हो जाए तो पाक है अगर कपड़े या बदन पर लग जाए तो कपड़ा या बदन पाक रहेगा।

(११) अगर कोई चीज़ नापाक हो जाए और याद न रहे कि नजासत किस जगह लगी है तो एह़तियातन पूरी चीज़ धो लेनी चाहिए।

(१२) कुत्ते का लुआ़ब अगर किसी धातु या मिट्टी के बर्तन में लग जाए तो तीन बार अच्छी तरह धो लेने से पाक हो जाएगा। बेहतर यह है कि सात बार इस तरह धोया जाए कि एक बार मिट्टी से मांझ कर धोया जाए और छः बार सिर्फ़ पानी से धोया जाए।

नजासते हुक्मी

नजासते हुक्मी, नापाकी की उस ह़ालत को कहते हैं, जिस का नापाक होना, हमें नज़र नहीं आता बल्कि शरीअ़त के ज़रिये मालूम होता है। जैसे बेवुज़ू होना, गुस्ल की ह़ाजत होना नजासते हुक्मी को 'ह़दस' कहते हैं।

नजासते हुक्मी की क़िस्में

नजासते हुक्मी या ह़दस की दो क़िस्में हैं। ह़दसे अस़्ग़र और ह़दसे अकबर।

ह़दसे अस़्ग़र–

यानी नापाकी की वह ह़ालत जो, पेशाब या पाख़ाना करने, रियाह़ ख़ारिज होने, जिस्म के किसी ह़िस्से से ख़ून या पीप बहने, मुँह भर के क़ै होने, इस्तिह़ाज़ा का ख़ून आने, टेक लगा कर सोने आदि से पैदा होती है, ह़दसे अस़्ग़र कहलाती है। इससे पाक होने का तरीक़ा वुज़ू है और जहाँ पानी न मिल सके या पानी का इस्तेमाल शदीद नुक़सान दे तो तयम्मुम से भी पाकी ह़ासिल हो जाती है, ह़दसे अस़्ग़र की ह़ालत में न आदमी नमाज़ पढ़ सकता है, और न कुर्आन को हाथ लगाना दुरुस्त है। अलबत्ता जिन लोगों के हाथों में हर वक़्त कुर्आन रहता हो और बार बार वुज़ू करना दुश्वार हो या कुर्आन पाक पढ़ने वाले बच्चे हों तो उन के लिए गुंजाईश है, जबकि ह़दसे अस़्ग़र में ज़बानी कुर्आन पढ़ना दुरुस्त है।

ह़दसे अकबर–

यानी नापाकी की वह ह़ालत, जो औ़रत से सोहबत (सम्भोग) करने, या किसी और तरीक़े से शहवत के साथ मनी निकलने, या सोने में एह़तिलाम हो जाने या ह़ैज़ व निफ़ास का ख़ून आने की वजह से पैदा होती है। ह़दसे अकबर से पाक होने का तरीक़ा गुस्ल है।

गुस्ल करना मुम्किन न हो तो तयम्मुम से भी पाकी ह़ासिल हो जाती है, ह़दसे अकबर में आदमी न नमाज़ पढ़ सकता है, न कुर्आन छू सकता है, और न ज़बानी तिलावत कर सकता है, जैसे गुस्ल ख़ाने का रास्ता मस्जिद में से होकर

गुज़रता है, या पानी और पानी का बर्तन लेने के लिए मस्जिद में जाना मना हैं तो ऐसी शदीद जरूरत में दाख़िल होने की इजाज़त है।

गुस्ल का बयान

प्रश्न- गुस्ल (स्नान) में कौन-कौन सी चीज़ें फ़र्ज़ हैं?

उत्तर- गुस्ल में तीन चीज़ें फ़र्ज़ हैं।

१. कुल्ली करना।
२. नाक में नर्म हड्डी तक पानी पहुँचाना।
३. पूरे शरीर पर पानी बहाना कि एक बाल के बराबर भी कहीं सूखा न रहे।

गुस्ल (स्नान) में कितनी सुन्नतें हैं?

गुस्ल में पाँच सुन्नतें हैं।

१. इरादा करना।
२. दोनों हाथ गट्टों तक धोना।
३. नापाकी की जगह धोना।
४. वुज़ू करना।
५. तीन बार पूरे जिस्म पर पानी बहाना।

गुस्ल किन किन ह़ालतों में फ़र्ज़ होता है?

गुस्ल करना निम्न ह़ालतों में फ़र्ज़ होता है।

१. सोह़बत (सम्भोग) करने से।
२. ख़्वाब में (स्वप्न दोष) नापाक होने से।
३. औ़रत को हैज़ व निफ़ास आने से।

वुज़ू का बयान

प्रश्न- वुज़ू में किन चीज़ों का करना फ़र्ज़ है?

उत्तर- वुज़ू में चार चीज़ों का करना फ़र्ज़ है।

१. पूरे चेहरे का धोना

२. दोनों हाथों को कोहनियों समेत धोना।
३. चौथाई सर का मसह़ करना।
४. टख़ने समेत दोनों पैरों को धोना।

वुज़ू में कौन कौन सी बातें ज़रूरी हैं?

वुज़ू में अंगूठी या छल्ला के नीचे पानी पहुँचाना या आटा आदि लगा हो तो उसे धोना ज़रूरी है।

वुज़ू में किन-किन चीज़ों का करना सुन्नत है?

वुज़ू में इन चीज़ों का करना सुन्नत है-

१. वुज़ू की नियत करना।
२. बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम पढ़ना।
३. दोनों हाथों को गट्टों तक तीन बार धोना।
४. मिस्वाक़ करना और अगर मिस्वाक न हो तो उँगली से दाँतों को मलना।
५. तीन बार कुल्ली करना।
६. तीन बार नाक में पानी डालना।
७. तीन बार नाक साफ़ करना।
८. हर धोने वाले अंग को तीन तीन बार धोना।
९. दाढ़ी का ख़िलाल करना।
१०. पूरे सर का मसह़ करना।
११. सर के साथ कानों का मसह़ करना।
१२. धोने में इतना वक़्त न लगाना कि पहले धोया हुआ अंग सूख जाए।
१३. तर्तीब से वुज़ू करना।
१४. दाहिने ओर से पहले धोना।

वुज़ू में किन-किन बातों का ख़्याल रखना मुस्तह़ब है?

वुज़ू में इन बातों का ख़्याल रखना मुस्तह़ब है-

१. गरदन पर मसह़ करना।
२. नमाज़ के वक़्त से पहले वुज़ू करना।
३. कअ़बे की ओर मुँह करके बैठना।
४. पाक व ऊँची जगह बैठना।
५. दूसरे की मदद लिए बिना खुद से वुज़ू करना।
६. बचा हुआ पानी खड़े होकर पीना।
७. रगड़ कर धोना।
८. दाहिने हाथ से पानी लेकर कुल्ली करना और नाक में पानी डालना।
९. वुज़ू के बाद कअ़बे की ओर मुँह करके कलिमः पढ़ना।

वुज़ू में कौन-कौन सी चीज़ें करना मकरूह हैं?

वुज़ू में यह बातें मकरूह हैं-

१. वुज़ू करते वक़्त दुनिया की बातें करना।
२. हर अंग को तीन बार से ज़्यादा धोना
३. नापाक जगह पर बैठ कर वुज़ू करना।
४. दाएँ हाथ से नाक साफ़ करना।
५. सुन्नत के ख़िलाफ़ वुज़ू करना।
६. ज़ोर-ज़ोर पानी की छींटे मारना।

किन-किन ह़ालतों में वुज़ू टूट जाता है?

निम्नलिखित ह़ालतों में वुज़ू टूट जाता है।

१. पाख़ाना या पेशाब के रास्ते से किसी चीज़ के निकलने से।
२. खून या पीप के अपनी जगह से निकल कर बह जाने से।
३. मुँह भर कर मतली करने से (अथवा उल्टी करने से)
४. टेक लगा कर सो जाने से।
५. चित लेट कर सो जाने से।
६. बेहोश या पागल हो जाने से।
७. रूकूअ़ सज्दे वाली नमाज़ों में आवाज़ से हंस देने से।

८. मुँह से खून के गिरने से जबकि थूक के मुक़ाबले में खून ज़्यादा हो।

वुज़ू का मुकम्मल तरीक़ा

सबसे पहले वुज़ू करने का जब इरादा करें तो साफ़ बरतन में पाक पानी लेकर पाक व साफ़ ऊँची जगह पर बैठ जाएँ, और कअ़बे की ओर मुँह करके बैठें तो बेहतर है। अब **बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम** पढ़ कर तीन बार गट्टों सहित दोनों हाथ धोएँ, फिर तीन बार कुल्ली और मिस्वाक करें, फिर तीन बार नाक में नर्म ह़ड्डी तक पानी पहुँचाएँ और नाक साफ़ करें। फिर तीन बार मुँह धोएँ इस तरह़ कि पेशानी ठुड्डी तथा एक कान से दूसरे कान की लौ तक (अर्थात पूरे चेहरे को धोएँ), इसी तरह़ कुहनियों सहित दोनों हाथ धोएँ पहले दाहिना हाथ तीन बार धोएँ और फिर बायाँ हाथ तीन बार धोएँ इस के बाद दोनों हाथों में पानी लेकर फ़ेंक दें, और उसी की तरी से सिर का मसह़ करें तथा कान व गर्दन का भी केवल एक बार ही मसह़ करें। फिर आख़िर में तीन बार दोनों पैरों को टख़नों सहित धोयें। जिसके चित्र विस्तारपूर्वक दिये जा रहे हैं।

तर्तीब (क्रमानुसार) से वुज़ू इस तरह़ करें-

१- सबसे पहले हाथ गट्टे तक धोएँ।

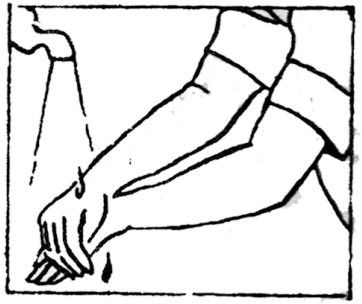

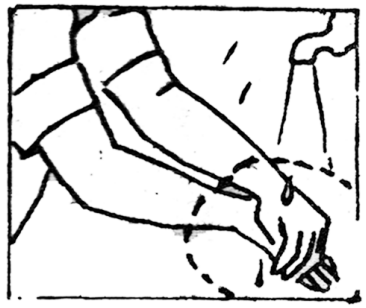

२- फ़िर कुल्ली करें। ३- फिर नर्म हड्डी तक नाक में पानी पहुँचाए।

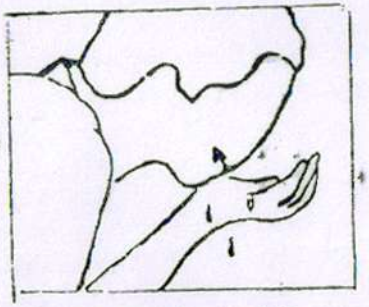

४- फिर पूरा चेहरा धोयें।

५- फिर हाथ कोहनियों तक

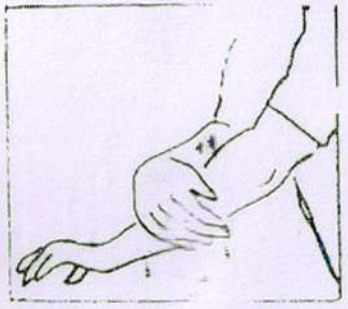

सहित धोयें

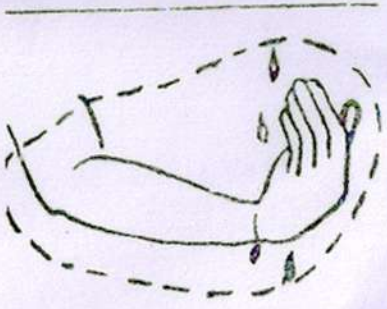

६- फिर [illegible] का मसह करें।

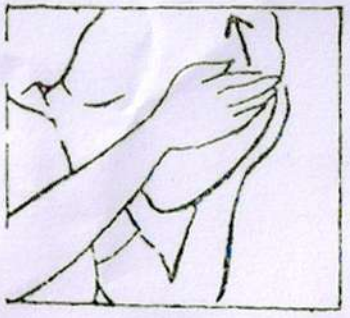

७- फिर कान का मसह करें।

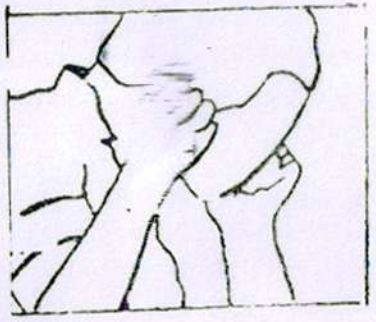

८- फिर गर्दन का मसह करें

९- फिर दाहिना, फिर बायाँ पैर टखने सहित धोयें।

तयम्मुम का बयान

तयम्मुम कहते हैं इरादा करने को लेकिन मिट्टी पत्थर या उस जैसे पदार्थ से बनी हुई चीज़ों पर दोनों हाथों को मारकर अपने दोनों हाथों व चेहरे पर मलकर, उससे पाकी ह़ासिल करने को तयम्मुम कहते हैं।

तयम्मुम किन-किन ह़ालतों में कर सकते हैं?

तयम्मुम उस वक़्त करेंगे जबकि नमाज़ का वक़्त ख़त्म हो रहा हो और पानी एक मील के आस-पास कहीं न मिल सकता हो या पानी तो हो लेकिन उस पर कुदरत न हो, और वुज़ू या गुस्ल करना फ़र्ज़ हो, या कोई ऐसी बीमारी हो जिसमें

पानी के इस्तिमाल से जान जाने का ख़तरा हो या दुश्मन से नुक़सान पहुँचने का ख़तरा हो, इन सभी हालतों में तयम्मुम कर सकते हैं।

तयम्मुम करने का क्या तरीक़ा है?

तयम्मुम करने का तरीक़ा इस तरह है।

१- नियत करना फ़र्ज़ है, कि मैं पाकी हासिल करने के लिए तयम्मुम करने जा रहा हूँ।

२- दोनों हाथों को पाक मिट्टी पर मार कर हाथ झाड़ दें, फिर मुँह पर मलें।

३- दोबारा मिट्टी पर हाथ मार कर झाड़ दें और कोहनियों सहित दोनों हाथों पर मलें और उंगलियों में भी ख़िलाल करें।

नोट- अगर ग़ुस्ल करना फ़र्ज़ हों तब भी इसी तरह तयम्मुम करें।

तयम्मुम किन-किन चीज़ों से टूट जाता है?

जिन चीज़ों से वुज़ू टूट जाता है उन्हीं चीज़ों से तयम्मुम भी टूट जाता है। अन्तर केवल इतना है कि पानी के मिलने पर भी तयम्मुम ख़त्म हो जाता है। ऐसे ही अगर बीमारी की वजह से तयम्मुम किया था और बीमारी ख़त्म हो जाए तब भी तयम्मुम टूट जाता है।

अज़ान का बयान

अज़ान इस बात का एलान है कि अल्लाह सब से बड़ा है, इसलिए मुअज़्ज़िन सभी इन्सानों को सम्बोधित करते हुए कहता है कि आओ नमाज़ की ओर। अब नमाज़ का समय हो गया है।

अज़ान देने वाला वुज़ू के बाद कअबे की ओर मुँह करके कान को दोनों कलिमा वाली उंगली से बन्द करके इस तरह कहे।

१- अल्लाहु अकबर-अल्लाहु अकबर — اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ
अल्लाहु अकबर-अल्लाहु अकबर — اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

अर्थ- अल्लाह सबसे बड़ा है। अल्लाह सब से बड़ा है।

२- अशहदु अल्लाइलाह इल्लल्लाह — اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ
अशहदु अल्लाइलाह इल्लल्लाह — اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ

अर्थ- मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं।

३- अशहदु अन्नमुहम्मदर्रसूलुल्लाह — اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ
अशहदु अन्नमुहम्मदर्रसूलुल्लाह — اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ

अर्थ- मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद (सल्ल०) अल्लाह के रसूल हैं।

४- हय्या अलस्सलाह — حَيَّ عَلَى الصَّلٰوةِ
हय्या अलस्सलाह — حَيَّ عَلَى الصَّلٰوةِ

अर्थ- आओ नमाज़ की ओर, आओ नमाज़ की ओर

५- हय्या अलल्फ़लाह — حَيَّ عَلَى الْفَلَاحِ
हय्या अलल्फ़लाह — حَيَّ عَلَى الْفَلَاحِ

अर्थ- आओ भलाई की ओर, आओ भलाई की ओर

अगर फ़ज्र की अज़ान हो तो बीच में हैय्या अलल् फ़लाह के बाद इन शब्दों को भी कहेंगे बाक़ी चारों नमाज़ों की अज़ान में इन शब्दों को नहीं कहेंगे।

६- अस्सलातु ख़ैरुम्-मिनन्नौम — اَلصَّلٰوةُ خَيْرٌ مِّنَ النَّوْمِ
अस्सलातु ख़ैरुम्-मिनन्नौम — اَلصَّلٰوةُ خَيْرٌ مِّنَ النَّوْمِ

अर्थ- नमाज़ पढ़ना सोने से बेहतर है। नमाज़ पढ़ना सोने से बेहतर है।

७- अल्लाहु अकबर — اَللّٰهُ اَكْبَرُ
अल्लाहु अकबर — اَللّٰهُ اَكْبَرُ

अर्थ- अल्लाह सबसे बड़ा है। अल्लाह सबसे बड़ा है।

८- लाइलाह इल्लल्लाहु — لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ

अर्थ- नहीं है कोई इबादत के लायक़ सिवाय अल्लाह के।

अज़ान के बाद यह दुआ पढ़ें:-

अल्ला-हुम्-म-रब्ब हाज़िहिद् दअ़वतित् - ताम्मति वस्सालातिल् क़ाइमति, आति, मुहम्मद-निल्-वसी-ल-त्, वल् फ़ज़ी-ल-त्, वद्दरजल् रफ़ीअ़ह वबअ़सहु मक़ाममम् महमूद-निल-लज़ी, वअ़द्तहू, वर्जुक़ना शफ़ाअ़त-हू, यौमल् क़िया मति, इन्न-क,ला, तुख़्लिफ़ुल् मीआ़द,

اَللّٰهُمَّ رَبَّ هٰذِهِ الدَّعْوَةِ التَّامَّةِ وَالصَّلٰوةِ الْقَائِمَةِ اٰتِ مُحَمَّدَنِ الْوَسِيْلَةَ وَالْفَضِيْلَةَ وَالدَّرَجَةَ الرَّفِيْعَةَ وَابْعَثْهُ مَقَامًا مَّحْمُوْدَا الَّذِىْ وَعَدْتَّهٗ وَارْزُقْنَا شَفَاعَتَهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيْعَادَ ۝

अर्थ- "ऐ अल्लाह! ऐ परवरदिगार, इस मुकम्मल पुकार को जो पूरी तरह से है और नमाज़ क़ायम की हुई के हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को वसीला और फ़ज़ीलत (और बुलन्द दर्जा अ़ता कर) और उनको खड़ा कर मक़ामे महमूद में जिसका तूने उनसे वादा किया है, और हमको क़ियामत के दिन उनकी शफ़ाअ़त नसीब करा। तू बेशक वादा ख़िलाफ़ी नहीं करता।"

इक़ामत

फ़र्ज़ नमाज़ की जमाअ़त खड़ी होने से पहले अज़ान के शब्द फिर दोबारा कहे जाते हैं इसी को इक़ामत कहते हैं। इक़ामत और अज़ान में अन्तर यह है कि इसमें जल्दी-जल्दी बोलते हैं और **"हय्या अ़लल्फ़लाह"** के बाद दो बार इन शब्दों को कहा जाता है।

क़द्क़ा मतिस्सलाः قَدْ قَامَتِ الصَّلٰوةُ

क़द्क़ा मतिस्सलाः قَدْ قَامَتِ الصَّلٰوةُ

अ़ज़ान और इक़ामत का जवाब देना भी मुस्तहब है, अज़ान और इक़ामत में जो लफ़्ज़ कहे जाते हैं वही सुनने वाला भी दोहराये।

लेकिन **"हय्याअ़लस्सलाह"** और **"हय्याअ़लल्फ़लाह"** के जवाब में **"लाहौलावलाकुव्वता इल्लाबिल्लाह"** कहें और **"क़द्क़ामतिस्सलाह"** के जवाब

में **"अ़क़ामहा व अदामहा"** कहे और फ़ज्र की नमाज़ में "अस्सलातु ख़ैरूम मिनन्नौम" के जवाब में **"क़द सद्दक़्ता व बररता"** कहे।

पाँचों नमाज़ों का बयान

प्रश्न- सुबह़ की नमाज़ (फ़ज्र) में कितनी रकअ़तें होती हैं?

उत्तर- सुबह़ की नमाज़ (फ़ज्र) में चार रकअ़तें होती हैं।

१- सबसे पहले दो रकअ़त सुन्नत।

२- फिर दो रकअ़त फ़र्ज़।

प्रश्न- दोपहर की नमाज़ (ज़ुह़) में कितनी रकअ़तें होती हैं?

उत्तर- दोपहर ज़ुह़ की नमाज़ में बारह रकअ़ते होती हैं।

१- सबसे पहले चार रकअ़त सुन्नत पढ़ें।

२- फिर चार रकअ़त फ़र्ज़ जमाअ़त के साथ।

३- फिर दो रकअ़त सुन्नत

४- फिर दो रकअ़त नफ़्ल।

प्रश्न- अ़स्र की नमाज़ में कितनी रकअ़तें होती हैं?

उत्तर- अ़स्र की नमाज़ में आठ रकअ़तें होती हैं।

१- पहले चार रकअ़त सुन्नत पढ़ लें तो बेहतर है, ज़रूरी नहीं।

२- फिर चार रकअ़त फ़र्ज़ जमाअ़त के साथ पढ़ें।

प्रश्न- मग़्रिब की नमाज़ में कुल कितनी रकअ़तें होती हैं?

उत्तर- मग़्रिब की नमाज़ में कुल सात रकअ़तें होती हैं।

१- पहले तीन रकअ़त फ़र्ज़ जमाअ़त के साथ पढ़ें।

२- फिर दो रकअ़त सुन्नत।

३- फिर दो रकअ़त नफ़्ल।

प्रश्न- अ़िशा की नमाज़ में कुल कितनी रकअ़तें होती हैं?

उत्तर- अ़िशा की नमाज़ में सत्रह रकअ़तें होती हैं।

१- पहले चार रकअ़त सुन्नत पढ़ लें तो अच्छा है, ज़रूरी नहीं।

२- फिर चार रकअ़त फ़र्ज़ नमाज़ जमाअ़त के साथ पढ़ें।
३- फिर दो रकअ़त सुन्नत।
४- फिर हो सके तो दो रकअ़त नफ़्ल पढ़ें।
५- फिर तीन रकअ़त वित्र
६- फिर दो रकअ़त नफ़्ल भी पढ़ लें तो अच्छा है।

नमाज़ के फ़रायज़ का बयान

प्रश्न- नमाज़ पढ़ने के लिए कौन-कौन सी चीज़ें फ़र्ज़ हैं?

उत्तर- नमाज़ शुरु करने से पहले यह चीज़ें फ़र्ज़ हैं।

१- जिस्म पाक हो।
२- कपड़ा पाक हो।
३- घुटने से नाभि (नाफ़) तक ढ़का हो।
४- नमाज़ का वक़्त मालूम हो कि कौन सी नमाज़ पढ़ रहा है।
५- कअ़बे की ओर मुँह हो।
६- जिस जगह पर नमाज़ पढ़ने जा रहा है उस जगह का पाक हो।
७- नियत करना (दिल से इरादा करे, जो नमाज़ पढ़नी हो)।

नमाज़ शुरु करने के बाद कौन-कौन सी चीज़ें फ़र्ज़ हैं?

नमाज़ शुरु करने के बाद निम्न चीज़ें फ़र्ज़ हैं-

१- तकबीरे तहरीमा अर्थात "अल्लाहु अकबर" से शुरु करना।
२- फ़र्ज़ और वाजिब नमाज़ों को खड़े होकर पढ़ना। नफ़्ल नमाज़ों में खड़ा होना वाजिब नहीं है।
३- क़िरअ़त अर्थात कुर्आन मजीद फ़र्ज़ नमाज़ों की दो रकअ़तों में और बाक़ी नमाज़ों की हर रकअ़तों में कम से कम एक आयत पढ़ना।
४- रुकूअ़ करना।
५- दोनों सज्दे करना।
६- नमाज़ के आख़िर में 'अत्तह़ीयातु' जितनी देर में पढ़ी जा सकती है।

उतनी देर तक बैठना और अपने इरादे से नमाज़ को ख़त्म करना।

नमाज़ के वाजिबात का बयान

नमाज़ में निम्नलिखित बातें वाजिब हैं-

१- सूरः फ़ातिह़ा का पढ़ना।
२- फ़र्ज़ नमाज़ों की तीसरी और चौथी रकअ़त के अ़लावह तमाम नमाज़ों की हर रकअ़त में सूरः या तीन आयतों को पढ़ना।
३- फ़र्ज़ नमाज़ों की पहली दो रकअ़तों में और वाजिब, सुन्नत, नफ़्ल नमाज़ों की तमाम रकअ़तों में अ़ल्ह़म्दु शरीफ़ के बाद कोई सूरः या बड़ी एक आयत या छोटी तीन आयतें पढ़ना।
४- अ़ल्ह़म्दु शरीफ़ को सूरः से पहले पढ़ना।
५- रुकूअ़ सज्दों और रकअ़तों में तर्तीब क़ायम रखना।
६- क़ौमः अर्थात रुकूअ़ से उठकर सीधा खड़ा होना।
७- जल्सः अर्थात दोनों सज्दों के बीच में सीधे बैठ जाना।
८- रुकूअ़ सज्दः आदि को अच्छी तरह अदा करना।
९- तीन और चार रकअ़त वाली नमाज़ में दो रकअ़तों के बाद 'अत्तह़ीयातु' के पढ़ने के बराबर बैठना।
१०- 'अत्तह़ीयातु' पढ़ना और 'अत्तह़ीयातु' ख़त्म करके तुरन्त खड़े हो जाना।
११- इमाम को नमाज़ फ़ज्र, मग़रिब, अ़िशा, जुमअ़ः अ़ीदैन, तरावीह और रमज़ान शरीफ़ की वित्रों को आवाज़ से पढ़ना और ज़ुह्र, अ़स्र आदि नमाज़ों में धीरे-धीरे पढ़ना।
१२- सलाम के शब्द के साथ नमाज़ से बाहर आना (नमाज़ को ख़त्म करना)
१३- दोनों अ़ीदों की नमाज़ में छः तकबीर ज़ायद कहना।
१४- 'नमाज़े वित्र' में 'क़ुनूत' के लिए तकबीर कहना और दुआ़-ए-क़ुनूत पढ़ना।

नमाज़ की सुन्नतें

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने नमाज़ में फ़र्ज़ और वाजिब के अ़लावह भी

बाज़ बातों का एहतिमाम फ़रमाया लेकिन उन की ऐसी ताकीद साबित नहीं जैसी ताकीद फ़र्ज़ और वाजिबात की साबित है, उन को नमाज़ की सुन्नतें कहते हैं। उन के छूटने से न तो नमाज़ टूटती है और न सज्दः सह्व लाज़िम आता है, लेकिन फिर भी हर नमाज़ी को नमाज़ में इन बातों का पूरा-पूरा एहतिमाम करना चाहिए क्योंकि ख़ुद ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने इन का एहतिमाम फ़रमाया है और नमाज़ ह़क़ीक़त में वही है जो ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) से ज़्यादा से ज़्यादा मुशाबह हो।

नमाज़ की सुन्नतों का बयान

(१) तकबीरे तह़रीमा कहने से पहले दोनों हाथो को उठाना, मर्दो को कानों की लौ तक और औ़रतों को दोनों शानो तक और उ़ज़्र की ह़ालत में मर्दो के लिए भी शानों तक उठाना सह़ी है।

अबूदाऊद की रिवायत है कि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने सर्दी के मौसम में चादर के अन्दर से सीने तक हाथ उठाए हैं।

(२) तकबीरे तह़रीमा कहते वक़्त दोनो हाथों की उंगलियों को अपने ह़ाल पर खुली रखना और दोनो हथेलियों और उंगलियों का रुख़ क़िब्ले की तरफ़ रखना।

(३) तकबीरे तह़रीमा कहने के फ़ौरन बाद मर्दों को नाफ़ के ऊपर और औ़रतों को सीने के ऊपर हाथ बांधने का सुन्नत तरीक़ा यह है कि दाएँ हाथ की हथेली बाएँ हाथ की हथेली की पुश्त पर रखें और दाएँ हाथ के अँगूठे और छोटी उंगली से बाएँ हाथ की कलाई को पकड़ लें और बीच की तीन उंगलियाँ बायें हाथ की कलाई पर बिछा कर रखें यही तरीक़ा मर्द और औ़रत दोनों के लिए है। अलबत्ता औ़रतों के लिए अँगूठे और छोटी उंगली से बाएँ हाथ की कलाई को पकड़ना सुन्नत नहीं है।

(४) तकबीरे तह़रीमा कहते वक़्त सर को न झुकाना।

(५) सना पढ़ना यानी **'सुब्ह़ानकल्लाहुम्मा'** पढ़ना।

(६) तअव्वुज़ पढ़ना (यानी **'अऊ़ज़ु बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम'** पढ़ना।)

(७) हर रकअ़त में सूरः फ़ातिह़ा से पहले **'बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम'** पढ़ना।

(८) फ़र्ज़ नमाज़ों की तीसरी और चौथी रकअ़त में सिर्फ़ सूरः फ़ातिह़ा पढ़ना।

(९) सना, तअ़व्वुज़, **'बिस्मिल्लाह'** और आमीन सब को आहिस्ता कहना।

(१०) क़िरात में मस्नून तरीक़े का एहतिमाम रखना, जिन नमाज़ों में जितना कुर्आन पढ़ना सुन्नत है उसी के अनुसार पढ़ना। रुकूअ़ और सज्दे में कम से कम तीन बार तस्बीह़ पढ़ना, यानी रुकूअ़ में **'सुब्ह़ाना रब्बियल अ़ज़ीम'** और सज्दे में **'सुब्ह़ाना रब्बियल आ़ला'** कहना।

(११) रुकूअ़ में सर और कमर को एक सीध में बराबर रखना और दोनो हाथो की उंगलियों से घुटनों को पकड़ लेना।

(१२) क़ौमे में इमाम का **'समीअ़ल्लाहु लिमन् ह़मिदह'** कहना और मुक़्तदी का **'रब्बनालकल्ह़म्द'** कहना और अकेले पढ़ने वाले को दोनो कहना।

(१३) सज्दे में जाते वक़्त पहले घुटने ज़मीन पर रखना, फिर दोनों हाथ, फिर नाक और फिर पेशानी को ज़मीन पर रखना।

(१४) जल्से और कअ़दे में बायाँ पांव बिछा कर उस पर बैठना और दाएँ पांव को इस तरह़ खड़ा रखना कि उस की उंगलियों के सिर क़िब्ले की तरफ़ रहें और दोनों हाथ ज़ानू पर रखना।

(१५) अत्तह़ीय्यातु में लाइलाह कहते वक़्त दाहिने हाथ की कलिमा वाली उंगली से इशारा करना।

(१६) कअ़दे आख़ीरा में **'अत्तह़ीय्यातु'** के बाद दुरुद शरीफ़ पढ़ना।

(१७) दुरुद शरीफ़ के बाद कोई मस्नून दुआ़ पढ़ना।

(१८) पहले दाएँ जानिब सलाम फेरना, फिर बाएँ जानिब सलाम फेरना।

नमाज़ की मुस्तह़ब चीज़ों का बयान

नमाज़ में यह चीज़ें मुस्तह़ब हैं-

१- 'अल्लाहु अकबर' कहते वक़्त आस्तीनों से दोनों हथेलियाँ निकाल लेना।

२- रुकूअ़ सज्दे में अकेले पढ़ने वाले को तीन बार से ज़्यादा तस्बीह़ कहना।

३- खड़े होने के वक़्त सज्दे की जगह पर, और रुकूअ़ में पैरों के, बैठने की

हालत में गोद पर, और सलाम फेरने के वक़्त अपने कंधों पर नज़र रखना।

४- खाँसी को अपनी ताक़त भर न आने देना।

५- जम्हाई में मुँह को बन्द रखना।

पाँचों नमाज़ की रकअ़तों का नक़्शा

	सुन्नते मुअ़क्किदह फ़र्ज़ से पहले	सुन्नते ग़ैर मुअ़क्किदह फ़र्ज़ से पहले	फ़र्ज़	सुन्नते मुअ़क्किदह फ़र्ज़ के बाद	वाजिब	नफ़्ल सुन्नत के बाद	कुल रकअ़तें
फ़ज्र	2		2				4
ज़ुह्र	4		4	2		2	12
अ़स्र		4	4				8
मग़्रिब			3	2		2	7
अ़िशा		4	4	2+2 नफ़्ल	3	2	17
जुमुअ़:	4		2	4+2		2	14

सुन्नत के मुताबिक़ नमाज़ पढ़ने का तरीक़ा

नमाज़ के लिए पाक होकर वुज़ू करके, पाक जगह पर कअ़बः की ओर रुख़ करके, सीधे इस तरह खड़े हों कि न गर्दन झुकाएँ, न ठोढ़ी सीने से लगाएँ न सीने को झुकाएँ, और अगर खुजली हो तो सिर्फ़ एक हाथ से ही खुजाएँ और बदन का ज़ोर एक पैर पर देकर न झुकें, जम्हाई आये तो उसके रोकने की कोशिश करें और इधर-उधर नज़र भी न करें, और दोनों पैरों की उंगलियों का रुख़ कअ़बे

की ओर रखें, दोनों पैरों के बीच कम से कम चार उंगली का फ़ासला रखें, अगर जमाअ़त से पढ़ रहे हों तो दाएँ बाएँ वालों के बाज़ुओं के साथ मिला लें, और पैजामे को टख़ने से ऊपर हमेशा रखें, और हाथों की आस्तीन नीचे तक हो।

दिल में नियत कर लें कि फ़लाँ नमाज़ पढ़ रहा हूँ, ज़बान से नियत करना ज़रुरी नहीं, लेकिन कहना हो तो इस तरह कहें:-

नियत करता हूँ मैं दो रकअ़त फ़र्ज़ नमाज़, फ़ज्र अल्लाह के लिए मुँह मेरा कअ़बे की ओर पीछे इस इमाम के **"अल्लाहु अकबर"**

नोट- अगर अकेले पढ़ें तो नियत में पीछे इस इमाम के न कहें-

अब दोनों हाथों को कान के पास तक उठाएँ। इस तरह कि हाथ खुले हों और हथेलियां कअ़बे की ओर हों, तथा उंगलियां सीधी हों, फिर दोनों हाथ नाफ़ (नाभि) के नीचे बांध लें इस तरह कि बायां हाथ नीचे हो और छोटी उंगली से बायां हाथ नक्शा के मुताबिक़ पकड़ कर निगाहें सज्दे की जगह रखें, और अगर जमाअ़त से पढ़ें तो, "इमाम आगे खड़ा हो और दूसरे लोग उसके पीछे लाइन बना कर खड़े हों।"

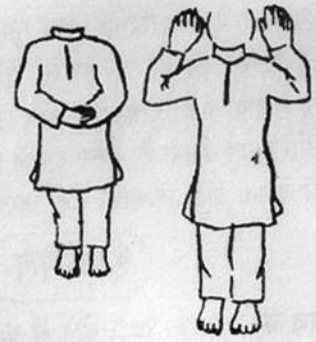

क़ियाम की सुन्नतें

(१) तकबीरे तह़रीमा के वक़्त सीधा खड़ा होना।

(२) दोनों पैरों के बीच कम से कम चार अंगुल का फ़ासला रखना और पैरों की उंगलियाँ कअ़बः की ओर रखना।

(३) मुक़्तदी की तकबीरे तह़रीमा इमाम के साथ होना।

(४) तकबीरे तह़रीमा के वक़्त दोनों हाथ कानों तक उठाना।

(५) हथेलियों को कअ़बः की ओर रखना।

(६) उंगलियों को अपनी हालत में रखना।
(७) दाहिने हाथ की हथेली बायें हाथ की हथेली पर रखना।
(८) छिंगुलियों और अंगूठे से गट्टे को पकड़ना।
(९) दर्मियानी तीन उंगलियों को कलाई पर रखना।
(१०) नाफ़ के नीचे हाथ बाँधना।
(११) सना पढ़ना। जैसे-

सुब्हानकल्लाहुम्मू व बि हम्दिका	سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ
वतबारकस्मुका वतआ़ला	وَتَبَارَكَ اسْمُكَ وَتَعَالٰى
जद्दुका व ला इलाह ग़ैरुक,	جَدُّكَ وَلَآ اِلٰهَ غَيْرُكَ ۞

अर्थ- "ऐ अल्लाह! मैं तेरी पाकी बयान करता हूँ, और तेरी तअ़रीफ़ करता हूँ और तेरा नाम बरकत वाला है, और तू आ़ला है, और नहीं है कोई मअ़बूद सिवाय तेरे।"

नोट- अगर इमाम के पीछे हों तो केवल सना "सुब्हान कल्ला" पढ़ कर ख़ामोश खड़े रहें और क़िरअ़त सुनें। हाँ, अगर इमाम के पीछे न हों तो सबसे पहले यह पढ़ें-

अऊ़ज़ु बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम	اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ

फिर यह पढ़ें।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम	بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

फिर यह पढ़ें।

सूरः फ़ातिहा

अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल् आ़लमीन।	اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۞
अर्रहमानिर्रहीम।	الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۞
मालिकि यौमिद्दीन	مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۞
अय्याक-नअ़-बुदु, व अय्याक, नस्तअ़ीन।	اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ۞

अिह् दिनस्सिरात़ल मुस्तक़ीम	اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۞
सिरातल्लज़ीन अन्-अ़म्-त-अ़लैहिम,	صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۙ
ग़ैरिल मग़्ज़ूबि अ़लैहिम	غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
वलज़्-ज़ाल्लीन	وَلَا الضَّآلِّيْنَ ۞

इसके बाद कोई एक सूरः पढ़ें- जैसे-

सूरः काफ़िरून

क़ुल या अय्युहल्काफ़िरून,	قُلْ يٰٓاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ ۞
ला अ़बुदु मा तअ़बुदून	لَآ اَعْبُدُ مَا تَعْبُدُوْنَ ۞
वला अन्तुम आ़बिदून, मा अ़बुद	وَلَآ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَآ اَعْبُدُ ۞
वला अना आ़बिदुम् मा अ़बद्तुम,	وَلَآ اَنَا عَابِدٌ مَّا عَبَدْتُّمْ ۞
वला अन्तुम, आ़ बिदूना, मा अ़बुदु,	وَلَآ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَآ اَعْبُدُ ۞
लकुम दीनुकुम वलि-यदीन	لَكُمْ دِيْنُكُمْ وَلِيَ دِيْنِ ۞

क़िरत की सात सुन्नतें

(१) 'अऊ़ज़ुबिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम' पढ़ना।
(२) 'बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम' पढ़ना।
(३) चुपके से आमीन कहना।
(४) फज्र और ज़ुह्र में तिवाले मुफ़स्सल अर्थात **सूरः हुजरात** से **बुरूज** तक अ़स्र व अ़िशा में औसाते मुफ़स्सल अर्थात **सूरः बुरूज** से **सूरः 'लमयकुन'** तक और मग़्रिब में किसारे मुफ़स्सल अर्थात **'सूरः इज़ाज़ुलुज़िलतिल अ़र्ज़,** से **'सूरः नास'** तक की सूरतें पढ़ना।
(५) फ़ज्र की पहली रकअ़त को तवील (लम्बी) करना।
(६) न ज़्यादा जल्दी पढ़ना और न ज़्यादा ठहर कर।
(७) फ़र्ज़ की तीसरी और चौथी रकअ़त में सिर्फ़ सूरः फ़ातिह़ा का पढ़ना।

फिर रुकूअ़ इस तरह करें कि-

(१) अपने ऊपर के धड़ को इतना झुकाएँ कि गर्दन और कमर लगभग बराबर रहें, न ज़्यादा झुकाएँ न कम रखें (२) रुकूअ़ में न इतना झुकें कि ठोड़ी सीने से मिल जाएँ और न इतना ऊँचा हो कि गर्दन कमर से ऊपर हो जाए। (३) रुकूअ़ में पैर टेढ़े न हों और दोनों हाथ घुटनों पर इस तरह रखें कि दोनों हाथों की उंगलियाँ खुली हों अर्थात हर उंगली के बीचे में फ़ासला हो। इस तरह दाएँ-बाएँ घुटने को पकड़ लें। (४) रुकूअ़ में कलाईयाँ और बाज़ू सीधे तने रहें, नज़र पैर पर हो (५) दोनों पैर पर ज़ोर बराबर का हो और दोनों टखने एक दूसरे के सामने हों। (६) रुकूअ़ से सीधे खड़े हो जाएँ उस वक़्त नज़र सज्दे की जगह हो और इत्मिनान से खड़े होने के बाद ही दूसरा सज्दः करें।

{इस सूरः को या कोई भी सूरः पढ़ने के बाद 'अल्लाहु अकबर' कहते हुए रुकूअ़ करें} (देखे तस्वीर में)

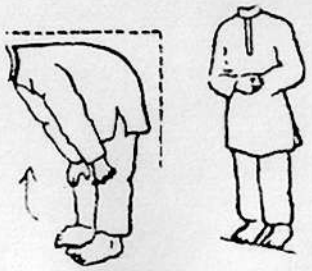

और यह दुआ पढ़ें-

सुब-हा-न रब्बियल अ़ज़ीम سُبْحَانَ رَبِّيَ الْعَظِيمِ

अर्थ- पाक है मेरा रब, जो बड़ी अ़ज़मत वाला है।

रुकूअ़ की सुन्नतें

(१) रुकूअ़ की तकबीर कहना।
(२) रुकूअ़ में दोनों हाथों से घुटने को पकड़ना।
(३) घुटनों को पकड़ने में उंगलियों को कुशादह रखना।
(४) पिण्डुलियों को सीधा रखना।

(५) पीठ को बिछा देना।
(६) सर और पैर को बराबर रखना।
(७) रुकूअ़ में कम से कम तीन बार "सुब्ह़ान रब्बियल अ़ज़ीम" कहना।
(८) रुकूअ़ से उठने में इमाम को "सामिअ़ल्लाहु ह़लिमन ह़मिदह" और मुक़्तदी को "रब्बनालकल्ह़म्दु" और अकेले पढ़ने वाले को दोनों शब्द कहना।

रुकूअ़ के वक़्त घुटनों को इस तरह पकड़ें कि उंगलियाँ खुली हों, पीठ सीधी हो और हाथ को पसुलियों से अलग रखें और तीन या पाँच या सात बार पढ़ कर यह कहते हुए खड़े हो जाएँ-

समिअ़ल्लाहुलिमन ह़मिदह سَمِعَ اللهُ لِمَنْ حَمِدَهُ

अर्थ- अल्लाह ने उस बन्दे की (बात) सुन ली जिसने उसकी तारीफ़ की।

फिर यह पढ़ें-

रब्बना लकल्ह़म्द رَبَّنَا لَكَ الْحَمْدُ

अर्थ- ऐ परवरदिगार! तेरे लिए सब तारीफ़ें हैं।

फिर 'अल्लाहु अकबर' कहते हुए सज्दे में जाएँ। सबसे पहले दोनों घुटनें ज़मीन पर रखें , फिर दोनों हाथ, और दोनों हाथों के बीच में पहले नाक, फिर पेशानी रखें, इस तरह कि अगूँठें कान के सामने रहें, और हाथों की उँगलियाँ मिली रहें ताकि सबके सिरे कअ़बे की तरफ़ रहें और कुहनियाँ, तथा दोनों पैर इस तरह हों कि एड़ियाँ ऊपर हों और तमाम उंगलियाँ अच्छी तरह मुड़कर कअ़बे की तरफ़ हों (अगर किसी को मजबूरी हो तो जैसे बन पड़े, कर ले) और सज्दे में पैर ज़मीन से न उठाएँ और उठते वक़्त ज़मीन का सहारा न लेना बेहतर है, और यह दुआ सज्दे में तीन बार या पाँच बार या सात बार पढ़ें।

सुब्ह़ाना रब्बियल आ़ला سُبْحَانَ رَبِّيَ الْأَعْلَى

अर्थ- पाक है मेरा रब, जो बहुत ऊँची शान वाला है।

सज्दे की सुन्नतें

(१) सज्दः की तकबीर कहना।

(२) सज्दः में पहले घुटनों को रखना।
(३) फिर दोनों हाथों को रखना।
(४) फिर नाक रखना।
(५) फिर पेशानी (माथा) रखना।
(६) दोनों हाथों के दर्मियान में सज्दः करना।
(७) सज्दः में पीठ को रानों से अलग रखना।
(८) पहलुओं को बाज़ू से अलग रखना।
(९) कुहनियों को ज़मीन से अलग रखना।
(१०) सज्दः में कम से कम तीन बार सुब्हानरब्बियल आ़ला पढ़ना।
(११) सज्दः से उठने की तकबीर कहना।
(१२) सज्दः से उठने के वक़्त पहले पेशानी फिर नाक, फिर हाथ उठाकर घुटनों पर रखकर और दोनों सज्दों के दर्मियान इत्मिनान से बैठना।

अर्थात दो ज़ानू सीधे बायाँ पैर बिछाकर बैठें और दायाँ पैर खड़ा करें कि उँगलियाँ कअ़बः की ओर हों और उँगलियों के आख़िरी सिरे घुटने के आख़िर में रहें।

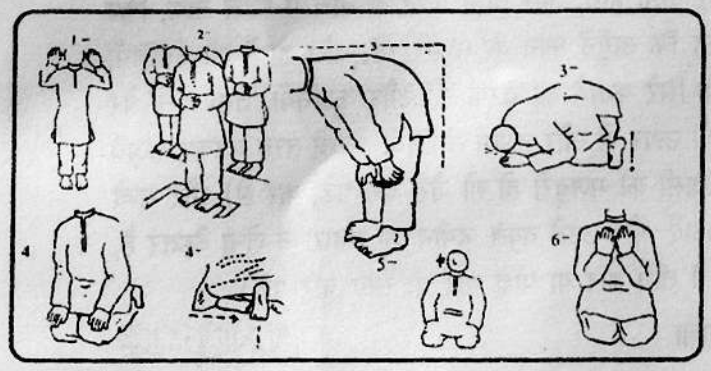

फिर दुबारा 'अल्लाहु अकबर' कहते हुए उसी तरह सज्दः करके सीधा खड़ा हो जाए, अब दोबारा खड़े होते ही उसी तरह हाथ बांध लें और 'बिस्मिल्लाह'... और एक बार सूर-ए-फ़ातिह़ा अर्थात 'अल्ह़म्दु'....पूरी पढ़ने के बाद कोई

भी एक सूरः पढ़ लें जैसेः-

सूरतुल्अिख़लासि

कुल हुवल्लाहु अ़ह़द्
अल्लाहुस्समद लम् यलिद् व लम्
यूलद, व लम् यकुल्लुह कुफ़ूवन अ़ह़द

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۝
اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۝ لَمْ يَلِدْ ۙ وَلَمْ
يُوْلَدْ ۝ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ۝

अब अल्लाहु अकबर कहते हुए रुकूअ़ करें और पहली रकअ़त की तरह दोनों सज्दे करें और बायाँ पैर बिछाकर उसी पर बैठ जाएँ और दायाँ पैर खड़ा रखें और पैर की उँगलियों के सिरे कअ़बे की ओर रखें और अत्तह़ीयातु इस तरह पढ़ें।

अत्तह़ीयातु लिल्लाहि, वस्सलवातु वत्तैय्यिबातु,
अस्सलामु अ़लैक, अय्युहन्नबीय्यु वरह़मतुल्लाहि,
वबर-कातुहू, अस्सलामु अ़लैना, वअ़ला
इबादिल्लाहिस्सालिह़ीन। अश्हदुअल्लाइलाह़
इल्लल्लाहु, व अश्हदु-अन्न मुह़म्मदन,
अ़ब्दुहू वरसूलुह।

اَلتَّحِيَّاتُ لِلّٰهِ وَالصَّلَوٰتُ وَالطَّيِّبٰتُ
اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ
وَبَرَكَاتُهٗ ۔ اَلسَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلٰى
عِبَادِ اللّٰهِ الصّٰلِحِيْنَ ۔ اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ
اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا
عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ

अनुवाद-

तमाम अिबादतें जो ज़बान से होती हैं अल्लाह के लिए हैं, और तमाम अिबादतें जो जिस्म से की जाती हैं, और तमाम अिबादतें जो माल से की जाती हैं (अल्लाह ही के लिए हैं) सलाम हो आप पर ऐ नबी (सल्ल०)! और रह़मत हो अल्लाह की और उसकी बरकतें हों। हम पर और बन्दों पर अल्लाह के जो नेक हैं।

मैं गवाही देता हूँ कि नहीं कोई मअ़बूद सिवाय अल्लाह के, और मैं गवाही

देता हूँ कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह के बन्दे और रसूल हैं।

नोट- जब "अश्हदु अल्लाइलाह" पर पहुँचें तो कलिमे वाली दाहिने हाथ की उँगली को उठा कर इशारा करे कि अल्लाह एक है और फिर "इल्लल्लाहु" पर गिरा दें लेकिन बाक़ी उंगलियाँ उसी तरह रहेंगी।

फिर अल्लाहु अकबर कहते हुए खड़े हो जाएँ और पिछली रकअ़तों की तरह तीसरी और चौथी रकअ़तों में 'बिस्मिल्लाह', फिर 'अल्हम्दु-शरीफ़' पढ़ें।

अगर फ़र्ज़ नमाज़ हो तो तीसरी और चौथी रकअ़तों में केवल 'अल्हम्दु शरीफ़' पढ़कर रुकूअ़ कर लें और सुन्नत या नफ़्ल नमाज़ पढ़ रहे हों तो अल्हम्दु के बाद एक सूरः भी पढ़ें। लेकिन इमाम के पीछे हों तो ख़ामोश रहें कुछ भी न पढ़ें, क़याम की सूरत में।

कअ़दः की सुन्नतें

(१) दायें पैर को खड़ा रख़ना और बायें पैर को बिछा कर उस पर बैठना और पैर की उंगलियों को क़िब्ला की ओर रखना।

(२) दोनों हाथों को रानों पर रखना।

(३) अत्तहीयातु में "अश्हदुअल्लाइलाह" पर कलिमा की उँगली उठाना और "इल्लल्लाह" पर झुका देना।

(४) अत्तहीयातु के बाद दुरूद पढ़ना।

(५) दुरूद के बाद दुआ पढ़ना।

(६) दोनों तरफ़ सलाम फेरना।

(७) दाहिने ओर से सलाम शुरू करना।

(८) इमाम को मुक़्तदियों, फ़रिश्तों और नेक जिन्नातों की नियत करना।

(९) अकेले वाले को सिर्फ़ फ़रिश्तों की नियत करना।

(१०) रुकूअ़ में हाथ की उँगलियाँ फैली हुई हों, और सज्दः में यह उँगलियाँ मिली हुई हों।

सूरः फ़लक़

क़ुल अऊज़ु बिरब्बिल् फ़लक़	قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۙ
मिन शर्रि मा ख़लक़	مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ۙ
वमिन शर्रि ग़ासिक़िन इज़ा वक़ब	وَ مِنْ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ ۙ
वमिन शर्रिन नफ़्फ़ासाति फ़िल् उ़क़द	وَ مِنْ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِی الْعُقَدِ ۙ
वमिन शर्रि ह़ासिदिन् इज़ा ह़सद	وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ۙ

सूरः नास

क़ुल अ़ऊज़ु बिरब्बिन् नास	قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۙ
मलिकिन् नास इलाहिन् नास	مَلِكِ النَّاسِ ۙ اِلٰهِ النَّاسِ ۙ
मिन शर्रिल् वस्वासिल् ख़न्नास	مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ ۙ الْخَنَّاسِ ۙ
अल्लज़ी युवस्विसु फ़ी सुदूरिन्नास	الَّذِیْ یُوَسْوِسُ فِیْ صُدُوْرِ النَّاسِ ۙ
मिनल् जिन्नति वन्नास	مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ ۙ

अब रुकूअ़ व सज्दे करके बैठ जाएँ, इस तरह चारों रकअ़त पूरी हो जाएँगी, बैठने के वक़्त दूसरी रकअ़त की तरह पहले अत्तहीयातु पूरी पढ़ने के बाद दुरूद शरीफ़ इस तरह पढ़ें। इसे दुरुद इब्राहीमी भी कहते हैं।

अल्लाहुम-म, सल्लिअ़ला, मुह़म्मदिंव	اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ
वअ़ला आलि मुह़म्मदिन, कमा	وَّعَلٰٓى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا
सल्लैता, अ़ला इब्राहीमा, व अ़ला	صَلَّيْتَ عَلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ وَعَلٰٓى
आलि इब्राहीमा, इन्नका ह़मीदुम् मजीद।	اٰلِ اِبْرٰهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ۙ

अर्थ- "ऐ अल्लाह! रह़मत भेज ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के घर वालों पर जैसे रह़मत की तूने इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम पर और ह़ज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम के घर वालों पर बेशक तू ही तारीफ़ के लायक़ है, बड़ी बुज़ुर्गी वाला है।"

फिर यह पढ़ें:-

अल्लाहुम-म बारिक, अ़ला मुह़म्मदिंव, व अ़ला आलि, मुह़म्मदिन, कमा बारकता, अ़ला इब्राहीमा, व अ़ला आलि इब्राहीमा इन्नका ह़मीदुम् मजीद।

اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰٓى اٰلِ مُحَمَّدٍ
وَّعَلٰٓى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا
بَارَكْتَ عَلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ وَعَلٰى
اٰلِ اِبْرٰهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ
مَّجِيْدٌ ۝

अर्थ- ऐ अल्लाह! बरकत उतार ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) पर और ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के घर वालों पर, जैसी बरकतें की तूने ह़ज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम पर और ह़ज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम के घर वालों पर, बेशक तू ही तारीफ़ के लायक़ बड़ी बुज़ुर्गी वाला है।

फिर यह दुआ़ पढ़ें-

अल्लाहुम-म-इन्नी-ज़लम्तु नफ़्सी, ज़ुल्मन कसीरवं-वला यग्फ़िरुज़्ज़ुनुबा, इल्ला अन्ता फ़ग्फ़िरली, मग़्फ़िरतम् मिन अ़िन्दिका वरह़मनी इन्नका, अन्तल्ग़फ़ूरुर्रीम।

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ ظَلَمْتُ نَفْسِىْ ظُلْمًا
كَثِيْرًا وَّلَا يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّآ اَنْتَ
فَاغْفِرْلِىْ مَغْفِرَةً مِّنْ عِنْدِكَ
وَارْحَمْنِىْ اِنَّكَ اَنْتَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ۝

अर्थ- "ऐ अल्लाह! बेशक मैंने ज़ुल्म किया अपने ऊपर और बहुत ज़्यादा और नहीं बख़्शता गुनाहों को मगर तू ही बस माफ़ कर दे मुझे तू रह़म कर मेरे ऊपर। बेशक तू ही माफ़ करने वाला मेहरबान है।"

दुआ़ पढ़ने के बाद पहले दाँई ओर सलाम इन शब्दों के साथ फेरें कि पीछे बैठने वालों को रुख़सार नज़र आ जाए। (२) सलाम फेरते वक़्त नज़रें कंधों पर होनी चाहिए।

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ ۝

अस्सलामु अ़लैकुम वरह़मतुल्लाह

अर्थ- "सलाम हो तुम पर और अल्लाह की रह़मत"

फिर इस तरह़ बाएँ ओर सलाम फ़ेरेंगे और नमाज़ को ख़त्म कर देंगें। दाएँ

ओर सलाम फेरते वक़्त इमाम को फ़रिश्तों, मुक़्तदियों और नेक जिन्नातों की नियत करना और मुक़्तदी को इमाम, फ़रिश्तों, नेक जिन्नातों और दायें बायें मुक़्तदियों की सलामती की नियत करना।

इस तरह अब चार रकअ़त वाली नमाज़ पूरी हो गयी। अगर दुआ़ करना हो तो इस तरह माँगें।

(१) दुआ़ के वक़्त दोनों हाथ इतने ऊपर उठाए जाएँ कि वह सीने के सामने आ जाएँ और दोनों हाथों के बीच थोड़ा सा फ़ासला हो। न हाथों को बिल्कुल मिलाएँ न दोनों के बीच ज़्यादा फ़ासला रखें। (२) दुआ़ करते वक़्त हाथों के अन्दुरूनी ह़िस्से को चेहरे के सामने रखें।

रब्बना आतिना फ़िद्दुनिया ह़सनतवं वफ़िल् आख़िरति ह़सनतवं-वक़िना अ़ज़ाबन्नारि।

رَبَّنَآ اٰتِنَا فِى الدُّنْيَا حَسَنَةً
وَّفِى الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا
عَذَابَ النَّارِ

अर्थ- "ऐ परवरदिगार मुझको दुनिया में भी भलाई अ़ता कर और मरने के बाद आख़िरत में भी, और बचा हमको दोज़ख़ की आग से।"

नोट- अगर दो रकअ़त वाली नमाज़ हो तो पहली बार अत्तह़ीयातु के बाद दुरुद के साथ दुआ़ पढ़ कर सलाम फेर दें।

वित्र की नमाज़ का बयान

इससे पहले बताया जा चुका है कि अ़िशा की नमाज़ के बाद तीन रकअ़त वित्र भी पढ़ लें। यह नमाज़ चार फ़र्ज़ों और दो सुन्नतों के बाद पढ़ी जाती है इससे पहले नफ़्ल भी पढ़ सकते हैं।

वित्र नमाज़ इस तरह पढ़ें, कि पहले तीन रकअ़त नमाज़ वाजिब की नियत करें, और दो रकअ़त आम नमाज़ों की तरह पढ़ने के बाद बैठ कर अत्तह़ीयातु पढ़ें, फिर तीसरी रकअ़त के लिए 'अल्लाहु अकबर' कहकर खड़े हो जाएँ। फिर अल्ह़म्दु और कोई सूरः पढ़ने के बाद अल्लाहु अकबर कहते हुए हाथ कानों तक उठा कर फिर बांध लें और यह दुआ़ पढ़ें:-

अल्लाहुम्मा, इन्ना नस्तअ़ीनुका

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَسْتَعِيْنُكَ

वनस्तग़्फ़िरू-क, व नुअ़मिनुबिका	وَنَسْتَغْفِرُكَ وَنُؤْمِنُ بِكَ
वन-त-वक्कलु अ़लैका, वनुस्नी	وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْكَ وَنُثْنِي
अ़लैकल्ख़ैर, वनश्कुरूका, वलानक	عَلَيْكَ الْخَيْرَ وَنَشْكُرُكَ وَلَا نَكْفُرُكَ
फ़ुरूका, वनख़्लअु वनतरुकु	وَنَخْلَعُ وَنَتْرُكُ
मय्यफ़्जुर-क, अल्लाहुम-म-इय्या-का	مَنْ يَّفْجُرُكَ اَللّٰهُمَّ اِيَّاكَ
नअ़बुदु, वलका नुसल्ली वनस्जुदु	نَعْبُدُ وَلَكَ نُصَلِّي وَنَسْجُدُ
वइलैका नसआ़, वनह़फ़िदु वनर्जू	وَاِلَيْكَ نَسْعٰى وَنَحْفِدُ وَنَرْجُوْا
रह़मतका वनख़्शा अ़ज़ाबका इन्ना	رَحْمَتَكَ وَنَخْشٰى عَذَابَكَ اِنَّ
अ़ज़ाब-ब-का बिल् कुफ़्फ़ारि मुल्ह़िक़।	عَذَابَكَ بِالْكُفَّارِ مُلْحِقٌ ۔

अर्थ- "ऐ अल्लाह! हम तुझसे मदद चाहते हैं और तुझ से माफ़ी मांगते हैं तुझ पर ईमान लाते हैं और तुझ ही पर भरोसा करते हैं और तेरी बहुत तअ़रीफ़ करते हैं और तेरा शुक्र करते हैं और तेरी नाशुक्री नहीं करते और अलग करते हैं और छोड़ते हैं उस व्यक्ति को जो तेरी बात न माने। ऐ अल्लाह! हम तेरी ही अ़िबादत करते हैं और तेरे ही लिए नमाज़ पढ़ते हैं हुक्म मानने के लिए और तेरी रह़मत के उम्मीदवार हैं और बेशक तेरा अ़ज़ाब काफ़िरों (अल्लाह के न मानने वालों) को मिलने वाला है।

इस दुआ़ के पढ़ने के बाद रूकूअ़ व सज्दः करके फिर बैठकर पिछले बयान के मुताबिक़ अत्तह़ीयातु आदि पढ़कर नमाज़ पूरी करें।

रमज़ान में वित्र की नमाज़ तारावीह के बाद जमाअ़त से पढ़ी जाती है अगर कोई मजबूरी हो तो अकेले पढ़ सकते हैं जिसका बयान आगे आ रहा है।

जुमअ़ः की नमाज़ का बयान

प्रश्न- जुमअ़ः की नमाज़ किस पर फ़र्ज़ है?

उत्तर- जुमअ़ः की नमाज़ निम्न लोगों पर फ़र्ज़ है। जिस व्यक्ति का सफ़र

शरअ़ी न हो, आक़िल मर्द बालिग़ हो, आज़ाद हो, समझदार, आँखो वाला, दो पैरों वाला हो तो उस पर जुमअ़ः की नमाज़ फ़र्ज़ है।

प्रश्न- किन-किन लोगों पर जुमअ़ः की नमाज़ फ़र्ज़ नहीं है?

उत्तर- जुमअ़ः की नमाज़ आठ लोगों पर फ़र्ज़ नहीं है।

१- शरअ़ी मुसाफ़िर २- बहुत ज़्यादा बीमार ३- गुलाम (४) औरत (५) दीवाना (६) अंधा ७- लंगड़ा ८- बच्चा।

जुमअ़ः की नमाज़ पढ़ने का तरीक़ा

जुमअ़ः की नमाज़ का वक़्त वही है जो ज़ुह्र का वक़्त है। लेकिन ज़ुह्र की जगह पर जुमअ़ः की नमाज़ पढ़ी जा सकती है। जुमअ़ की नमाज़ का पूरा तरीक़ा इस प्रकार है।

१- पहले चार रकअ़त सुन्नत पढ़ें।

२- फिर ख़ुत्बे के बाद दो रकअ़त फ़र्ज़ इमाम के पीछे पढ़ें।

३- फ़र्ज़ नमाज़ के बाद चार रकअ़त सुन्नत पढ़ें।

४- फिर दो रकअ़त सुन्नत पढ़ें।

५- फिर दो रकअ़त नफ़्ल पढ़ें।

प्रश्न- नमाज़े जुमअ़ः के लिए कौन-कौन सी शर्तों का पाया जाना फ़र्ज़ है?

उत्तर- निम्न बातों का पाया जाना फ़र्ज़ है।

१- शहर, क़स्बा या बड़े गांव का होना।

२- ज़ुह्र का वक़्त होना।

३- नमाज़ से पहले ख़ुत्बा पढ़ना।

४- कम से कम तीन लोगों का मौजूद होना (इमाम के अ़लावह)

५- आम इजाज़त होना।

प्रश्न- ख़ुत्बे का सुन्नत तरीक़ा क्या है?

उत्तर- फ़र्ज़ नमाज़ से पहले इमाम मिम्बर पर बैठे और उसके सामने अ़ज़ान देने वाले अ़ज़ान कहे और उसके बाद इमाम पहला ख़ुत्बः पढ़कर थोड़ी

देर बैठ जाए फिर खड़े होकर दूसरा ख़ुत्बः पढ़े, उस वक़्त ख़ुत्बः सुनने वाले न बातें करें न सुन्नत या नफ़्ल पढ़ना शुरु करें और कुछ न खाएँ न कुछ पियें और न किसी बात का जवाब दें यहाँ तक कि क़ुर्आन भी न पढ़ें।

तरावीह़ की नमाज़ का बयान

इस नमाज़ का पढ़ना हर मर्द, औरत के लिए सुन्नते मुअ़क्किदह है। इसको न पढ़ने वाला गुनाहगार होगा। यह रमज़ान के महीने की पहली रात से आख़िर महीने तक हर रात में पढ़ी जाती है। इसका वक़्त अ़िशा की नमाज़ के बाद से फ़ज्र के शुरू होने से पहले तक रहता है। दो-दो रकअ़त की नियत से आमतौर पर बीस रकअ़त पढ़नी चाहिए, अगर जमाअ़त से पढ़ी जाये तो वित्र भी जमाअ़त से पढ़नी चाहिए और तीनों रकअ़तों में तेज़ आवाज़ से पढ़ना चाहिये और हर रकअ़त के बाद बैठकर यह दुआ़ पढ़ें।

सुब्ह़ान ज़िल् मुल्कि, वल्मल कूति,	سُبْحَانَ ذِى الْمُلْكِ وَالْمَلَكُوْتِ
सुब्ह़ान ज़िल् अ़िज़्ज़ति, वल्अज़मति	سُبْحَانَ ذِى الْعِزَّةِ وَالْعَظَمَةِ
वल्हैबति, वल्कुदरति, वल्किब्रियाई	وَالْهَيْبَةِ وَالْقُدْرَةِ وَالْكِبْرِيَآءِ
वल्-ज-बरूति, सुब्ह़ानल्-म	وَالْجَبَرُوْتِ سُبْحَانَ الْمَلِكِ
लिकिल् ह़य्यिल्लज़ी, लायनामु वला	الْحَيِّ الَّذِىْ لَا يَنَامُ وَلَا
यमूतु, सुब्बूहुन कुद्दूसुन, रब्बुना व	يَمُوْتُ سُبُّوْحٌ قُدُّوْسٌ رَبُّنَا وَ
रब्बुल मलाइकति वर्रूह़ि, अल्ला हुम्-म	رَبُّ الْمَلٰٓئِكَةِ وَالرُّوْحِ اَللّٰهُمَّ
अजिरना मिनन्नारि, यामुजीरू	اَجِرْنَا مِنَ النَّارِ يَا مُجِيْرُ
यामुजीरू, यामुजीर	يَا مُجِيْرُ يَا مُجِيْرُ

अर्थ- "पाक है वह! ज़मीन की बादशाही और आसमान की बादशाही वाला,

पाक है, वह इ़ज़्ज़त और बुज़ुर्गी और ह़ैबत और क़ुदरत तथा बड़ाई और दबदबे वाला। पाक है बादशाह (ह़क़ीक़ी) ज़िन्दा, जो सोता नहीं और न मरेगा बहुत ही मुक़द्दस है हमारा परवरदिगार और फ़रिश्तों और रूह का परवरदिगार ऐ अल्लाह! हमको दोज़ख़ से पनाह देने वाले, ऐ पनाह देने वाले, ऐ पनाह देने वाले"।

नोट- तरावीह़ की बीस रकअ़तें पढ़ने के बाद वित्र की नमाज़ भी जमाअ़त से पढ़ें।

मुसाफ़िर की नमाज़ का बयान

मुसाफ़िर को शरीअ़त ने यह सहूलियत दी है कि वह सफ़र में नमाज़ें मुख़्तसर कर ले, यानी जिन अवक़ात में चार रकअ़त फ़र्ज़ है उन में सिर्फ़ दो रकअ़त पढ़े। **अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है-**

وَاِذَا ضَرَبْتُمْ فِى الْاَرْضِ فَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَنْ تَقْصُرُوْا مِنَ الصَّلٰوةِ

"और जब तुम लोग ज़मीन में सफ़र के लिए निकलो तो कोई हर्ज नहीं है, अगर तुम नमाज़ में क़स्र करो। (सूरः निसा-१०१)

नमाज़े क़स्र का हुक्म

अपनी आबादी से निकलने के बाद मुसाफ़िर के लिए नमाज़े क़स्र पढ़ना वाजिब है। अगर पूरी नमाज़ पढ़ेगा तो गुनाहगार होगा।

क़स्र सिर्फ़ उन नमाज़ों में है जिन में चार रकअ़त फ़र्ज़ है, जैसे, ज़ुह्र और अ़स्र अ़िशा और जिन में दो या तीन रकअ़तें फ़र्ज़ हैं, उन में कोई कमी न होगी, फ़ज्र और मग़्रिब में दो और तीन रकअ़तें ही पढ़नी होंगी।

सफ़र में सुन्नत और नफ़्ल का हुक्म

नमाज़ फ़ज्र की सुन्नतों को तर्क न करना चाहिए और मग़्रिब की सुन्नतों को भी पढ़ लेना बेहतर है, बाक़ी अवक़ात की सुन्नतों में अख़्तियार है, बेहतर यह है कि अगर आदमी का सफ़र जारी हो तो सिर्फ़ फ़र्ज़ पढ़े और सुन्नतें छोड़

दे और अगर सफ़र के दौरान कहीं ठहरा हो तो पढ़ ले। अलबत्ता वित्र की नमाज़ बहरहाल पढ़ें, इसलिए कि नमाज़ वित्र वाजिब है। सुन्नत, नफ़्ल, और वित्र की रकअ़त में क़स्र नहीं हैं जितनी रकअ़तें घर पर पढ़ी जाती हैं उतनी ही सफ़र में भी पढ़ी जाएँगी।

सफ़र में दो नमाज़ें एक साथ पढ़ने की इजाज़त-

सफ़र में दो नमाज़ें एक साथ पढ़ने की इजाज़त है। जैसे-ज़ुह्र को आख़िरी वक़्त में पढ़े और अ़स्र को अ़स्र का वक़्त शुरु होते ही पढ़े लें। इस तरह़ दोनों नमाज़ें एक साथ जमा हो जाएँगी। इसी तरह़ मग़्रिब की नमाज़ इ़शा की नमाज़ का वक़्त शुरु होने से चन्द मिनट पहले पढ़े और फिर अ़िशा की नमाज़ पढ़े। इस तरह़ यह दोनों नमाज़ें जमा कर के पढ़ सकते हैं। इस से वुज़ू वग़ैरह में सहूलत होती है। इसे ज़ुहरैन और मग़्रिबैन कहते हैं।

क़स्र शुरु करने का मक़ाम-

सफ़र पर रवाना होने के बाद मुसाफ़िर जब तक आबादी के अन्दर रहे पूरी नमाज़ पढ़ता रहे और जब आबादी से बाहर निकल जाए तो फिर क़स्र करे। बस्ती का स्टेशन अगर आबादी के अन्दर हो तो उस में क़स्र न करे, पूरी नमाज़ पढ़े और अगर आबादी से बाहर हो तो फिर पूरी नमाज़ न पढ़े, बल्कि क़स्र करे।

क़स्र की मुद्दत-

मुसाफ़िर जब तक अपने वतन असली को न पहुँच जाए, बराबर क़स्र करता रहे। अलबत्ता दौराने सफ़र अगर किसी मक़ाम पर १५ दिन या उस से ज़्यादा क़याम का इरादा कर ले तो वह मक़ाम उस का वतन इक़ामत क़रार पाएगा और वतन इक़ामत में पूरी नमाज़ पढ़नी होगी, चाहे पन्द्रह दिन क़याम की नियत करने के बाद किसी वजह से वहां पन्द्रह दिन से कम क़याम कर सके। और

अगर किसी मक़ाम पर १५ दिन से कम ठहरने का इरादा हो लेकिन किसी वजह से वहाँ बार बार रुक जाना पड़े और इस तरह महीनों गुज़र जाएँ, तब भी वह क़स्र ही करेगा।

प्रश्न- मुसाफ़िर किसे कहते हैं? और कितनी दूरी के सफ़र का इरादा करने से आदमी मुसाफ़िर हो जाता है?

उत्तर- शरीअ़त में मुसाफ़िर उसको कहते हैं जो इतनी दूर जाने का इरादा करके निकले जहाँ तीन दिन में पहुँच सके अर्थात ४८ मील या लगभग ८० किलोमीटर का सफ़र करना हो और मुसाफ़िर उस वक़्त से होता है जबकि अपने शहर के स्टेशन पर पहुँच जाए या गाँव के किनारे पर, लेकिन दूरी घर से ही जोड़ी जाएगी। मुसाफ़िर के लिए ज़रूरी होता है कि हर फ़र्ज़ नमाज़, जो चार रकअ़त वाली हो उसको दो रकअ़त पढ़े और बाक़ी नमाज़ माफ़ हो जाती हैं, पढ़ ले तो बेहतर है।

लगभग ८० किलोमीटर की दूरी के इरादे से सफ़र पर निकलने वाला मुसाफ़िर कहीं १५ दिन ठहरने के इरादे से निकलता है तो रास्ते में चार रकअ़त वाली नमाज़ें दो रकअ़त पढ़े, लेकिन जब अपने ठहरने वाली जगह पर पहुँच जाए तो पूरी नमाज़ पढ़ें।

अगर केवल १४ दिन ठहरने की नियत की होगी तो मुसाफ़िर पूरे १४ दिन ज़ुह्र, अ़स्र, अ़िशा की सभी फ़र्ज़ नमाज़ों को दो-दो रकअ़त पढ़े और सुन्नत व नफ़्ल वैसे ही पढ़े। अगर इमाम के पीछे पढ़े तो पूरी नमाज़ें पढ़े और अगर इमाम हों तो दो रकअ़त पढ़ाने के बाद सलाम फेर दे और मुक़्तदियों से कहे कि मैं मुसाफ़िर हूँ आप लोग अपनी चारों रकअ़तें पूरी कर लें।

मरीज़ की नमाज़ का बयान

अगर कोई व्यक्ति बीमार हो और खड़े होकर नमाज़ नहीं पढ़ सकता है तो वह बैठकर नमाज़ पढ़े, और अगर बैठकर भी न पढ़ सकता हो तो लेटकर इशारे से नमाज़ पढ़े लेकिन क़िब्ले की ओर पांव फैलाकर थोड़ा सा सर उठाकर इशारे से पढ़े।

और अगर सर से इशारा भी न कर सके तो नमाज़ उस वक़्त छोड़ दे और अगर एक रात एक दिन से ज़्यादा उसकी यही हालत रही और मर गया तो छूटी हुई नमाज़ों की क़ज़ा भी उसके ज़िम्मे नहीं और अगर अच्छा हो गया तो क़ज़ा ज़रूर हो जाएगी।

माज़ूर और बीमार की नमाज़ का तरीक़ा

(१) मर्ज़ कैसा ही शदीद हो, नमाज़ जहाँ तक हो सके वक़्त पर अदा करना चाहिए अगर नमाज़ के सारे अरकान अदा करने की ताक़त न हो तो जो सही अरकान अदा करने की ताक़त हो या सिर्फ़ इशारे ही से अदा करने की ताक़त हो तब भी वक़्त पर नमाज़ अदा करना चाहिए।[१]

(२) जहाँ तक मुम्किन हो खड़े होकर नमाज़ पढ़े अगर पूरी नमाज़ में खड़ा होना मुम्किन न हो तो जितनी देर खड़ा रह सकता हो उतनी ही देर क़याम करे, यहाँ तक कि अगर कोई माज़ूर या मरीज़ सिर्फ़ तकबीरे तह़रीमा कहने के लिए ही खड़ा हो सकता हो तो वह खड़े होकर ही तकबीरे तह़रीमा कहे और फिर बैठ कर पूरी नमाज़ पढ़े, खड़े होने की क़ुव्वत होते हुए भी बैठ कर पढ़ना दुरुस्त नहीं।

(३) अगर कोई खड़े होकर नमाज़ पढ़ने से बिल्कुल ही माज़ूर हो या कमज़ोरी

१- फ़ुक़हा-ए-दीन ने यहाँ तक ताकीद की है, कि अगर कोई ख़ातून दर्दज़ह की तकलीफ़ में हो और नमाज़ का वक़्त आ जाए और ख़ातून के होश ह़वास क़ायम हों तो उस को चाहिए कि जिस तरह भी खड़े या बैठे नमाज़ पढ़ सके जल्द पढ़ ले इसलिए कि निफ़ास का ख़ून आने के बाद नमाज़ क़ज़ा हो जाएगी और नमाज़ पढ़ने की क़ुदरत होते हुए क़ज़ा करना गुनाह है।

की वजह से गिर पड़ने का अन्देशा हो, या खड़े होने से चक्कर आता हो, या खड़े होने से ग़ैर मामूली तकलीफ़ होती हो, या अगर खड़ा हो भी जाए तो रुकूअ़ सज्दः अदा करने की ताक़त न हो तो ऐसी तमाम सूरतों में बैठ कर नमाज़ पढ़े।

(४) बैठ कर नमाज़ पढ़ने में अगर मुम्किन हो तो मस्नून तरीक़े से बैठे जिस तरह "अत्तह़िय्यातु" पढ़ते वक़्त बैठते हैं लेकिन इस तरह बैठना अगर मुम्किन न हो तो फिर जिस तरह सहूलत से बैठ सके बैठ कर नमाज़ पढ़े, अगर रुकूअ़ और सज्दे न कर सके तो इशारों से काम ले।

(५) इशारों से रुकूअ़ व सज्दे अदा करने में आँख और पल्कों से करना काफ़ी नहीं है, सिर से इशारा करना चाहिए, रुकूअ़ में किसी क़द्र कम सर झुकाए और सज्दे में निस्बतन ज़्यादा झुकाए।

(६) अगर सज्दा करने के लिए ज़मीन तक पेशानी ले जाने की ताक़त न हो तो सिर्फ़ इशारा ही काफ़ी है, तकिया वग़ैरह पेशानी तक उठा कर उस पर सज्दा करना मकरूह तह़रीमी है।

(७) अगर बैठ कर नमाज़ पढ़ने की भी ताक़त न हो या ग़ैर मामूली तक्लीफ़ होती हो, या मर्ज़ बढ़ने का अंदेशा हो, या ज़ख़्म के टांके वग़ैरह खुलने का ख़त्रा हो तो फिर लेटे-लेटे नमाज़ पढ़ ले। लेट कर नमाज़ पढ़ने की बेहतर सूरत यह है कि आदमी चित लेट कर क़िब्ले की तरफ़ पैर कर ले लेकिन पैर पूरी तरह न फैलने पाएँ। घुटने खड़े रखे और सर के नीचे तकिया वग़ैरह रख कर सर ज़रा और ऊँचा कर ले और इशारों से रुकूअ़ व सज्दः करे और अगर यह मुम्किन न हो तो फिर शिमाल की जानिब सर करके दाहिनी करवट पर लेट कर नमाज़ अदा करे और यह भी न हो सके तो जिस तरह मुम्किन हो अदा कर ले।

(८) अगर किसी मरीज़ की कमज़ोरी इस ह़द तक बढ़ गई हो कि इशारों से नमाज़ पढ़ने की भी ताक़त न हो तो फिर उस वक़्त नमाज़ न पढ़े, सेह़तमंद होने पर उस की क़ज़ा करे और अगर यही कैफ़ियत पाँच नमाज़ों से ज़्यादा वक़्त क़ायम रहे तो फिर उन नमाज़ों की क़ज़ा वाजिब नहीं है, बल्कि यह

नमाज़ें माफ़ हैं, इसी तरह अगर कमज़ोरी की वजह से ग़शी की कैफ़ियत तारी हो, और छः नमाज़ों के वक़्त तक यह कैफ़ियत बाक़ी रहे तो फिर इन नमाज़ों की क़ज़ा वाजिब नहीं, इसी तरह अगर किसी तन्दुरुस्त पर यकायक बेहोशी का दौरा पड़ जाए और बेहोशी की यह कैफ़ियत छठी नमाज़ के वक़्त तक रहे तो यह नमाज़ें माफ़ हैं उन की क़ज़ा वजिब न होंगी।

(९) अगर किसी नमाज़ के दौरान मर्ज़ का ह़मला हो जाए और वह खड़े होने से माज़ूर हो जाए तो बैठ कर नमाज़ पढ़ने और बैठने से भी माज़ूर हो तो लेट कर पढ़े, रुकूअ़ और सज्दे न कर सकता हो तो इशारों से रुकूअ़ और सज्दे करे इसी तरह़ बाक़ी नमाज़ें जिस तरह पढ़ लेने की क़ुव्वत रखता हो उसी तरह पढ़ ले।

(१०) चलती कश्ती, जहाज़ रेल, वग़ैरह में खड़े होकर नमाज़ पढ़ने में अगर गिरने का अंदेशा हो या चक्कर आने और मतली हो जाने का ख़त्रा हो तो फिर बैठ कर नमाज़ पढ़ सकता है, अल्बत्ता जब तक खड़े होने की ताक़त और सहूलत हो, खड़े होकर ही नमाज़ पढ़नी चाहिए।

(११) तन्दुरुस्ती के दिनों में किसी की कुछ नमाज़ें क़ज़ा हो गईं और फिर वह बीमार पड़ गया तो उन नमाज़ों की क़ज़ा पढ़ने के लिए उस को बीमारी से उठने और सेह़तयाब होने का इन्तिज़ार न करना चाहिए, बल्कि बीमारी के दौरान ही खड़े होकर या बैठ कर जिस तरह भी मुम्किन हो उन की क़ज़ा पढ़ लेनी चाहिए।

(१२) अगर किसी बीमार आदमी का बिस्तर वग़ैरह नजिस हो और दूसरे बिस्तर का मुहैया करना मुम्किन न हो, या बिस्तर बदलने में ग़ैर मामूली तकलीफ़ हो तो फिर नजिस बिस्तर पर ही नमाज़ पढ़ लेना दुरुस्त है।

मय्यित का बयान

जब किसी मुसलमान की मौत क़रीब समझ में आये तो उसे चित लेटा दें और क़िब्ला की तरफ़ कर के सर ऊँचा कर दें ताकि मुँह क़िब्ला की तरफ़ हो जाए, फिर जब रुह़ निकल जाए जो उस का मुँह किसी कपड़े से ठोड़ी के नीचे से

निकाल कर दोनों चबड़ों से सर पर बांध दें ताकि मुँह न फैल जाए और पैर के दोनों अंगूठे मिला कर बांध दें, तथा आँखें बन्द कर दें और बन्द करते वक़्त यह दुआ पढ़ें-

بِسْمِ اللّٰهِ وَعَلٰى مِلَّةِ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَاجْعَلْ
اللّٰهُمَّ مَا خَرَجَ اِلَيْهِ خَيْرًا مِّمَّا خَرَجَ عَنْهُ

मय्यित का ग़ुस्ल

मय्यित को किसी तख़्त पर लिटाने के बाद उसके कपड़े अलग कर दें और उस की नाफ़ से घुटने तक एक कपड़ा सतर छुपाने के लिए डाल दें, फिर बेरी के पत्ते डाल कर गर्म किया हुआ या सादे गर्म पानी से ग़ुस्ल देना शुरु करें, लेकिन ज़्यादा गर्म न हो।

सबसे पहले मुर्दे को अपने हाथ में कोई कपड़ा लपेट कर इस्तिंजा कराएँ फिर नाफ़ के नीचे के ह़िस्से में पानी डालें, फिर कुल्ली करें और नाक में रुई लगा कर पहले मुँह धुलाएँ, फिर दोनों हाथ कुहनियों समेत फिर सर का मसह़ और पैर धुलाएँ, फिर सर मल कर साबुन से धोएँ, फिर मुर्दे को बाएँ करवट पर लिटा कर, गर्म वाला पानी तीन बार सर से पैर तक डालें। यहाँ तक कि करवट तक पानी पहुँच जाए फिर दाहिनी करवट पर लिटा दें कि बाएँ करवट तक पहुँच जाए उसके बाद मुर्दे को अपने बदन से टेक लगा कर बिठाएँ और उस के पेट को आहिस्ता-आहिस्ता मलें फिर अगर कुछ पाख़ाना वग़ैरह निकले तो धो डालें और वुज़ू और ग़ुस्ल में उसके निकलने से कोई फ़र्क़ नहीं पड़ेगा उसके बाद फिर उसे बाएं करवट पर लिटाएँ, और काफ़ूर पड़े हुए पानी को सर से पैर तक तीन बार डालें, इस तरह़ अब ग़ुस्ल मुकम्मल हो गया।

मय्यित का कफ़न

मर्द को तीन कपड़ों में और औ़रतों को पाँच कपड़ों में कफ़न देना सुन्नत है।

१- ईज़ार सर से पैर तक
२- चादर या लिफ़ाफ़ा (जो इज़ार से एक हाथ बड़ी हो।)
३- कुर्ता, गले से लेकर पैर तक जिस में न आस्तीन हो न कलाइयाँ हों जिसे कफ़नी भी कहते हैं।

औरत में यह दो कपड़े ज़्यादह होते हैं-

१- एक सूर बन्द जो तीन हाथ लम्बा हो।
२- सीना बन्द जो छाती से लेकर रानों तक हो।

कफ़नाते वक़्त सर, दाढ़ी और सज्दः करने की जगह अर्थात पेशानी पर नाक और दोनों हथेलियों तथा पैर के दोनों पन्जों पर काफ़ूर मल दें फिर कफ़ना दें।

जनाज़े की नमाज़ का हुक्म

प्रश्न- नमाज़े जनाज़ः किसे कहते हैं? और वह कैसे पढ़ी जाती है?

उत्तर- नमाज़े जनाज़ः उसे कहते हैं जो मरने के बाद मुर्दे पर पढ़ी जाती है जो इस तरह है।

नियत करता हूँ नमाज़े जनाज़ः की (मअ़े) चार तकबीरों के साथ अल्लाह के लिए, दुआ़ इस मय्यत के, पीछे इस इमाम के मुँह मेरा कअ़बे की ओर "अल्लाहु अकबर" फिर दोनों हाथ बांध लें और सना इस तरह पढ़ें-

सुब्ह़ानकल्ला हुम्मा, व बिह़म्दिका
वतबा-र-कस्मुका, वतआ़ला जद्दु-का
व जल्लसनाउका, वला इलाहा ग़ैरूक।

سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ
وَتَبَارَكَ اسْمُكَ وَتَعَالٰى جَدُّكَ
وَجَلَّ ثَنَاؤُكَ وَلَا اِلٰهَ غَيْرُكَ

अर्थ-

(१) "पाकी के साथ याद करता हूँ। ऐ अल्लाह! और तेरी तअ़रीफ़ करता हूँ और बहुत ख़ूबियों वाला तेरा नाम है और बहुत बुलन्द है तेरा मर्तबः, और तेरी तअ़रीफ़ बहुत बड़ी है और नहीं कोई अ़िबादत के लायक़ सिवाय तेरे।"

(२) फिर इमाम दोबारा "अल्लाहु अकबर" कहे तो उस वक़्त पीछे वाले भी

'अल्लाहु अकबर' कहकर नमाज़ में पढ़ा जाने वाला दुरूद पढ़ें।

(३) तीसरी बार फिर इमाम 'अल्लाहु अकबर' कहे तो फिर 'अल्लाहु अकबर' कहकर यह दुआ़ पढ़ें।

अल्ला-हुम्-मग्फ़िर लिह़ैय्यिना
वमय्यितिना, व शाहिदिना, वग़ाइबिना, व
सग़ीरिना, व कबीरिना, वज़करिना
वउन्साना।

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِحَيِّنَا
وَمَيِّتِنَا وَ شَاهِدِنَا وَ غَآئِبِنَا وَ
صَغِيْرِنَا وَ كَبِيْرِنَا وَ ذَكَرِنَا
وَاُنْثَانَا

अल्लाहुम्म मन अह़यय-तहू
मिन्ना फ़अह़यिही अ़लल् इस्लामी वमन
तवफ़्फ़ैतहू मिन्ना, फ़तवफ़्फ़हू
अ़लल्ईमान।

اَللّٰهُمَّ مَنْ اَحْيَيْتَهٗ
مِنَّا فَاَحْيِهٖ عَلَى الْاِسْلَامِ وَمَنْ
تَوَفَّيْتَهٗ مِنَّا فَتَوَفَّهٗ
عَلَى الْاِيْمَانِ

अर्थ- "ऐ अल्लाह! माफ़ कर दे हमारे ज़िन्दों को और हमारे मुर्दों को और उनको जो ह़ाज़िर हैं या ग़ायब हैं और हमारे छोटे और बड़ों को और मर्दों और औ़रतों को ऐ अल्लाह! हममें से तू जिसे ज़िन्दा रखे इस्लाम पर ज़िन्दा रख और जिसे मौत दे हममें से उसे ईमान पर मौत दे।"

(४) इस दुआ़ को पढ़ने के बाद चौथी बार इमाम तकबीर 'अल्लाहु अकबर' कहे तो पीछे वाले भी 'अल्लाहु अकबर' कहें फिर इमाम के सलाम फेरते ही तुरन्त दाँईं ओर और बाँई ओर सलाम फेर दें।

अगर नाबालिग़ बच्चे की जनाज़ः पढ़ानी हो तो तीसरी तकबीर के बाद यह दुआ़ पढ़ें।

अल्लाहुम-मज् अ़लहु लना फ़-रतंव,
वज्अ़ल्-हु लना अजरंव्वज़ुख़रंव,
वजअ़लहु लना शाफ़िअ़व्वं मुशफ़्फ़आ़।

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهُ لَنَا فَرَطًا
وَّاجْعَلْهُ لَنَا اَجْرًا وَّ ذُخْرًا
وَّاجْعَلْهُ لَنَا شَافِعًا وَّمُشَفَّعًا

अर्थ- ऐ अल्लाह! कर उसको हमारे लिए मीर मंज़िल और कर उसे हमारे लिए अज्र और ज़ख़ीरा और कर हमारे लिए शफ़ाअ़त करने वाला शफ़ाअ़त कुबूल फ़रमा।

मय्यित नाबालिग़ लड़की हो तो यह दुआ पढ़ें

अल्लाहुम्-मज्अ़लहा लना फ़रतंव, वज्-अ़लहा लना अजरंव-व ज़ुख़रंव, वज् अ़ल्हा लना, शाफ़िअ़तंव़ वमुशफ़्फ़अ़:

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهَا لَنَا فَرَطًا وَّاجْعَلْهَا لَنَا اَجْرًا وَّ ذُخْرًا وَّاجْعَلْهَا لَنَا شَافِعَةً وَّمُشَفَّعَةً ۞

मय्यित को दफ़नाने का तरीक़ा

जनाज़ा ले जाते वक़्त 'लाइलाहाइल्लल्लाहु' तेज़ आवाज़ से पढ़ना बिद्अ़त है और अगर आहिस्ता सुन्नत समझ कर न पढ़ें तो पढ़ सकते हैं। मय्यित को लिटाते वक़्त इस तरह बायें दीवार की तरफ़ लगा कर लिटाएँ कि मय्यित का पूरा रुख़ क़िब्ला की तरफ़ हो जाए और क़ब्र को एक बालिश्त से ऊँचा करना मक़रूह है।

ईद की नमाज़ का बयान

दोनों ईद की नमाज़ें वाजिब हैं जिन लोगों पर जुमअ़: की नमाज़ फ़र्ज़ है उन्हीं पर ईद की नमाज़ वाजिब है।

ईदुल्फ़ित्र या ईदुल् अ़ज़्हा की नमाज़ का तरीक़ा

नियत करता हूँ मैं दो रकअ़त नमाज़ वाजिब ईदुल फ़ित्र या ईदुल अ़ज़्हा, छ: तकबीरों के साथ, अल्लाह के लिए, पीछे इस इमाम के, (फिर कानों तक हाथ उठा कर) "अल्लाहु अकबर" कहकर हाथ बांध लें।

१- और सना "सुब्हानकल्लाहुम्मा" पूरी पढ़ें।

२- फिर इमाम के साथ दुबारा 'अल्लाहु अकबर- कहते हुए हाथ कानों तक उठाएँ और छोड़ दें, फिर तीसरी बार हाथ इमाम के साथ अल्लाहु अकबर कहते हुए कानों तक ले जाएँ और अब हाथ बांध कर इमाम की किरअ़त ख़ामोशी से सुनें। इमाम सूर: फ़ातिहा और कोई सूर: पढ़ेगा और आप ख़ामोशी से सुनें। फिर रुकूअ़ सज्द: इमाम के साथ करें, उसके बाद इमाम के साथ खड़े हो जाएँ।

३- फिर दूसरी रकअ़त में इमाम 'अल्हम्दु' और 'सूर:' पढ़ने के बाद अल्लाहु अकबर तीन बार कहेगा और फिर हर बार कानों तक हाथ उठा कर छोड़ देगा, पीछे पढ़ने वाले भी ऐसा ही करें।

४- चौथी बार जब 'अल्लाहु अकबर' इमाम कहे तो बिना हाथ उठाये तुरन्त रुकूअ़ में चले जाएँ।

५- बाक़ी दूसरी नमाज़ों की तरह रुकूअ़ व सज्दे करें।

६- सलाम फेरने के बाद इमाम ख़ुत्ब: पढ़ेगा जिसका सुनना सुन्नत है। उस वक़्त ख़ामोशी से अपनी जगह बैठे रहें कोई बात न करें जब इमाम ख़ुत्ब: ख़त्म करके दुआ मांगे, तो मुक़्तदी भी दुआ मांगें।

क़ज़ा नमाज़ों का बयान

क़ज़ा नमाज़ का हुक्म-

(१) फ़र्ज़ नमाज़ की क़ज़ा फ़र्ज़ है और वाजिब नमाज़ यानी वित्र की क़ज़ा वाजिब है।

(२) नज़र और मन्नत मानी हुई नमाज़ की क़ज़ा भी वाजिब है।

(३) नफ़्ल नमाज़ शुरु कर देने के बाद तोड़ने पर वह वाजिब हो जाती है,अगर किसी वजह से नफ़्ल नमाज़ फ़ासिद हो जाए या शुरु कर देने के बाद किसी वजह से नमाज़ तोड़नी पड़ जाए तो उस की क़ज़ा वाजिब है।

(४) सुन्नते मुअक्किदह और नवाफ़िल की क़ज़ा नहीं है, अल्बत्ता फ़ज्र की सुन्नतें चूंकि बहुत अहम और ह़दीस में उन की बहुत ताकीद आई है इसलिए

उन का हुक्म यह है कि अगर फ़ज्र की फ़र्ज़ और सुन्नत दोनों क़ज़ा हो गई हों तो ज़वाल से पहले-पहले दोनों की क़ज़ा पढ़ी जाए, और ज़वाल के बाद क़ज़ा पढ़ने की सूरत में सिर्फ़ फ़र्ज़ पढ़ ले और सुन्नतें रह गईं हों तो सूरज निकल आने के बाद ज़वाल से पहले पढ़ी जा सकती हैं, ज़वाल के बाद नहीं। उसके अलावा कोई सुन्नत या नफ़्ल नमाज़ वक़्त पर न पढ़ी जा सके तो उस की क़ज़ा वाजिब नहीं है।

(५) ज़ुह्र की वह सुन्नतें जो फ़र्ज़ से पहले पढ़ी जाती हैं किसी वजह से न पढ़ी जा सकी हों तो फ़र्ज़ों के बाद पढ़ी जा सकती हैं, इन सुन्नतों को फ़र्ज़ के बाद दो सुन्नतों से पहले पढ़ना भी जायज़ है और बाद में भी सही है, अल्बत्ता ज़ुह्र का वक़्त ख़त्म होने के बाद उन की क़ज़ा वाजिब नहीं है।

क़ज़ा नमाज़ के मसायल व हिदायात

(१) किसी मजबूरी और माज़ूरी के बग़ैर बिलावजह नमाज़ क़ज़ा करना बहुत बड़ा गुनाह है। जिस के लिए ह़दीस में सख़्त वअ़ीद आई हैं अगर ग़फ़लत और बेशुऊरी में भी कभी ऐसी कोताही हो गई हो, तो सच्चे दिल से तौबः करनी चाहिए और आइन्दा के लिए अल्लाह से उसे इस्लाहे हाल का पुख़्ता अ़हद करना चाहिए।

(२) अगर किसी उ़ज़्र और मजबूरी की वजह से कभी नमाज़ क़ज़ा हो जाए तो उस की क़ज़ा पढ़ने में टाल-मटोल न करना चाहिए, बल्कि जितनी जल्द मुम्किन हो क़ज़ा पढ़ लेनी चाहिए। बिलावजह ताख़ीर करना गुनाह है, और फिर ज़िन्दगी का भी क्या एतिबार हो सकता है कि मौक़ा न मिले और आदमी उस ह़ाल में ख़ुदा के हुज़ूर पहुँचे कि उस के सर यह गुनाह भी हो कि मौक़ा मिलने के बावजूद उस ने ताख़ीर की और क़ज़ा नमाज़ न पढ़ सका।

(३) अगर किसी वक़्त कई लोगों की नमाज़ क़ज़ा हो जाए, जैसे- इज्तिमाई सफ़र के दौरान वक़्त पर नमाज़ अदा करने का मौक़ा न मिल सके, या किसी मोह़ल्ले में कोई ह़ादसा पेश आ जाए और सारे लोगों की नमाज़ क़ज़ा हो जाए, या कुछ लोग सोते रह जायें और सब की नमाज़ क़ज़ा हो जाए तो

इस सूरत में सब को यह नमाज़ जमाअ़त के साथ क़ज़ा पढ़नी चाहिए। अगर सिर्री नमाज़ क़ज़ा हुई हो तो क़ज़ा जमाअ़त में सिर्री क़िरात होनी चाहिए और अगर जहरी नमाज़ क़ज़ा हुई हो तो जहरी क़िरात होनी चाहिए।

(४) किसी अकेले आदमी की नमाज़ क़ज़ा हो जाए तो बेहतर यह है कि वह ख़ामोशी से घर में क़ज़ा पढ़ ले, अगर ग़फ़लत से क़ज़ा हुई हो तो गुनाह है और गुनाह को लोगों पर ज़ाहिर करना गुनाह है, अगर किसी मजबूरी की वजह से क़ज़ा हुई हो तब भी लोगों पर उस का इज़हार करना मअ़यूब और मकरुह है।

(५) क़ज़ा नमाज़ पढ़ने का कोई वक़्त मुक़र्रर नहीं है, जब भी याद आए और मौक़ा हो तो फ़ौरन क़ज़ा पढ़ लेनी चाहिए। हाँ अगर ममनूअ़ या मकरुह वक़्त याद आए तो इन्तिज़ार करना चाहिए जब ममनूअ़ या मकरुह वक़्त निकल जाए तो उस वक़्त नमाज़ पढ़नी चाहिए।

(६) अगर कई वक़्त की नमाज़ें क़ज़ा हो गईं हों, तो उन की क़ज़ा में देर न की जाए बल्कि जहाँ तक हो सके जल्दी क़ज़ा पढ़ लेनी चाहिए। अगर मुम्किन हो तो एक ही वक़्त में सारी क़ज़ा नमाज़ें पढ़ ली जाएँ, यह भी ज़रुरी नहीं है, कि अ़स्र की क़ज़ा अ़स्र के वक़्त पढ़ी जाए और ज़ुह्र की क़ज़ा ज़ुह्र के वक़्त पढ़ी जाए बल्कि जब भी मौक़ा मिले एक वक़्त में कई-कई नमाज़ें पढ़ कर अपनी क़ज़ा नमाज़ें पूरी कर लेनी चाहिए।

नफ़्ल नमाज़ों का बयान

१- नमाज़े तहज्जुद
२- नमाज़े इश्राक़
३- नमाज़े चाश्त
४- नमाज़े तौबः
५- नमाज़े तस्बीह़
६- नमाज़े अव्वाबीन
७- नमाज़े ह़ाजत
८- नमाज़े इस्तिस्क़ा
९- नमाज़े कुसूफ़
१०- नमाज़े ख़ुसूफ़
११- नमाज़े इस्तिख़ारः
१२- तह़ीयतुल वुज़ू
१३- तह़ीयतुल मस्जिद

नमाज़े तहज्जुद

तहज्जुद की नमाज़ का वक़्त आधी रात के बाद से सुबह सादिक़ से पहले-पहले तक रहता है। दो या चार रकअ़त नफ़्ल की नियत करके बारह रकअ़त तक पढ़ सकते हैं।

नमाज़े इशराक़

जब सूरज निकलकर बुलन्द हो जाए यानी सूरज निकलने के लगभग बीस मिनट बाद से दो तीन घंटे तक लगभग दो-दो रकअ़त नफ़्ल की नियत से चार रकअ़त पढ़ने को इशराक़ की नमाज़ कहते हैं।

नमाज़े चाश्त

दिन का तिहाई हिस्सा गुज़रने के बाद चाश्त का वक़्त शुरू होता है और ज़वाल तक उसका वक़्त रहता है, जो दो से छः रकअ़त तक नफ़्ल पढ़ने को चाश्त की नमाज़ कहते हैं।

नमाज़े अव्वाबीन

मग़्रिब की नमाज़ के बाद दो-दो रकअ़त करके छः रकअ़त या और कम या ज़्यादा रकअ़तें पढ़ने को अव्वाबीन कहते हैं।

नमाज़े तौबः

अगर कोई गुनाह हो जाए तो दो रकअ़त नफ़्ल नमाज़ पढ़कर अल्लाह के सामने ख़ूब रो-रो कर माफ़ी मांगे, और उस गुनाह को कभी न करने का पक्का इरादा करें।

नमाज़े ह़ाजत

दुआ़

लाइला-ह इल्लल्लाहुल्ह़लीमुल्करीम, لَآ اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰـهُ الْحَلِيْمُ الْكَرِيْمُ-

सुब्ह़ानल्लाहि रब्बिल् अ़र्शिल अ़ज़ीम سُبْحَانَ اللّٰهِ رَبِّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ-

वल्ह़म्दुलिल्लाहिरब्बिल आ़लमीन وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ-

अस्अलुका मुअ़जिबाति रह़मतिका व اَسْئَلُكَ مُوجِبَاتِ رَحْمَتِكَ

अ़ज़ाइमा मग़्फ़िरतिका वल्ग़नीमता मिन وَعَزَائِمَ مَغْفِرَتِكَ وَالْغَنِيْمَةَ مِنْ كُلِّ

कुल्लि बिर्र, वस्सलामता मिन कुल्लि بِرٍّ وَّالسَّلَامَةَ مِنْ كُلِّ اِثْمٍ لَا تَدَعْ

इस्म, ला तदअ़ ली, ज़म्बन इल्ला لِىْ ذَنْبًا اِلَّا غَفَرْتَهُ وَلَا هَمًّا اِلَّا

ग़फ़रतहु, वला ह़म्मन इल्ला फ़र्जतहु, فَرَجْتَهُ وَلَا دَيْنًا اِلَّا قَضَيْتَهَا وَلَا

वला दैनन इल्ला क़ज़ैतहा, वला ह़ाजतन حَاجَةً هِىَ لَكَ رِضًا اِلَّا قَضَيْتَهَا يَا

हिया लका रिज़न, इल्ला क़ज़ैतहा या اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ-

अर्ह़मर्राह़िमीन।

अर्थ-

"अल्लाह के सिवा कोई मअ़बूद नहीं वही ह़लीम व करीम अल्लाह पाक है। जो अ़र्शे अ़ज़ीम का रब है, और सब तअ़रीफ़ें अ़ल्लाह ही के लिए हैं। ऐ अल्लाह! मैं तुझसे तेरी रह़मत को वाजिब करने वाली चीज़ों का और उन चीज़ों का ख़याल करता हूँ जो तेरी मग़्फ़िरत को ज़रूरी कर दे और हर भलाई में अपना हिस्सा, और हर गुनाह से सलामती चाहता हूँ। ऐ अरह़मर्राह़िमीन! मेरा कोई गुनाह बख़्शे बिना और कोई रंज दूर किये बिना और कोई ह़ाजत, जो तुझे पसंद हो पूरा किए बिना न छोड़। या अरह़मर्राह़िमीन (ऐ बहुत रह़म करने वाले)।"

नमाज़े तस्बीह़

पहले चार रकअ़त नफ़्ल की नियत बांधकर सना (सुब्ह़ानकल्ला) पढ़ने के बाद पन्द्रह बार यह शब्द कहें।

सुब्हानल्लाहि, वल् हम्दुलिल्लाहि, वला इला-ह-इल्लल्लाहु, वल्लाहु अ कबर। سُبْحَانَ اللهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَاللهُ اَكْبَرُ

अर्थ-

"अल्लाह पाक है और मैं अल्लाह की हम्द (तअ़रीफ़) बयान करता हूँ और अल्लाह के सिवा कोई मअ़बूद नहीं और अल्लाह सबसे बड़ा है।"

फिर 'अअ़ूजुबिल्लाहिमिनश्शैतानिर्रजीम' पढ़ने के बाद 'बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम' पढ़ें, और 'अल्हम्दु शरीफ़' पढ़ने के बाद एक बड़ी सूरः पढ़ें, फिर दोबारा खड़े-खड़े ही दस बार वही तस्बीह़ (सुब्हा) पढ़ें। इस तरह 'पच्चीस' बार हुई।

फिर रुकूअ़ करें उसमें भी 'सुब्हान रब्बियल अ़ज़ीम' के बाद दस बार पढ़ें। फिर रुकूअ़ से उठें तब भी दस बार पढ़ें। फिर पहले सज्दे में भी दस बार, फिर दोनों सज्दों के दर्मियान में भी दस बार, फिर दूसरे सज्दे में भी दस बार पढ़कर खड़े हो जाएँ। इस तरह पच्हत्तर बार यह तस्बीह़ हुई, इसी तरह चारों रकअ़त में ३०० बार होनी चाहिए।

इस नमाज़ को मकरुह वक़्त के अतिरिक्त कभी भी पढ़ सकते हैं।

नमाज़े इस्तिस्का का बयान

अगर बारिश न हो (सूखा पड़ जाए) तो दो रकअ़त नफ़्ल नमाज़ पढ़कर तौबः व माफ़ी मांग कर दुआ़ करें। जिसका तरीक़ा इस प्रकार है-

दो रकअ़त नफ़्ल नमाज़ की नियत से इमाम नमाज़ पढ़ाएगा जिसमें गाँव या शहर के सभी लोग शामिल होंगे फिर नमाज़ के बाद इमाम ख़ुत्बः देगा और अपनी चादर (रूमाल) को उल्टे एक सिरे से दूसरे सिरे की तरफ़। फिर अल्लाह से माफ़ी मांगे और बारिश की दुआ़ करे।

नमाज़े कुसूफ़ का बयान

सूरज ग्रहण के वक़्त जो नमाज़ पढ़ी जाती है उसे कुसूफ़ की नमाज़ कहते हैं। यह दो रकअ़त नफ़्ल नमाज़ पढ़ी जाती है। इमाम के पीछे पढ़ें अथवा ख़ुद

पढ़ें इसका तरीक़ा इस प्रकार है:-

जब सूरज ग्रहण हो तो इमाम दो रकअ़त नफ़्ल नमाज़ इस तरह पढ़ाये कि किरअ़त ख़ूब देर तक करे और फिर नमाज़ को ख़त्म करके दुआ़ करे, यहाँ तक कि ग्रहण ख़त्म हो जाए।

नमाज़े ख़ुसूफ़ का बयान

नमाज़े ख़ुसूफ़ चाँद ग्रहण पर पढ़ी जाने वाली नमाज़ को कहते हैं यह नमाज़े कुसूफ़ की तरह पढ़ी जाती है। अन्तर केवल यह है कि जमाअ़त से नहीं पढ़ी जाती, बल्कि दो रकअ़त नफ़्ल की नियत से अलग-अलग पढ़ी जाती है।

नमाज़े इस्तिख़ारः का बयान

इस्तिख़ारः नमाज़ उस वक़्त पढ़ी जाती है जब किसी काम को करने या न करने में शक हो, तो पहले दो रकअ़त नफ़्ल नमाज़ पढ़ें, फिर यह दुआ़ करके सो जाएँ जिसकी ख़ास दुआ़ यह है।

अल्लाहुम-म इन्नी अस्तख़ीरूका, बिअ़िल्मिका, वस्तक्दिरूका, बिकुदरतिका, वअस्अलुका मिनफ़ज़लिकाल् अ़ज़ीमि, फ़इन्नक तक़्दि रु, वला अक़्दिरु, व तअ़लमु वला अअ़लमु, वअन्ता अल्लामुल गुयूब, अल्लाहुम-म-इन कुन्ता, तअ़लमु अन्ना हाज़ल अमूर, ख़ैरन ली फ़ी दीनी, व मआ़शी वआ़क़िबति अमरी, फ़क़्दिरहु ली, व यस्सिरहु ली, सुम-म बारिक ली फ़ीहि, वइन कुन्ता तअ़लमु अन्न हाज़ल

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْتَخِيْرُكَ بِعِلْمِكَ وَاَسْتَقْدِرُكَ بِقُدْرَتِكَ وَاَسْئَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ الْعَظِيْمِ فَاِنَّكَ تَقْدِرُ وَلَآ اَقْدِرُ وَتَعْلَمُ وَلَآ اَعْلَمُ وَاَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ اَللّٰهُمَّ اِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ اَنَّ هٰذَا الْاَمْرَ خَيْرٌ لِّیْ فِیْ دِيْنِیْ وَ مَعَاشِیْ وَعَاقِبَةِ اَمْرِیْ فَاقْدِرْهُ لِیْ وَيَسِّرْهُ لِیْ ثُمَّ بَارِكْ لِیْ فِيْهِ۔ وَاِنْ كُنْتَ

अम्रा शर्रुन ली, फ़ी दीनी व मआ़शी व आ़क़िबति अमरी, फ़अस्रिफ़हु अन्नी वस्रिफ़नी अ़न्हु वक़दिरलियल ख़ैरा हैसु काना सुम्मा अरज़ी बिहि

تَعْلَمُ اَنَّ هٰذَا الْاَمْرَ شَرٌّ لِّیْ فِیْ دِیْنِیْ وَمَعَاشِیْ وَعَاقِبَةِ اَمْرِیْ فَاصْرِفْهُ عَنِّیْ وَاصْرِفْنِیْ عَنْهُ وَاقْدِرْلِیَ الْخَیْرَ حَیْثُ کَانَ ثُمَّ اَرْضِنِیْ بِهٖ - (مشکوٰة)

अर्थ-

"या अल्लाह! मैं भलाई चाहता हूँ आप से आप के इ़ल्म के ज़रिये और कुदरत तलब करता हूँ आपसे आपके कुदरत की, और माँगता हूँ मैं आपसे आप के बड़े फ़ज़ल में से, क्योंकि आप क़ादिर हैं और मैं क़ादिर नहीं और आप आ़लिम हैं मैं आ़लिम नहीं, आप ग़ैब के जानने वाले हैं। ऐ अल्लाह! अगर आपके इ़ल्म में हो कि यह काम बेहतर है मेरे लिए, मेरे दीन में, और मेरी रोज़ी रोटी में, तो इसमें मेरे लिए बरकत दीजिए, और अगर आपके इ़ल्म में हो कि यह काम बुरा है मेरे लिए मेरे दीन और मेरी रोज़ी रोटी के लिए और मेरे अन्जामकार में तो हटा दीजिए इसको मुझसे और हटा दीजिए मुझको इससे और नसीब कर दीजिए मुझको भलाई जहाँ कहीं भी हो फिर राज़ी कर दीजिए मुझको उस पर।"

नमाज़ तह़ीयतुल वुज़ू

वुज़ू करने के बाद दो रकअ़त नफ़्ल नमाज़ तह़ीयतुल वुज़ू की नियत से पढ़ने को नमाज़ तह़ीयतुल वुज़ू कहते हैं।

नमाज़ तह़ीयतुल् मस्जिद

मस्जिद में दाख़िल होकर बैठने से पहले दो रकअ़त नमाज़ नफ़्ल की नियत से पढ़ने को नमाज़ तह़ीयतुल मस्जिद कहते हैं।

कुनूते नाज़िलः

जब इस्लाम और मुसलमानों पर कहीं ज़ुल्म हो रहा हो तो इस दुआ़ को

सुबह फ़ज्र नमाज़ की दूसरी रकअ़त में क़ौमः अर्थात रूकूअ़ के बाद सीधा खड़े होने के बाद इमाम तेज़ आवाज़ से इस दुआ़ को पढ़े और मुक़्तदी चुपके-चुपके आमीन कहें (अगर कोई अकेला पढ़ रहा हो तो वह भी पढ़ सकता है) दुआ़ के ख़त्म होने के बाद अल्लाहु अकबर कहकर सज्दः करें और नमाज़ पूरी करें।

दुआ़

अल्लाहुम्-महदिना फ़ी मन हदैता, व आ़फ़िना फ़ी मन आ़फ़ैता, व तवल्लना फ़ी मन तवल्लैत, व बारिक् लना फ़ी मा अ़त़ैता, वक़िना शर्र मा क़ज़ैत, फ़इन्नक तक़्ज़ी वला युक़्ज़ा अ़लैक, इन्नहु ला यज़िल्लु मव्वांलैत, व ला यअ़िज़्ज़ु मन आ़दैत, तबारक्त रब्बना व तआ़लैत, नस्तग़फ़िरूक वनतूबु इलैका, व सल्लल्लाहु अ़लन्निबीय्यि अल्लाहुम् मग़फ़िर लना व लिल्मुअ़मिनीन वल् मुअमिनाति वल्मुस्लिमीना वल्मुस्लिमाति, व अल्लिफ़ बैना कुलूबिहिम, व अस्लिह़ ज़ाता बैनिहिम, वन्सुरहुम अ़ला अ़दूव्विका व अ़दुव्विहिम,

اَللّٰهُمَّ اهْدِنَا فِیْ مَنْ هَدَیْتَ وَ عَافِنَا فِیْ مَنْ عَافَیْتَ وَتَوَلَّنَا فِیْ مَنْ تَوَلَّیْتَ وَبَارِكْ لَنَا فِیْ مَا اَعْطَیْتَ وَقِنَا شَرَّ مَا قَضَیْتَ فَاِنَّكَ تَقْضِیْ وَلَا یُقْضٰی عَلَیْكَ اِنَّهٗ لَا یَذِلُّ مَنْ وَّالَیْتَ وَلَا یَعِزُّ مَنْ عَادَیْتَ تَبَارَكْتَ رَبَّنَا وَتَعَالَیْتَ نَسْتَغْفِرُكَ وَنَتُوْبُ اِلَیْكَ وَصَلَّى اللّٰهُ عَلَى النَّبِیِّ اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلَنَا وَلِلْمُؤْمِنِیْنَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَالْمُسْلِمِیْنَ وَالْمُسْلِمَاتِ وَاَلِّفْ بَیْنَ قُلُوْبِهِمْ وَاَصْلِحْ ذَاتَ بَیْنِهِمْ وَانْصُرْهُمْ عَلٰی عَدُوِّكَ وَعَدُوِّهِمْ

अल्लाहुम-म अ़निल कफ़रतल्लज़ी यसुद्दूना अ़न सबीलिक, व युकज़्ज़िबूना रुसुलका व युक़ातिलूना औलियाअक, अल्लाहुम-म ख़ालिफ़ बैन कलिमतिहिम, व ज़लज़िल

اَللّٰهُمَّ الْعَنِ الْكَفَرَةَ الَّذِیْنَ یَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِیْلِكَ وَیُكَذِّبُوْنَ رُسُلَكَ وَیُقَاتِلُوْنَ اَوْلِیَآئَكَ - اَللّٰهُمَّ خَالِفْ بَیْنَ كَلِمَتِهِمْ وَزَلْزِلْ

अक़्दामहुम व अन्ज़िल बिहिम बअ़सकल्लज़ी ला तरूद्दुहु अनिल्क़ौमिल मुजरिमीन।

اَقْدَامَهُمْ وَاَنزِلْ بِهِمْ بَاسَكَ الَّذِىْ لَا تَرُدُّهٗ عَنِ الْقَوْمِ الْمُجْرِمِيْنَ -

औ़रत व मर्द की नमाज़ में अन्तर

नमाज़ के बेशतर अरकान अदा करने का तरीक़ा तो ख़वातीन के लिए भी वही है, अल्बत्ता ख़वातीन की नमाज़ में छः चीज़ों के अदा करने के तरीक़े में थोड़ा सा फ़र्क़ है और इसी फ़र्क़ की बुनियादी वजह यह तसव्वुर है कि नमाज़ में ख़वातीन के सतर और पर्दे का ज़्यादा से ज़्यादा लिहाज़ हो सके।

वह छः चीज़ें जिन के अदा करने में फ़र्क़ है यह हैं-

(१) तकबीरे तह़रीमा में हाथ उठाना-

औ़रत को हमेशा सर्दी हो या गर्मी चादर या दुपट्टे के अन्दर ही अन्दर तकबीरे तह़रीमा के लिए हाथ उठाना चाहिए। दुपट्टे वग़ैरह से हाथ बाहर न निकालना चाहिए, हाथ सिर्फ़ शानों तक उठाना चाहिए कानों तक न उठाना चाहिए।

(२) हाथ बाँधना-

औ़रत को हमेशा सीने पर हाथ बांधना चाहिए। सीने के नीचे नाफ़ पर न बाँधना चाहिए और दाहिने हाथ के अँगूठे और छोटी उंगली से बायें हाथ का गट्टा पकड़ने के बजाए सिर्फ़ दाहिने हाथ की हथेली बायें हाथ की हथेली की पुश्त पर रख देना चाहिए।

(३) रुकूअ़-

औ़रत को रुकूअ़ में सिर्फ़ इतना झुकना चाहिए कि दोनो हाथ घुटनों तक पहुँच जायें, और घुटनों को कुशादह उंगलियों से पकड़ने के बजाए सिर्फ़ मिली हुई होनी चाहिए।

(४) सज्दः-

औ़रत को सज्दे में पेट रानों से और बग़ल ज़ानू से मिला हुआ रखना चाहिए और कोहनियाँ और कलाई ज़मीन पर निकलना चाहिए और दोनो पैरों को खड़ा न रखना चाहिए बल्कि गिरा लेना चाहिए।

(५) क़अ़दः और जल्सा-

क़अ़दः या जल्से में दोनों पैरो को दाहिनी जानिब निकाल कर बैठना चाहिए कि दाहिनी रान बायीं रान पर आ जाए और दाहिनी पिंडली बाईं पिंडली पर रहे।

(६) क़िरात-

औ़रत को हमेशा आहिस्ता आवाज़ में क़िरात करनी चाहिए किसी नमाज़ में भी उन को बुलन्द आवाज़ में क़िरात करने की इजाज़त नहीं है।

(१) औ़रतें तकबीरे तहरीमा में दोनों हाथ कन्धे तक उठाएँ लेकिन दुपट्टा से हाथों को बाहर न निकालें।
(२) औ़रत सीने पर हाथ बांधे, हाथ की हथेली बायें हाथ की हथेली की पुश्त पर रखे मर्दो की तरह छिंगुलियाँ और अंगूठे से गट्टे को न पकड़ें और दोनों बाज़ुओं को पहलू से मिलाए रखें।
(३) रुकूअ़ में कम झुकें और रूकूअ़ में दोनों हाथ की उंगलियाँ मिलाकर घुटनों पर रखें मर्दो की तरह उंगलियां फैलाकर न पकड़ें।
(४) सज्दः में पैर खड़ा न करें बल्कि दाहिने तरफ़ निकाल दें और खूब सिमट कर और दब कर सज्दः करें कि पेट दोनों रानों से और बाज़ू दोनों पहलुओं से मिला दें।
(५) क़अ़दः में बायें तरफ़ बैठें और पैर दाहिने तरफ़ निकालें।
(६) क़अ़दः में दोनों हाथ रान पर उंगलियां मिलाकर रखें।
(७) औ़रत किसी नमाज़ को तेज़ आवाज़ से न पढ़े।
(८) औ़रतों पर नमाज़े जुमअः फ़र्ज़ नहीं।
(९) औ़रतों पर नमाज़े ई़दैन वाजिब नहीं।

(१०) औ़रत केवल औ़रतों की ही इमामत कर सकती है (यद्यपि औ़रतों की जमाअ़त मकरुह तन्ज़ीही है।)

(११) औ़रत अगर इमाम बनेगी तो उसी लाइन में खड़ी होगी आगे नहीं।

सज्द-ए-सह्व का बयान

सह्व के माने हैं भूल जाना। नमाज़ में भूले से कुछ कमी और ज़्यादती हो जाने से जो ख़राबी आ जाती है उस की तलाफ़ी के लिए नमाज़ के आख़िरी कअ़दे में दो सज्दे करना वाजिब हैं। उन सज्दों को सज्द-ए-सह्व कहते हैं।

सज्द-ए-सह्व का तरीक़ा

नमाज़ के आख़िरी क़अ़दे में "अत्तहीय्यातु" पढ़ लेने के बाद दाहिनी जानिब सलाम फेरे, और "अल्लाहु अकबर" कहकर सज्दे में जाए, इत्मिनान से सज्दः करे फिर "अल्लाहु अकबर" कहकर सज्दे से उठे इत्मिनान से बैठे और फिर अल्लाहु अकबर कहकर सज्दे में जाए, इत्मिनान से सज्दः करे फिर "अल्लाहु अकबर" कहकर सज्दे से उठे और क़अ़दे में बैठ जाए, और ह़स्बे मअ़मूल "अत्तहीय्यातु" दुरुद शरीफ़ और दुआ़ पढ़ कर दोनों तरफ़ सलाम फेरे।

वह सूरतें जिन में सज्द-ए-सह्व वाजिब होता है

(१) नमाज़ के वाजिबात में से कोई वाजिब भूले से छूट जाए, जैसे- सूरः फ़ातिह़ा पढ़ना भूल जाए या सूरः फ़ातिह़ा के बाद कोई सूरत मिलाना भूल जाए वग़ैरह।

(२) इनके अदा करने में कुछ ताख़ीर हो जाए, चाहे ताख़ीर भूले से हो जाए या कुछ सोचने की वजह से जैसे- कोई शख़्स सूरः फ़ातिह़ा पढ़ने के बाद ख़ामोश खड़ा रहे और फिर कुछ वक़्फ़े के बाद कोई सूरत पढ़े।

(३) किसी फ़र्ज़ के अदा करने में ताख़ीर हो जाए या किसी फ़र्ज़ को मुक़द्दम कर दिया जाए, जैसे क़िरत करने के बाद रुकूअ़ करने में ताख़ीर हो जाए या कोई रुकूअ़ से पहले सज्दे में चला जाए। (यहाँ ताख़ीर से मुराद इतनी देर का वक़्फ़ा है, जिस में आदमी एक सज्दे या एक रुकूअ़ कर सके।)

(४) किसी फ़र्ज़ को मुकर्रर अदा कर दिया जाए, जैसे- दो रुकूअ़ कर लिए जाएँ।

(५) किसी वाजिब की कैफ़ियत बदल दी जाए, जैसे सिर्री नमाज़ों में बुलन्द आवाज़ से क़िरात कर ली जाए या जहरी नमाज़ों में आहिस्ता क़िरात कर ली जाए, जैसे- ज़ुह़ व अ़स्र में बुलन्द आवाज़ से क़िरात कर ली, और मग़्रिब व अ़िशा या फ़ज्र में आहिस्ता क़िरात कर ली।

सज्द-ए-सह्व के मसायल

(१) नमाज़ के फ़रायज़ में से कोई फ़र्ज़ जानबूझकर छूट जाए, या सह्व हो जाए, तो नमाज़ फ़ासिद हो जाएगी। इसी तरह़ अगर कोई वाजिब जानबूझ कर छोड़ दिया गया तो भी नमाज़ फ़ासिद हो जाएगी, और सज्द-ए-सह्व कर लेने से नमाज़ सह़ी न होगी बल्कि नमाज़ दोबारा पढ़नी होगी।

(२) एक वाजिब छूट जाए या एक से ज़्यादा बहरह़ाल एक ही मर्तबा दो सज्दे करना काफ़ी हैं। यहाँ तक कि अगर नमाज़ के सारे वाजिब छूट जाएँ तब भी दो ही सज्दे काफ़ी हैं, दो से ज़्यादा सज्दः करना सह़ी नहीं है।

(३) अगर कोई भूले से ह़ालते क़ियाम में सूरः फ़ातिह़ा से पहले अत्तहीय्यातु पढ़ ले तो सज्द-ए-सह्व वाजिब न होगा। इसलिए कि फ़ातिह़ा से पहले ख़ुदा की ह़म्द व सना पढ़ी जाती है और अत्तहीय्यातु में भी ख़ुदा की ह़म्द है, हाँ अगर क़िरात के बाद या दूसरी रकअ़त में क़िरात से पहले या क़िरात के बाद अत्तहीय्यातु पढ़ ली जाए तो सज्द-ए-सह्व वाजिब होगा।

(४) अगर भूले से क़ौमा रह जाए या दोनों सज्दों के दर्मियान जल्सा रह जाए तो सज्द-ए-सह्व करना ज़रुरी है।

(५) अगर कोई शख़्स क़अदह ऊला करना भूल गया है और बैठने के बजाए उठ कर पूरी तरह़ खड़ा हो गया तो फिर याद आने पर न बैठे, बल्कि नमाज़ पूरी करके क़ाअ़दे के मुताबिक़ सज्द-ए-सह्व करे, और अगर पूरी तरह़ खड़ा न हो बल्कि सज्दे से क़रीब हो तो बैठ जाए, और इस सूरत में सज्द-ए-सह्व करने की ज़रूरत नहीं।

(६) अगर कोई दो या चार रकअ़त वाली फ़र्ज़ नमाज़ में क़अ़दह अख़ीरा भूल गया, या बैठने के बजाए उठ कर खड़ा हो गया, अब अगर उस को सज्दः करने से पहले याद आ जाए, तो बैठ कर नमाज़ पूरी कर ले और सज्द-ए-सह्व कर ले, सज्द-ए-सह्व कर लेने के बाद फ़र्ज़ नमाज़ दुरुस्त हो जाएगी। अगर सज्दः कर लेने के बाद याद आया कि क़अ़दह अख़ीर नहीं किया तो अब न बैठे बल्कि एक रकअ़त और मिलाकर चार या छह रकअ़त पूरी करे, और इस सूरत में सज्दः करने की ज़रुरत नहीं है, और यह रकअ़तें नफ़्ल क़रार पाएँगी, फ़र्ज़ नमाज़ दोबारा अदा करनी होगी, और अगर मग़्रिब के फ़र्ज़ों में भूल जाए तो फिर पाँचवी रकअ़त न पढ़े चौथी रकअ़त में बैठ कर नमाज़ पूरी कर ले, इसलिए कि नफ़्ल की रकअ़तें ताक़ नहीं होतीं, आप (सल्ल०) का इर्शाद हैः-

"नफ़्ल नमाज़ की रकअ़तें दो-दो हैं।" **(इल्मुल फ़िक़ा भाग-२ पेज नं० ११८)**

(७) अगर सूरः फ़ातिह़ा पढ़ना भूल जाए या दुआ़-ए-क़ुनूत पढ़ना भूल जाए या **"अत्तह़ीय्यातु"** पढ़ना भूल जाए या ईदुल्-फ़ित्र या ईदुल्-अज़्ह़ा की ज़ायद तकबीरें भूल जाए तो सज्द-ए-सह्व करना वाजिब है।

(८) अगर सूरः फ़ातिह़ा के बाद सूरत मिलाना भूल जाए, या सूरत पहले पढ़ ली और सूरः फ़ातिह़ा बाद में पढ़े तो सूरः फ़ातिह़ा के बाद फिर कोई सूरत पढ़े और आख़िरी क़अ़दह में लाज़िमन सज्द-ए-सह्व करे।

(९) अगर फ़र्ज़ नमाज़ की पहली दो रकअ़तों में या एक रकअ़त में सूरत मिलाना भूल जाए तो बाद की रकअ़तों में सूरत मिला ले और सज्द-ए-सह्व करके नमाज़ पूरी करे।

(१०) अगर सुन्नत या नफ़्ल नमाज़ की किसी रकअ़त में सूरत मिलाना भूल जाए तो सज्द-ए-सह्व करना लाज़िम है।

सज्द-ए-सह्व कब वाजिब होता है

किसी वाजिब के छूट जाने से या किसी फ़र्ज़ को उसकी जगह से हटा कर पहले कर देने या किसी फ़र्ज़ को दोबारा अदा करने से जैसे- दो रुकूअ़ कर दिये

इन सब सूरतों में सज्द-ए-सह्व वाजिब हो जाता है। अगर भूले से ऐसा हुआ हो लेकिन अगर जानबूझ कर ऐसा किया है तो सज्द-ए-सह्व से काम न चलेगा बल्कि नमाज़ दोहरानी वाजिब होगी।

सज्द-ए-सह्व इन सूरतों में वाजिब होता है-

(१) फ़र्ज़ नमाज़ की पहली रकअ़त या दूसरी रकअ़त या इन दोनों रकअ़तों में सूरः फ़ातिह़ा छूट जाने या सूरः फ़ातिह़ा दोबारा पढ़ जाने से।

(२) नमाज़े वाजिब या नमाज़े सुन्नत या नफ़्ल की किसी भी रकअ़त में सूरः फ़ातिह़ा छूट जाने से।

(३) सूरः फ़ातिह़ा से पहले सूरः पढ़ जाने से।

(४) फ़र्ज़ नमाज़ की तीसरी और चौथी रकअ़त के अ़लावह हर नमाज़ की किसी भी रकअ़त में सूरः छूट जाने से।

(५) किसी रकअ़त में दो रुकूअ़ या तीन सज्दे कर लेने से।

(६) पहला क़ाइदा या आख़िरी क़ाइदा में तशहहुद यानी अ़त्तह़ीय्यातु छूट जाने से।

(७) पहला क़ाइदा में अ़ब्दहू व रसूलुह के बाद दुरूद शरीफ़ अल्लाहुम्म सल्लि अ़ला मुह़म्मदिन तक पढ़ जाने से। या इतनी देर ख़ामोश बैठे रहने से।

(८) इमाम को जिन रकअ़तों में ज़ोर से क़िरअ़त मस्नून है उनमें आहिस्ता पढ़ जाने से।

(९) इसी तरह जिन रकअ़तों में इमाम को आ़हिस्ता पढ़ना चाहिए उसमें ज़ोर से क़िरअ़त पढ़ने से।

(१०) किरअ़त में भूल हो जाने से तीन मर्तबः सुब्ह़ानल्लाह कहने के बराबर सोच विचार में ख़ामोश रह जाने से, या इतनी देर तक सूरः फ़ातिह़ा पढ़ने के बाद कोई सूरः पढ़ने के लिए ख़ामोश रहने से।

(११) वित्र में दुआ़एँ कुनूत भूल जाने से।

(१२) पहला क़ाइदा छोड़कर तीसरी रकअ़त के लिए खड़े हो जाने से।

सज्द-ए-तिलावत का बयान

कुर्आ़न शरीफ़ में चौदह जगह ऐसी हैं जिनके पढ़ने व सुनने से सज्दः

करना वाजिब हो जाता है उसको सज्द-ए-तिलावत कहते हैं। लेकिन सत्तरहवें पारे के आख़िर में जहाँ सज्दः लिखा है, हन्फ़ी मस्लक में वहाँ सज्दः नहीं किया जाएगा।

सज्द-ए-तिलावत अदा करने का तरीक़ा यह है कि खड़े होकर तकबीर कहता हुआ एक सज्दः करे और फिर तकबीर कहता हुआ उठ जाए यह अफ़ज़ल तरीक़ा है लेकिन अगर बैठे-बैठे भी सज्दः कर ले तब भी हो जाएगा।

इसी तरह अगर नमाज़ में सज्दः की आयत तिलावत करे तो तिलावत के फ़ौरन बाद अल्लाहु अकबर कहता हुआ उठ कर सज्दः की आयत के बाद से कुर्आन शरीफ़ पढ़ना शुरू कर दे।

नोट- सज्द-ए-तिलावत की अदाएगी के लिए बदन, कपड़ा, जगह का पाक होना सतर ढांकना, क़िब्ला रुख़ होना सज्दः अदा करने की नियत करना और बावुज़ू होना शर्त है और जिन चीज़ों से नमाज़ फ़ासिद हो जाती है। उन सब चीज़ों से सज्द-ए-तिलावत भी फ़ासिद हो जाता है।

कुर्बानी करने की दुआ

जानवर को कअ़बः की ओर मुँह करके लिटाने के बाद यह दुआ पढ़ें।

इन्नी वज्जहतु वज्हिया, लिल्लज़ी फ़तरस् समावाति वल् अ़र्ज़ा ह़नीफ़ंव्वामा अना मिनल् मुश्रिकीन, इन्ना सलाती, वनूसुकी, व महूयाया व ममाती, लिल्लाहि रब्बिल् आ़लमीन, ला शरीकलहु, वबिज़ालिका उमिरतु वअना मिनल् मुस्लिमीन, अल्लाहुम्मा मिनका, व लका, बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अकबर

(कहकर ज़िब्ह़ करें, फिर यह पढ़ें)

اِنِّیْ وَجَّهْتُ وَجْهِیَ لِلَّذِیْ فَطَرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ حَنِیْفًا وَّمَآ اَنَا مِنَ الْمُشْرِکِیْنَ۔ اِنَّ صَلٰوتِیْ وَنُسُکِیْ وَمَحْیَایَ وَمَمَاتِیْ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ۔ لَا شَرِیْکَ لَهٗ وَبِذٰالِکَ اُمِرْتُ وَاَنَا مِنَ الْمُسْلِمِیْنَ۔ اَللّٰهُمَّ مِنْکَ وَلَکَ

بسم الله الله اكبر

अल्लाहुम-म-तक़ब्बलहु मिन्नी..... اَللّٰهُمَّ تَقَبَّلْهُ مِنِّیْ

(अगर किसी दूसरे की तरफ़ से करें तो मिन्नी की जगह मिन कहकर उसका नाम लें।)

कमा तक़ब्बल्ता, मिन ह़बीबिका मुह़म्मिदिवंवख़लीलिका इब्राहीमा अ़लैहिमस्सलातु वस्सलाम

كَمَا تَقَبَّلْتَ مِنْ حَبِيْبِكَ مُحَمَّدٍ وَّخَلِيْلِكَ اِبْرَاهِيْمَ عَلَيْهِمَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ۔

निकाह़ का ख़ुत्बः

अल्ह़म्दु लिल्लाहि नह़मदुह़, व नस्तअ़ीनुहू, वनस्तग़फ़िरूहू, वनुमिनु बिही वनतवक्कलु अ़लैहि, वनअूज़ु बिल्लाहि मिन शुरूरि अन्फ़ुसिना, व मिन सय्यिआति अअ़मालिना, मय्यहदिहिल्लाहु फ़ला मुज़िल्ल लहू, व मय्य युज़लिल्लहु फ़ला हादिया लहू, व नश्हदु अल्ला इलाह इल्लाहु वह़दहू ला शरीक लहू, वनशहदु अन्न मुह़म्मदन अ़बदुहू वरसूलुह।

अअूज़ू बिल्लाहि मिनश् शैत़ानिर्रजीम, बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम, या अइ्युहन्ननासुत्तकू, रब्बकुमुलज़्ज़ी ख़लक़कुम मिन नफ़्सिंव वाह़िदः, व ख़लक़ मिन्हा ज़ौजहा, व बस्सा मिन्हुमा रिजालन कसीरव्वनिसाआ, वत्तकुल्लाहलज़्ज़ी तसाअ़लून बिही वल्अर्ह़ाम इन्नल्लाह कान अ़लैकुम रक़ीबा। या अइ्युहल्लज़ीन आमनुत्तकुल्लाहा हक़्क़ तुक़ातिही वला तमू तुन्ना इल्ला व अन्तुम मुस्लिमून। या अय्युहल्लज़ीना आमनुत्तकुल्लाहा, वकूलू क़ौलन सदीदा युस्लिह़ लकुम अअ़मालकुम वयग़्फ़िरलकुम जुनूबकुम व मय्युतिइल्लाहा व रसूलहू फ़क़द फ़ाज़ फ़ौज़न अ़ज़ीमा। व क़ाला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम, "अन्निकाहु मिन सुन्नति फ़मन रग़िबा अ़न सुन्नति फ़लैसा मिन्नी।"

जुमअ़ः का ख़ुत्बः

अल्ह़म्दु लिल्लाहिल्लज़ी अन्ज़ला अ़लाअ़ब्दिहिल्किताबा, व लम् यज्अ़ल लहू अ़िवजा, वनश्हदु अल्लाइलाह इल्लल्लाहु, वह़दहु, ला शरीक लहू, व नश्हदु अन्ना

मुह़म्मदन अ़ब्दुहू व रसूलहु, इन्नद्दुनिया ख़ज़िरतुन व हुलूवतुन व इन्नी मुस्तख़्लिफ़ुकुम फ़ीहा फ़नाज़िरून कैफ़ा तअ़मलून, फ़त्तकुल्लाहा ह़क़्क़ा तुक़ातिही वला तमूतुन्ना इल्ला व अन्तुम मुस्लिमून। सुब्ह़ाना रब्बिका रब्बिल् अ़िज़्ज़ति अ़म्मा यस्फ़ून व सलामुन अ़लल्मुर्सलीन वल्ह़म्दु लिल्लाहि रब्बिल् आ़लमीन।

दूसरा ख़ुत्बः-

अल्ह़म्दु लिल्लाहि वह़दहु ला शरीक लहू, वनशहदु अन्ना मुह़म्मदन अ़ब्दुहु व रसूलुह, "इन्नल्लाह वमालाइका तहू युसल्लून अलन्नबिय्य, या अइ्युहल्लज़ीना आमनू सल्लू अ़लैहि वसल्लिमू तस्लीमा", अल्लाहुम्मा सल्लिअ़ला मुह़म्मिदन अफ़ज़ला सलवातिक, अददा मअ़लूमातिक, व अ़ला आहिदी व अस्ह़ाबिही व अज़वाजिही अजमअ़ीन, ख़ूसूसन अ़ला अफ़ज़लिन्नासि बअ़दल अम्बियाअि अबीबक्र निस्सिद्दीक (रज़ि०) व उ़मर (रज़ि०) व अ़ली (रज़ि०) व उ़स्मान (रज़ि०) व ह़सन व हुसैन (रज़ि०) व कुल्लू बनातिन। रब्बिग़्फ़िरलना वलिइख़्वानिनलज़ीना सबक़ूना बिल् ईमान व अ़क़ीमुस्सलाह।

Writer at a glance

Mufti Muhammad Sarwar Farooqui Nadwi (*Aacharya*)

Name	:	**Muhammad Sarwar**
Father's name	:	**Mohd Haneef**
Educational Background.		
Basic	:	**Intermediate,** (Allahabad)
Higher Education	:	**M.A.** (Lucknow)
Arabic	:	**Almiat, Fazeelat & Iftah,** (Darul-Uloom- Nadwatul Ulama Lucknow (U.P.) India.
Islamic Tadreebi Course	:	**Jamia Islamiya Madina Munawarah** (Saudi Arabia)
Urdu	:	**Adeeb Kamil & Mua'llim**
Sanskrit	:	**Aacharya** (Banaras).
Computer skill	:	**P.G.D.C.A**
Major Research	:	**Qur'an and Fiqah,** Darul-Uloom Nadwatul-Ulama, Lucknow, U.P. (India)

Present Posts

President : ***Jamiat Payam-e-Amn,*** (Educational Society) lucknow, U.P. (India)

Rafiq Ilmi : ***Majlis Tahqeeqat (Islamic Research) Darul Uloom Nadwatul Ulama,*** **Lucknow,** U.P. (India)

Director : ***Markaz- ul-Tawheed Al-Islami*** lucknow, U.P. (India)

Mang. Director : **Jamia Dar-e-Arqam,** Fatehpur, Haswa, U.P. (India)

Manager : **Jamia Dar-e-Arqam** (Educational Society) Allahabad (India)

Chairman : **Arqum Model School,** Lucknow, U.P. (India) .

Gen. Secretary : ***All India, Jamiat Darul-Aml*** lucknow, U.P. (India)

Manager : ***Universal Peace Foundation*** lucknow, U.P. (India)

(मुफ़स्सिरे क़ुर्आन) मुफ़्ती मुहम्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी साहब द्वारा लिखित हिन्दी पुस्तकें

नाम	मूल्य
1. क़ुर्आन का पैग़ाम (क़ुर्आन मजीद का आसान हिन्दी अनुवाद)	300 रू.
2. क़ुर्आन का पैग़ाम (क़ुर्आन मजीद का आसान हिन्दी अनुवाद)	110 रू.
3. क़ुर्आन का पैग़ाम (क़ुर्आन मजीद का आसान हिन्दी अनुवाद)	80 रू.
4. क़ुर्आन का पैग़ाम (पारा अम्म अनुवाद और व्याख्या)	160 रू.
5. तफ़्सीर फ़ारूक़ी {भाग-1} (क़ुर्आन मजीद की हिन्दी तफ़्सीर पारा नं० 1 से 5 तक)	400 रू.
6. तफ़्सीर फ़ारूक़ी {भाग-2} (क़ुर्आन मजीद की हिन्दी तफ़्सीर पारा नं० 5 से 10 तक)	400 रू.
7. तफ़्सीर फ़ारूक़ी {भाग-3} (क़ुर्आन मजीद की हिन्दी तफ़्सीर पारा नं० 10 से 18 तक)	400 रू
8. तफ़्सीर फ़ारूक़ी {भाग-4} (क़ुर्आन मजीद की हिन्दी तफ़्सीर पारा नं० 19 से 25 तक)	400 रू.
9. तफ़्सीर फ़ारूक़ी {भाग-5} (क़ुर्आन मजीद की हिन्दी तफ़्सीर पारा नं० 26 से 30 तक)	400 रू.
तफ़्सीर फ़ारूक़ी (मुकम्मल सेट) (भाग 1 से 5 तक)	2000 रू
10. इस्लाम धर्म क्या है? (क़ुबूले हक़ के बाद इस्लामी कोर्स) कई भागो में	200 रू.
11. जिहाद, आतंकवाद और इस्लाम	120 रू.
12. हिन्दी पत्रकारिता और मीडिया लेखन	80 रू.
13. अन्तिम सन्देष्टा कहाँ, कब और कौन (Hard bound)	90 रू.
14. अन्तिम सन्देष्टा कहाँ, कब और कौन (Paper back)	80 रू.
15. जन्नत के हालात और जन्नती (क़ुर्आन व सुन्नत की रोशनी में)	80 रू.
16. कुफ़्र और शिर्क की हक़ीक़त (क़ुर्आन व सुन्नत की रोशनी में)	80 रू.
17. रसूलुल्लाह (सल्ल०) का हुलिया मुबारक और आप (सल्ल०) की सुन्नतें	80 रू.
18. हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की प्रमाणित जीवनी	200 रू.
19. अल्लाह के अधिकार और बन्दों के अधिकार (क़ुर्आन व हदीस की रौशनी में)	80 रू.
20. रसूलुल्लाह (सल्ल०) की बातें	110 रू.
21. सहाबा का इस्लाम और उसके बाद	60 रू.
22. इस्लामी शासन और शासक ऐतिहासिक दृष्टि से	60 रू.
23. अज़ान क्या है?	30 रू.
24. आओ नमाज़ की ओर	48 रू.
25. रोज़ः का हुक्म और उसके मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रोशनी में)	40 रू.
26. हज और उमरा का आसान तरीक़ा (क़ुर्आन व सुन्नत की रोशनी में)	30 रू.

नाम	मूल्य
27. ज़कात का हुक्म और उसके मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रोशनी में)	40 रू.
28. आपके सवालों का आसान हल (भाग एक)	60 रू.
29. झाड़, फूँक, जादू, टोना और तअ़वीज़,गंडे (शरीअ़त की रोशनी में)	40 रू.
30. इस्लाम की बुनियादी मालूमात (सवाल व जवाब की रोशनी में)	60 रू.
31. रसूलुल्लाह (सल्ल०) की सीरत (सवाल व जवाब की रोशनी में)	40 रू.
32. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की पाकीज़ह ज़िन्दगी	40 रू.
33. बीवी-शौहर की ज़िम्मेदारियाँ (शरीअ़त की रोशनी में)	40 रू.
34. आधुनिक हिन्दी व्याकरण और मीडिया लेखन	160 रू.
35. सूर-ए- फ़ातिह़ा की तफ़्सीर	30 रू.
36. तौह़ीद की ह़क़ीक़त (क़ुर्आन व सुन्नत की रोश्नी में)	40 रू.
37. पवित्र क़ुर्आन का सन्देश इन्सानी दुनिया के नाम	30 रू.
38. इस्लाम धर्म तलवार से फैला या सदाचार से	60 रू.
39. ग़ैर मुस्लिमों के साथ व्यवहार (ऐतिहासिक दृष्टि से)	60 रू.
40. मीरास की तक़्सीम	30 रू.
41. रसूलुल्लाह (सल्ल०) की बातें (अ़ज़माले ह़स्ना की रौशनी में)	60 रू.
42. लाइलाहा इल्लल्लाहु की गवाही	40 रू.
43. मोबाईल से सम्बन्धित मसायल (शरीअ़त की रोशनी में)	30 रू.
44. अल्लाह के प्यारे नबी (सल्ल०) एक नज़र में	20 रू.
45. सृष्टि का सृष्टा कौन?	30 रू.
46. प्राकृतिक नियम, ईशदूतों का धर्म और परलोक विश्वास	40 रू.
47. इस्लामी विरासत एक नज़र में	20 रू.
48. इस्लाम?	10 रू.

(मुफ़स्सिरे क़ुर्आन) मुफ़्ती मुहम्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी साहब द्वारा लिखित उर्दू पुस्तकें

49. आख़िरी रसूल कहाँ, कब और कौन?	140 रू.
50. ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) और जज़ीरे अ़रब	50 रू.
51. ग़ैर मुस्लिमों से तअ़ल्लुक़ात और मज़हबी आज़ादी	40 रू.
52. इस्लाम में ज़िज़्या, ख़िराज और ज़िम्मियों के अख़्तियारात	40 रू.
53. क़ुर्आन के मिसाली नमूने और लाज़वाल मोअ़जिज़ा	40 रू.

नाम	मूल्य
54. क़ुर्आन में इन्सान का मक़ाम और उस का अ़ला मक़्सद	**40** रू.
55. आ़माल को बातिल करने वाली चीज़ें और नियत की अहमियत	**40** रू.
56. इस्लामी क़ानूने विरासत और मीरास की तक़्सीम	**40** रू.
57. उम्मते मुह़म्मदिया की इ़ज़्ज़त का मेअ़यार और बनी इस्राईल	**40** रू.
58. कायनात के अ़जायबात और इन्सान का अल्लाह से तअ़ल्लुक़	**40** रू.
59. ग़ैर मुस्लिमों से दोस्ती या दुश्मनी (एतिराज़ के तनाज़ुर में)	**50** रू.
60. इस्लाम के ख़िलाफ़ इल्ज़ामात और उस की दअ़वत का असर	**50** रू.
61. इस्लाम में ग़ैर मुस्लिमों के ह़ुक़ूक़	**50** रू.
62. हिन्दू धर्म, फ़िर्क़े तन्ज़ीमें और इदारों का तआ़रूफ़	**90** रू.
63. ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) का ज़िक्र और मूर्तिपूजा की मुमानियत वेदों की दुनिया में।	**40** रू.
64. बौद्ध धर्म और इस्लाम	**40** रू.
65. कलिमा-ए-तय्यबः की ह़क़ीक़त और उस के तक़ाज़े	**80** रू.
66. ग़ैर मुस्लिमों में तरीक-ए-दअ़वत उस्लूबे अंबिया की रोशनी में	**80** रू.
67. अल्लाह तआ़ला का तआ़रुफ़ और कलिम-ए-शहादत के फ़ज़ायल	**70** रू.
68. क़ियामत तक के फ़ित्नें (रसूलुल्लाह (सल्ल०) की पेशीनगोई की रोशनी में)	**70** रू.
69. तलाक़ का इस्लामी तरीक़ा (क़ुर्आन व सुन्नत की रोशनी में)	**40** रू.
70. अल्लाह की तरफ़ से रिज़्क़ की तक़्सीम और कमज़ोर तब्क़े की किफ़ालत	**50** रू.
71. क़ुर्आन के मुताबिक़ दौलत का इस्तेमाल	**70** रू.
72. ज़कात और मसारिफ़े ज़कात (क़ुर्आन व सुन्नत की रोशनी में)	**40** रू.
73. रसलुल्लाह (सल्ल०) की सीरत (मुस्तनद क़ुतुबे सीरत की रोश्नी में)	**40** रू.
74. रसूलुल्लाह (सल्ल०) की सीरत के अनमोल मोती (सवाल व जवाब की रोशनी में)	**30** रू.
75. रसूलुल्लाह (सल्ल०) का हुलिया मुबारक और आप (सल्ल०) की सुन्नतें	**80** रू.
76. जन्नत के ह़ालात और जन्नत की नेअ़मतों का ज़िक्र	**80** रू.
77. कुफ़्र व शिर्क की ह़क़ीक़त (क़ुर्आन व सुन्नत की रोश्नी में)	**80** रू.
78. कुफ़्र शिर्क और फ़िस्क़ का ज़िक्र और सह़ाबा से मुतअ़ल्लिक़ अ़क़ीदा	**80** रू.
79. ज़बरदस्ती इस्लाम क़ुबूल करवाने की मुमानिअ़त	**60** रू.

नाम	मूल्य
80. दाढ़ी की अहमियत (शरीअ़त की रोशनी में)	**40** रू.
81. मदारिसे इस्लामिया के निसाब का तारीख़ी जायज़ा	**40** रू.
82. रोज़ः, तरावीह़, सद्क़ः और एतिकाफ़ के एह़काम व मसायल	**40** रू.
83. ह़ज और उ़मरा का मुकम्मल तरीक़ा (शरीअ़त की रोशनी में)	**40** रू.
84. मुसाफ़िर और सफ़र के मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**40** रू.
85. काग़ज़ी नोट और बैअ़ की ह़क़ीक़त	**40** रू.
86. इस्लामी क्विज़ (सवाल व जवाब की रोशनी में)	**50** रू.
87. तफ़्सीर का बुनियादी मअ़ख़ज़	**30** रू.
88. हिन्दुस्तान में क़ुर्आन के तर्जुमे की शुरुआ़त और चन्द तफ़ासीर का तआ़रुफ़	**30** रू.
89. इस्लाम में तिजारत का तरीक़ा (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**120** रू.
90. इस्लामी मआ़शियात का तक़ाबुली जायज़ा	**40** रू.
91. इस्लाम का ज़रई निज़ाम	**40** रू.
92. दौलत की पैदाईश और अतियाते क़ुदरत	**40** रू.
93. मुसलमानों के फ़िर्क़े और उनके अ़क़ायद	**80** रू.
94. इस्लाम में औ़रत का मक़ाम	**50** रू.
95. तअ़द्दुदे इज़्दिवाज और इस्लाम (मज़ाहिब आ़लिम की रौशनी में)	**60** रू.
96. ह़राम, ह़लाल और मुबाह चीज़ें	**30** रू.
97. ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) की सिफ़ात	**30** रू.
98. जहन्नम के ह़ालात और जहन्नमी	**60** रू.
99. मुस्तनद मस्नून दुआ़एँ	**20** रू.
100. इस्लाम की दअ़वत का असर इन्सानी दुनिया पर	**50** रू.
101. क़ुर्आनी आयात और इस्लामी मुआ़शरा	**30** रू.
102. अ़मालें ह़स्ना (क़ुर्आन व ह़दीस की रौशनी में)	**100** रू.
103. आख़िरत का अ़क़ीदा (क़ुर्आन व ह़दीस की रौशनी में)	**50** रू.
104. इख़्लास की फ़ज़ीलत (क़ुर्आन व ह़दीस की रौशनी में)	**50** रू.
105. दअ़वत की ज़िम्मेदारी (क़ुर्आन व ह़दीस की रौशनी में)	**50** रू.
106. ईदैन व क़ुर्बानी के मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**90** रू.
107. ख़ातिमुन्नबीईन (क़ुर्आन व ह़दीस की रौशनी में)	**90** रू.

नाम	मूल्य
108. जिन्नात और शैतान का ज़िक्र (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**80** रू.
109. नबियों की जीवनी (क़ुर्आन व ह़दीस की रौशनी में)	**100** रू.
110. ईमानियात, अ़क़ायद और नज़र से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**60** रू.
111. इ़ल्म से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**40** रू.
112. तहारत से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**40** रू.
113. ह़िफ़ाज़ते क़ुर्आन से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**40** रू.
114. नमाज़ व जमाअ़त से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**60** रू.
115. अ़ीदैन व जुमअ़ से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**50** रू.
116. तरावीह़ व एतिकाफ़ से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**50** रू.
117. सफ़र और सद्क़-ए-फ़ित्र से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**60** रू.
118. क़ुर्बानी से मुतअल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**60** रू.
119. तलाक़ व इद्दत और नफ़्क़ा से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**80** रू.
120. निकाह से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**60** रू.
121. ह़िबा व जहेज़ से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**40** रू.
122. वक़्फ़ से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**40** रू.
123. मस्जिद से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**80** रू.
124. तिजारत की मुख़्तलिफ़ क़िस्मों से मुतअ़ल्लिक मसायल(क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**40** रू.
125. वसीयत व मीरास से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**40** रू.
126. अज़ान व इक़ामत से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**40** रू.
127. तर्बियत, रज़ाअ़त व अ़क़ीक़ा से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**80** रू.
128. ज़कात से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**80** रू.
129. ह़ज से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**40** रू.
130. इमामत से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**40** रू.
131. क़िरत से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**40** रू.
132. सज्द-ए-तिलावत से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**40** रू.
133. इस्लामी पर्दा (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**80** रू.
134. मीरास से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**40** रू.

(मुफ़स्सिरे क़ुर्आन) मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी साह़ब की अ़रबी पुस्तकें

135. ग़ज़्व-ए-ह़ुनैन व तायफ़ फ़ी ज़ौविल् क़ुर्आन	**120** रू.
136. अल्हिन्दूसिया मुबादिओहा व अक़ाइदोहा, मुनज़्ज़िमातुहा व अहदाफ़ुहा	**140** रू.
137. ज़िक्र मुह़म्मदिन (सल्ल०) फ़िल् वेद	**80** रू.
138. सिफ़ातु रसूलिल्लाहि सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम	**80** रू.

(मुफ़स्सिरे क़ुर्आन) मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी साह़ब की अंग्रेज़ी पुस्तकें

139. मुह़म्मद दी लास्ट प्रोफ़ेट अन्डर दी शेड ऑफ़ वेद, उपनिषद ऐण्ड पुराण	**40** रू.
140. मुह़म्मद (सल्ल०) एण्ड स्टेटस आफ़ वरशिप	**30** रू.
141. बेसिक टीचिंग आफ़ इस्लाम	**80** रू.
142. दी स्वाड आफ़ इस्लाम	**40** रू.
143. अज़ान, ए कालिंग फ़ार ह्यूमेनिटी	**40** रू.
144. इस्लाम?	**10** रू.

(मुफ़स्सिरे क़ुर्आन) मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी साह़ब द्वारा अनुवाद की हुई पुस्तकें

145. मुन्तख़ब अह़ादीस (लेखक- ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद यूसुफ़ कान्धलवी रह०)	**60** रू.
146. क़ादियानियत नुबूवते मुह़म्मदी के ख़िलाफ़ बग़ावत (लेखक- इमामे ह़रम अब्दुल्लाह बिन अस्सुबय्यिल)	**40** रू.
147. अक़ीदतुल् वास्तिया (लेखक- अह़मद बिन अ़ब्दुल ह़लीम इब्ने तैमिया रह़०)	**60** रू.
148. सलासिले अरबअ़ (लेखक-ह़ज़रत मौलाना सैय्यद अबुल ह़सन अ़ली नदवी रह़०)	**30** रू.
149. दारे अरक़म का एह़सान इन्सानी दुनिया पर (लेखक- ह़ज़रत मौलाना सैय्यद अबुल ह़सन अ़ली ह़सनी नदवी रह़०)	**30** रू.
150. मानवता आज भी उसी चौखट की मुहताज़ है (लेखक- मौलाना मुह़म्मद ह़सनी रह़०)	**30** रू.
151. रमज़ान का तोह़फ़ा (लेखक- मौलाना मुह़म्मद राबेअ़ ह़सनी नदवी)	**20** रू.
152. यक्सॉं सिविल कोड और महिलाओं के अधिकार (लेखक- मौलाना मुह़म्मद राबेअ़ ह़सनी नदवी)	**20** रू.

नाम	मूल्य
153. मालिक व मख़्लूक़ श्रेष्ठ कौन? (विचारक- मुहम्मद मुस्तफ़ा क़ादरी) (तस्ह़ीह़ व तर्तीब- मु० मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी)	**30** रू.
154. यतीमों की किफ़ालत (लेखक-मुहम्मद आमिर सिद्दीक़ी नदवी)	**40** रू.
155. सूद से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**60** रू.
156. किरायेदारी से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**60** रू.
157. कारोबार में शिरकत से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**50** रू.
158. सुन्नत व नवाफ़िल से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**40** रू.
159. रोज़ः रुयते ह़िलाल से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**50** रू.
160. इल्म व उ़ल्मा से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**40** रू.
161. तक़्लीद व इज्तिह़ाद की शरई़ ह़ैसियत (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**50** रू.
162. सज्द-ए-सह्व के मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**40** रू.
163. बिद्अ़त की नहूसत से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**40** रू.
164. ह़ैज़ व निफ़ास से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**40** रू.
165. ग़ैर मुस्लिमों से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**60** रू.
166. दो सौ समाजी मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**60** रू.
167. इस्लाम के अ़दालती फ़ैसले (तारीख़ व सुन्नत की रौशनी में)	**60** रू.

किताबों के पढ़ने की तर्तीब (क्रम से)

इन्सान अपने इतिहास के हर दौर में यह सोचता रहा है कि वह स्वयं क्या है? वह कैसे पैदा हुआ और क्यों पैदा हुआ? फिर मरने के बाद उसके साथ क्या होगा। जिस धरती पर वह ज़िन्दगी गुज़ार रहा है उसे किसने बनाया, जिस आसमान के नीचे वह सांस ले रहा है और जिन माध्यमों को वह काम में लाता है उन सब चीज़ों को किसने बनाया। यह वह प्रश्न हैं जो इन्सानी इतिहास के हर जमाने में पैदा होते रहे और हर दौर के ज्ञानी वह बुद्धिजीवी और सन्देष्टा इनका जवाब देते रहे।

इन्हीं प्रश्नों के उत्तर के लिए हमारी पुस्तकें हर व्यक्ति के लिए लाभदायक हैं, परन्तु अलग-अलग योग्यता वालों के लिए उनकी योग्यता के अनुसार क्रमशः किताबों की सूची नीचे दी गयी है, जिसमें हमने अपनी पुस्तकों को चार प्रकार के लोगों में तक़्सीम (विभाजित) किया।

(1) पहले वह जो इस्लाम से अनभिज्ञ हैं।
(2) दूसरे वह जो इस्लाम के बारे में कुछ समझ चुके हैं।
(3) तीसरे दाअी हज़रात के लिए
(4) चौथे नौजवान मुसलमानों के लिए।

इस्लाम को समझने वालों के लिए तोहफ़ा

नाम	भाषा	मूल्य
(1) सृष्टि का सृष्टा कौन?	हिन्दी	30 रू.
1a. इस्लाम?	// //	10 रू.
1b. प्राकृतिक नियम, ईशदूतों का धर्म और परलोक विश्वास	// //	40 रू.
1c. लाइलाहा इल्लल्लाहु की गवाही	// //	40 रू.
1d. अज़ान क्या है?	// //	30 रू.

नाम	भाषा	मूल्य
(2) अन्तिम सन्देष्टा कहाँ, कब और कौन	हिन्दी	120 रू.
2a. इस्लामी शासन और शासक ऐतिहासिक दृष्टि से	// //	60 रू.
2b. कुफ़्र और शिर्क की हक़ीक़त (कुर्आन व सुन्नत की रोश्नी में)	// //	80 रू.
2c. तौहीद की हक़ीक़त (कुर्आन व सुन्नत की रोश्नी में)	// //	40 रू.
(3) जन्नत के हालात और जन्नती (कुर्आन व सुन्नत की रोश्नी में)	// //	80 रू.
3a. जहन्नम के हालात और जहन्नमी	// //	50 रू.
3b. ग़ैर मुस्लिमों के साथ व्यवहार (ऐतिहासिक दृष्टि से)	// //	60 रू.
3c. जिहाद, आतंकवाद और इस्लाम	// //	120 रू.
(4) इस्लाम धर्म क्या है? (कुबूले हक़ के बाद इस्लामी कोर्स) कई भागो में	// //	200 रू.
(5) कुर्आन का पैग़ाम (पारा अम्म अनुवाद और व्याख्या)	// //	160 रू.
(6) कुर्आन का पैग़ाम (कुर्आन मजीद का आसान हिन्दी अनुवाद)	// //	300 रू.
(7) तफ़्सीर फ़ारूक़ी (कुर्आन मजीद की हिन्दी तफ़्सीर पारा नं० 1 से 5 तक)		400 रू.
(8) इस्लाम धर्म तलवार से फैला या सदाचार से	// //	40 रू.
(9) रसूलुल्लाह (सल्ल०) का हुलिया मुबारक और आप (सल्ल०) की सुन्नतें		60 रू.
(10) पवित्र कुर्आन का सन्देश इन्सानी दुनिया के नाम	// //	30 रू.

कुबूले हक़ के बाद वालों के लिए तोहफ़ा

नाम	भाषा	मूल्य
1. लाइलाह इल्लल्लाह की गवाही	हिन्दी	50 रू.
2. सहाबा का इस्लाम और उसके बाद	// //	60 रू.
3. आओ नमाज़ की ओर	// //	40 रू.
4. इस्लाम धर्म क्या है? (कुबूले हक़ के बाद इस्लामी कोर्स) कई भागो में	// //	200 रू.
5. कुर्आन का पैग़ाम (पारा अम्म अनुवाद और व्याख्या)	// //	160 रू.
6. कुफ़्र व शिर्क की हक़ीक़त (कुर्आन व सुन्नत की रोश्नी में)	// //	80 रू.
7. तौहीद की हक़ीक़त (कुर्आन व सुन्नत की रोश्नी में)	// //	40 रू.
8. रसूलुल्लाह (सल्ल०) का हुलिया मुबारक और आप (सल्ल०) की सुन्नतें		80 रू.
9. जन्नत के हालात और जन्नत की नेअ़मतों का ज़िक्र	// //	60 रू.

नाम	भाषा	मूल्य
10. जहन्नम के ह़ालात और जहन्नमी	हिन्दी	**50** रू.
11. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की पाकीज़ह ज़िन्दगी	// //	**40** रू.
12. रसूलुल्लाह (सल्ल०) की बातें (अ़ह़ादीस की रौशनी में)	// //	**60** रू.
13. क़ुर्आन का पैग़ाम (क़ुर्आन मजीद का आसान हिन्दी अनुवाद)	// //	**300** रू.
14. तफ़्सीर फ़ारूक़ी (क़ुर्आन मजीद की हिन्दी तफ़्सीर पारा नं० **1** से **5** तक)		**400** रू.
15. तफ़्सीर फ़ारूक़ी (क़ुर्आन मजीद की हिन्दी तफ़्सीर पारा नं० **5** से **10** तक)		**400** रू.
16. तफ़्सीर फ़ारूक़ी (क़ुर्आन मजीद की हिन्दी तफ़्सीर पारा नं० **10** से **18** तक)		**400** रू.
17. मुन्तख़ब अह़ादीस	// //	**60** रू.
18. ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) की प्रमाणित जीवनी	// //	**140** रू.
19. नबियों की जीवनी (क़ुर्आन व ह़दीस की रौशनी में)	// //	**100** रू.
20. जिहाद, आतंकवाद और इस्लाम	// //	**140** रू.

इंग्लिश भाषा वालों के लिए तोह़फ़ा

नाम	भाषा	मूल्य
I. इस्लाम?	अंग्रेज़ी	**10** रू.
II. अज़ान, ए कालिंग फ़ार ह्यिूमेनिटी	// //	**40** रू.
III. मुह़म्मद दी लास्ट प्रोफ़ेट अन्डर दी शेड ऑफ़ वेद, उपनिषद ऐण्ड पुराण		**40** रू.
IV. मुह़म्मद (सल्ल०) एण्ड स्टेटस आफ़ वरशिप	// //	**30** रू.
V. बेसिक टीचिंग आफ़ इस्लाम	// //	**80** रू.
VI. दी स्वाड आफ़ इस्लाम	// //	**40** रू.

मुस्लिम नौजवानों के लिए तोह़फ़ा

नाम	भाषा	मूल्य
1. इस्लाम?	हिन्दी	**10** रू.
2. आओ नमाज़ की ओर	// //	**40** रू.
3. इस्लाम धर्म क्या है? (क़ुबूले ह़क़ के बाद इस्लामी कोर्स) कई भागो में	// //	**200** रू.
4. रसूलुल्लाह (सल्ल०) की सीरत (मुस्तनद क़ुतुबे सीरत की रोश्नी में)	// //	**40** रू.
5. रसूलुल्लाह (सल्ल०) की सीरत के अनमोल मोती (सवाल व जवाब की रोशनी में)		**30** रू.

नाम	भाषा	मूल्य
6. इस्लामी क्विज़ (सवाल व जवाब की रोशनी में)	हिन्दी	**50** रू.
7. क़ुर्आन का पैग़ाम (पारा अम्म अनुवाद और व्याख्या)	// //	**160** रू.
8. जिहाद, आतंकवाद और इस्लाम	// //	**120** रू.
9. रोज़ः का ह़ुक्म और उसके मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रोशनी में)	// //	**40** रू.
10. क़ुर्आन का पैग़ाम (क़ुर्आन मजीद का आसान हिन्दी अनुवाद)	// //	**300** रू.
11. तफ़्सीर फ़ारूक़ी (क़ुर्आन मजीद की हिन्दी तफ़्सीर पारा नं० **1** से **5** तक)		**400** रू.
12. तफ़्सीर फ़ारूक़ी (क़ुर्आन मजीद की हिन्दी तफ़्सीर पारा नं० **5** से **10** तक)		**400** रू.
13. तफ़्सीर फ़ारूक़ी (क़ुर्आन मजीद की हिन्दी तफ़्सीर पारा नं० **10** से **18** तक)		**400** रू.
14. आपके सवालों का आसान ह़ल (भाग एक)	// //	**60** रू.
15. इस्लाम की बुनियादी मालूमात (सवाल व जवाब की रोशनी में)	// //	**60** रू.
16. अ़ह़माले ह़स्ना (क़ुर्आन व अ़ह़ादीस की रौशनी में)	उर्दू	**100** रू.
17. आख़िरत का अ़क़ीदा (क़ुर्आन व ह़दीस की रौशनी में)	// //	**50** रू.
18. इख़्लास की फ़ज़ीलत (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	**50** रू.
19. अ़ालमे इन्सानियत के रहबर (क़ुर्आन व ह़दीस की रौशनी में)	// //	**100** रू.
20. नबियों की जीवनी (क़ुर्आन व ह़दीस की रौशनी में)	// //	**100** रू.
21. आख़िरी रसूल कहाँ, कब और कौन?	// //	**140** रू.
22. झाड़, फूँक, जादू, टोना और तअ़वीज़,गंडे (शरीअ़त की रोशनी में)	हिन्दी	**40** रू.
23. रोज़ः, तरावीह़, सद्क़ः और एतिकाफ़ के एह़काम व मसायल	// //	**40** रू.
24. मुसाफ़िर और सफ़र के मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	उर्दू	**40** रू.
25. इस्लाम में तिजारत का तरीक़ा (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	**120** रू.
26. इस्लाम में औ़रत का मक़ाम	// //	**50** रू.
27. दौलत की पैदाईश और अतियाते क़ुदरत	// //	**40** रू.
28. ईदैन व क़ुर्बानी के मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	**90** रू.
29. अल्लाह की तरफ़ से रिज़्क़ की तक़्सीम और कमज़ोर तब्क़े की किफ़ालत	// //	**50** रू.
30. क़ुर्आन के मुताबिक़ दौलत का इस्तेमाल	// //	**70** रू.
31. दाढ़ी की अहमियत (शरीअ़त की रोशनी में)	// //	**40** रू.
32. ह़ज और उ़मरा का मुकम्मल तरीक़ा (शरीअ़त की रोशनी में)	// //	**40** रू.
33. ज़कात का ह़ुक्म और उसके मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रोशनी में)	// //	**40** रू.

नाम	भाषा	मूल्य
34. ह़ज और उ़मरा का आसान तरीक़ा (क़ुर्आन व सुन्नत की रोशनी में)	हिन्दी	**30** रू.
35. ज़कात और मसारिफ़े ज़कात (क़ुर्आन व सुन्नत की रोशनी में)	// //	**40** रू.
36. मीरास की तक़्सीम	// //	**30** रू.
37. इस्लामी विरासत एक नज़र में	// //	**20** रू.
38. इस्लामी क़ानूने विरासत और मीरास की तक़्सीम	उर्दू	**40** रू.
39. कलिमा-ए-तय्यबः की ह़क़ीक़त और उस के तक़ाज़े	// //	**80** रू.
40. जन्नत के ह़ालात और जन्नती	हिन्दी	**60** रू.
41. जहन्नम के ह़ालात और जहन्नमी	उर्दू	**60** रू.
42. तलाक़ का इस्लामी तरीक़ा (क़ुर्आन व सुन्नत की रोशनी में)	// //	**40** रू.
43. काग़ज़ी नोट और बैअ़ की ह़क़ीक़त	// //	**40** रू.
44. हिन्दुस्तान में क़ुर्आन के तर्जुमे की शुरुआ़त और चन्द तफ़ासीर का तआ़रुफ़		**30** रू.
45. इस्लाम का ज़रई निज़ाम	// //	**40** रू.
46. ह़राम, ह़लाल और मुबाह चीज़ें	// //	**30** रू.
47. क़ुर्आनी आयात और इस्लामी मुआ़शरा	// //	**30** रू.
48. जिन्नात और शैतान का ज़िक्र (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	**80** रू.

दाअ़ी ह़ज़रात के लिए तोह़फ़ा

नाम	भाषा	मूल्य
1. आ़माल को बातिल करने वाली चीज़ें और नियत की अहमियत	उर्दू	**40** रू.
2. ख़ालिक़-ए-क़ायनात और हमारा उस से तअ़ल्लुक़	// //	**40** रू.
3. ग़ैर मुस्लिमों में तरीक-ए-दअ़वत उस्लूबे अंबिया की रोशनी में	// //	**80** रू.
4. हिन्दू धर्म, फ़िर्क़े तन्ज़ीमें और इदारों का तआ़रुफ़	// //	**90** रू.
5. आख़िरी रसूल कहाँ, कब और कौन?	// //	**140** रू.
6. ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) का ज़िक्र और मूर्तिपूजा की मुमानियत वेदों की दुनिया में।	// //	**40** रू.
7. ग़ैर मुस्लिमों से दोस्ती या दुश्मनी (एतिराज़ के तनाज़ुर में)	// //	**50** रू.
8. इस्लाम के ख़िलाफ़ इल्तिज़ामात और उस की दअ़वत का असर	// //	**50** रू.
9. क़ुर्आन में इन्सान का मक़ाम और उस का अअ़ला मक़्सद	// //	**40** रू.

नाम	भाषा	मूल्य
10. क़ुर्आन के मिसाली नमूने और लाज़वाल मोअ़जिज़ा	उर्दू	**40** रू.
11. ग़ैर मुस्लिमों से तअ़ल्लुक़ात और मज़हबी आज़ादी	// //	**40** रू.
12. ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) और जज़ीरे अ़रब	// //	**40** रू.
13. क़ुर्आन का पैग़ाम (पारा अम्म अनुवाद और व्याख्या)	// //	**160** रू.
14. अल्लाह के अधिकार और बन्दों के अधिकार (क़ुर्आन व ह़दीस की रौशनी में)	// //	**80** रू.
15. क़ुर्आन का पैग़ाम (क़ुर्आन मजीद का आसान हिन्दी अनुवाद)	// //	**300** रू.
16. तफ़्सीर फ़ारूक़ी (क़ुर्आन मजीद की हिन्दी तफ़्सीर पारा नं० **1** से **5** तक)	// //	**400** रू.
17. तफ़्सीर फ़ारूक़ी (क़ुर्आन मजीद की हिन्दी तफ़्सीर पारा नं० **5** से **10** तक)	// //	**400** रू.
18. तफ़्सीर फ़ारूक़ी (क़ुर्आन मजीद की हिन्दी तफ़्सीर पारा नं० **10** से **18** तक)		**400** रू.
19. उम्मते मुह़म्मदिया की इ़ज़्ज़त का मेअ़यार	// //	**40** रू.
20. इस्लाम में जिज़्या, ख़िराज और ज़िम्मियों के अख़्तियारात	// //	**40** रू.
21. तअ़द्दुदे इज़्दिवाज और इस्लाम (मज़ाहिब आ़लिम की रौशनी में)	// //	**60** रू.
22. इस्लाम की दअ़वत का असर इन्सानी दुनिया पर	// //	**50** रू.
23. दअ़वत की ज़िम्मेदारी (क़ुर्आन व ह़दीस की रौशनी में)	// //	**50** रू.
24. मुसलमानों के फ़िर्क़े और उनके अ़क़ायद	// //	**80** रू.
25. इस्लामी मआ़शियात का तकाबुली जायज़ा	// //	**40** रू.
26. बौद्ध धर्म और इस्लाम	// //	**40** रू.
27. ज़बरदस्ती इस्लाम क़ुबूल करने की मुमानियत	// //	**60** रू.
28. तफ़्सीर का बुनियादी मअ़ख़ज़	// //	**40** रू.
29. मदारिसे इस्लामिया के निसाब का तारीख़ी जायज़ा	// //	**40** रू.
30. इस्लाम में ग़ैर मुस्लिमों के ह़ुक़ूक़	// //	**50** रू.
31. जिहाद आतंकवाद और इस्लाम	// //	**120** रू.
32. इस्लाम धर्म तल्वार से फैला या सदाचार से	// //	**60** रू.